पाठ-सूची

क्र.सं.	पाठ का नाम	विधा	रचनाकार	पृष्ठ संख्या
1.	मानव बनो	कविता	शिवमंगल सिंह 'सुमन'	1
2.	नचिकेता	कहानी	कठोपनिषद् से	3
3.	पुष्प की अभिलाषा	कविता	माखन लाल चतुर्वेदी	10
4.	दानी पेड़	कहानी	शेल स्लिवरस्टाइन	12
5.	वीर कुँवर सिंह	जीवनी	पाठ्यपुस्तक विकास समिति	16
6.	गंगा स्तुति	कविता	विद्यापति	21
7.	साइकिल की सवारी	व्यंग्य-कथा	सुदर्शन	23
8.	बचपन के दिन	संस्मरण	ए.पी.जे. अब्दुल कलाम	31
9.	वर्षा बहार	कविता	मुकुटधर पाण्डेय	34
10.	कुंभा का आत्म बलिदान	कहानी	संकलित	36
11.	कबीर के दोहे	पद्य	कबीर	41
12.	जन्म-बाधा	कहानी	सुधा	43
13.	शक्ति और क्षमा	कविता	रामधारी सिंह 'दिनकर'	47
14.	हिमशुक	कहानी	शंकर	50
15.	ऐसे-ऐसे	एकांकी	विष्णु प्रभाकर	58
16.	बूढ़ी पृथ्वी का दुख	कविता	निर्मला पुतुल	66
17.	सोना	रेखाचित्र (कहानी)	महादेवी वर्मा	68
18.	हुएनत्सांग की भारत यात्रा	यात्रा-वृत्तान्त	बेलिन्दर एवं हरिन्दर धनौआ	76
19.	आर्यभट	जीवनी	पाठ्यपुस्तक विकास समिति	81
20.	यशस्विनी	कविता	बेबी रानी	85
21.	गुरु की सीख			89
22.	समय का महत्व			90
	शब्दकोश			91

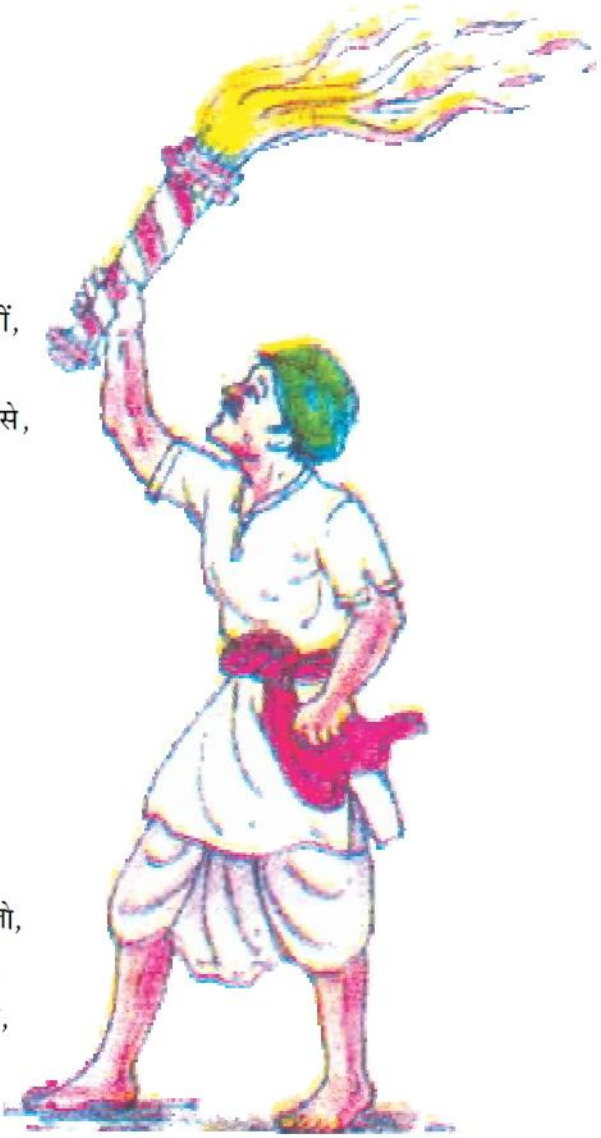
1 मानव बनो

है भूल करना प्यार भी,
है भूल यह मनुहार भी,
पर भूल है सबसे बड़ी,
करना किसी का आसरा,
मानव बनो, मानव जरा।

अब अश्रु दिखलाओ नहीं,
अब हाथ फैलाओ नहीं
हुंकार कर दो एक जिससे,
थरथरा जाए धरा,
मानव बनो, मानव जरा।

उफ, हाय कर देना कहीं,
शोभा तुम्हें देता नहीं,
इन आँसुओं से सींचकर कर दो,
विश्व का कण-कण हरा,
मानव बनो, मानव जरा।

अब हाथ मत अपने मलो,
जलना, अगर ऐसे जलो,
अपने हृदय की भस्म से,
कर दो धरा को उर्वरा,
मानव बनो, मानव जरा।



– शिव मंगल सिंह 'सुमन'

शब्दार्थ

मनुहार- मनाना, विनती **अश्रु**- आँसू **धरा**-पृथ्वी

प्रश्न-अभ्यास

पाठ से

1. 'मानव बनो' शीर्षक कविता के कवि कौन हैं?
2. मानव बनने के लिए हमें कौन-कौन से कार्य करने चाहिए?
3. कवि के अनुसार सबसे बड़ी भूल क्या है?
4. **अर्थ स्पष्ट कीजिए**

(क) अब अश्रु दिखलाओ नहीं,
अब हाथ फैलाओ नहीं,

(ख) अब हाथ मत अपने मलो,
जलना, अगर ऐसे जलो,
अपने हृदय की भस्म से,
कर दो धरा को उर्वरा।

पाठ से आगे

1. मानव बनने की बात जो कवि द्वारा बतायी गयी है, इसके अतिरिक्त आप मानव में और कौन-कौन सा गुण देखना चाहेंगे?
2. अगर कोई समस्या आपके सामने आती है, तो इस समस्या का समाधान आप कैसे करते हैं? उदाहरण सहित समझाइए।
3. "मानव होने का अर्थ है अपने जीवन पर खुद का अधिकार।" इस विचार की तर्कपूर्ण समीक्षा कीजिए।

व्याकरण

1. 'हाथ फैलाना' एक मुहावरा है, जिसका अर्थ होता है- कुछ माँगना। इस प्रकार शरीर के विभिन्न अंगों से जुड़े अनेक मुहावरे हैं। इसी तरह के पाँच मुहावरों को लिखकर उनका वाक्यों में प्रयोग कीजिए।
2. **इन शब्दों के विपरीतार्थक शब्द लिखिए**

(क) फैलाना (ख) प्यार
(ग) मानव (घ) भूल

2 नचिकेता

आज से सहस्रों वर्ष पूर्व महर्षि बाजश्रवा हुए।

महर्षि बाजश्रवा का अधिकांश समय जप-तप में बीता करता था। उनके पुत्र का नाम नचिकेता था।

नचिकेता पितृभक्त बालक था। उसमें दृढ़ता, सत्य और धर्म के प्रति अगाध निष्ठा थी। उसके मुखमण्डल से तेज टपकता था। वह सहिष्णु था। बालक नचिकेता के इन्हीं गुणों के कारण पिता उससे अगाध स्नेह रखते थे। इस तरह नचिकेता पिता के लिए प्राणों से प्यारा बन गया था।

एक बार बाजश्रवा की इच्छा सर्वमेघ यज्ञ करने की हुई। इस यज्ञ में अपना सब कुछ दान कर देने के बाद ही फल की प्राप्ति होती है। इस बात को महर्षि बाजश्रवा अच्छी तरह जानते थे। यही बात उन्होंने अपने पुत्र नचिकेता को भी बताई थी। नचिकेता साधु प्रवृति का बालक था। पिता की इच्छा जानकर उसे बेहद खुशी हुई।

यज्ञ के लिए शुभ तिथि निश्चित की गई। उस दिन सर्वमेघ यज्ञ का शुभारम्भ हुआ। उसमें भाग लेने के लिए दूर-दूर से ब्राह्मण पधारे। नचिकेता ने यज्ञ की एक-एक क्रिया को ध्यान से देखा। सभी क्रियाएँ यथासमय पूर्ण होती गईं। अन्त में सिद्धहस्त ब्राह्मणों ने नारियल की पूर्णाहुति देकर उसे सम्पन्न किया। यज्ञ की समाप्ति पर महर्षि बाजश्रवा को अपना सब कुछ दान में दे देना था। ब्राह्मणों को अच्छा दान मिलने की पूर्ण आशा थी।



यज्ञ की पूर्णाहुति के बाद महर्षि बाजश्रवा उठे। अग्नि देवता को नमस्कार करके वे अपनी गोशाला की ओर बढ़े। उनकी गोशाला में अनेक बढ़िया गायें थीं। वे सभी गायों को दान में देने का निश्चय कर चुके थे। परन्तु गोशाला तक पहुँचते-पहुँचते उनका मन लोभ से भर गया। वे

गोशाला की कमजोर, बूढ़ी और दूध न देनेवाली गायों की छँटनी करके ब्राह्मणों को दान-स्वरूप देने लगे।

ब्राह्मणों को ऐसी दक्षिणा की स्वप्न में भी आशा न थी। महर्षि बाजश्रवा की लोभ प्रवृत्ति देखकर वे दुखी हुए, पर कुछ कह नहीं सके। नचिकेता भी यह सब कुछ देख रहा था। उसे पिता के निश्चय बदल जाने से विशेष दु:ख था। उसने पिता के पास जाकर पूछा, ''पिताजी ! आपने तो इस महायज्ञ में अपना सर्वस्व दान में देने का निश्चय किया था, लेकिन आप अपनी प्रिय चीजें न देकर ये बूढ़ी व कमजोर गायों को ही दे रहे हैं।''

महर्षि बाजश्रवा पुत्र की ओर देखकर तनिक मुस्कुराये पर बोले कुछ नहीं। वे वैसी ही गायों का दान करते रहे।

अब नचिकेता से नहीं रहा गया। उसकी सहनशक्ति समाप्त हो रही थी। उसने निडरतापूर्वक पिता से कहा, ''पिताजी, आपकी प्रिय वस्तु तो मैं हूँ। मुझे आप किसे दान में देंगे?''

इतना सुनते ही महर्षि बाजश्रवा के अधरों की मुस्कान लुप्त हो गई। उसका स्थान क्रोध ने ले लिया। वे उसी अवस्था में बोले, ''नचिकेता मैं तुम्हें यमराज को दान में दूँगा।''

''मैं इसे सहर्ष स्वीकार करता हूँ, पिताजी।'' नचिकेता ने खुश होकर उत्तर दिया, ''मैं आपकी आज्ञा से यमराज के पास चला जाऊँगा पर आप यज्ञशाला की सारी गायें ब्राह्मणों को दान में अवश्य दे दें। इसके बिना आपका सर्वमेघ यज्ञ निष्फल रहेगा।''

महर्षि बाजश्रवा के मुख से क्रोध में निकला, ''छोटा मुँह और बड़ी बात करता है। यज्ञ की मुझे चिन्ता होनी चाहिए, तुझे नहीं। तुम यमराज के पास जाओ बाकी मैं स्वयं देख लूँगा।''

महर्षि बाजश्रवा क्रोधावेश में यह भी भूल गए कि नचिकेता उनका इकलौता पुत्र है। पिता की ओर से मिला हुआ आदेश उस पितृभक्त बालक के लिए ब्रह्म-वाक्य था।

उधर दृढ़निश्चयी नचिकेता ने एक क्षण भी खोना ठीक नहीं समझा। उसने पिताजी के चरणों को स्पर्श कर यमराज के पास जाने की अनुमति माँगी।

अब महर्षि बाजश्रवा को होश आया कि उन्होंने क्रोधावेश में नचिकेता को यह क्या कह दिया? वे उसके दृढ़ निश्चय को अच्छी तरह जानते थे। वह इस बात से भी परिचित थे कि नचिकेता यमराज के पास जाए बिना मानेगा नहीं। फिर भी पिता का स्नेह उमड़ आया। उन्होंने पूछा, ''वत्स! यमराज से परिचित हो?''

''हाँ, पिताजी! वे मृत्यु के देवता हैं।'' नचिकेता ने सहज स्वर में कहा।

''यमराज के विषय में इतना जानकर भी तुम उनके पास जा रहे हो?'' महर्षि बाजश्रवा ने समझाने का प्रयास करते हुए कहा, ''मृत्यु के मुख में पहुँचकर कोई नहीं लौटा, वत्स!''

''जानता हूँ, पिताजी।'' नचिकेता ने कहा, ''पिता की आज्ञा ही मेरे लिए सर्वोपरि है। उसी ने मुझे निडर बना दिया है। आपके आशीर्वाद से मैं सब जगह आसानी के साथ पहुँच सकता हूँ। फिर मृत्यु तो ऐसा सच है जिसे झुठलाया नहीं जा सकता। एक-न-एक दिन सभी को उसके पास पहुँचना है।''

नचिकेता का तर्क न्यायसंगत था। उसके ज्ञान पर महर्षि बाजश्रवा को हर्ष भी हुआ और बिछोह पर शोक भी। वे पश्चाताप करते हुए बोले, ''वत्स, मैंने तो क्रोधावेश में ऐसा कह दिया था। मेरा मतलब यह नहीं था कि तुम यमपुरी जाओ। अब मैं किसी कीमत पर भी तुम्हें यमपुरी जाने की आज्ञा नहीं दे सकता।''

नचिकेता ने अत्यन्त विनम्र होकर कहा, ''आप तो यमपुरी जाने की आज्ञा पहले ही दे चुके हैं। अब कुछ भी कहना मेरे लिए निरर्थक है। मैंने आपकी आज्ञा पालन करने का संकल्प ले लिया है। अब तो उसे पूरा करने का अवसर प्रदान कीजिए और मुझे यमराज के पास जाने दीजिए। इसी में मेरा कल्याण है।''

नचिकेता की वाणी ने महर्षि बाजश्रवा को निरुत्तर कर दिया। उनका सौम्य चेहरा कुम्हला गया। उनके मस्तक पर विषाद की रेखाएँ स्पष्ट दिखाई पड़ने लगीं। नचिकेता को कहे वाक्य उन्हें शूल की तरह चुभने लगे।

पिता की ऐसी अवस्था देखकर नचिकेता ने कहा, ''पिताजी! आपके सर्वमेघ यज्ञ की सफलता भी मेरी यमलोक की यात्रा में ही है। उसे पूरा करना मेरा धर्म है। धर्म पर चलने का आदेश आप अवश्य देंगे।''

नचिकेता की ज्ञानभरी बातों के आगे महर्षि निरुत्तर हो गए। उन्होंने अश्रुपूर्ण नेत्रों से अपने इकलौते पुत्र नचिकेता को विदाई दी।

नचिकेता पिता को नमस्कार करके यमपुरी की ओर प्रस्थान कर गया। वह दिन-रात चलता रहा। उसे यमपुरी पहुँचने में कई दिन लग गए। यमपुरी के मुख्य द्वार पर उसे रोक लिया गया। उस समय यमराज कहीं बाहर गए हुए थे। उसे मुख्य द्वार पर ही उनकी प्रतीक्षा करनी पड़ी। ये प्रतीक्षा की घड़ी में तीन दिन और तीन रातें बीत गई। वह भूखा-प्यासा वहीं पड़ा रहा।

अन्त में यमराज लौटकर आए। अपने मुख्य द्वार पर ऋषि-कुमार को देखकर चिन्तित हो उठे। फिर उसका परिचय जानने के उद्देश्य से पूछा, ''तुम कौन हो?''

नचिकेता ने नमस्कार कर विनम्र स्वर में कहा, ''देव! मैं महर्षि बाजश्रवा का एकमात्र पुत्र नचिकेता हूँ।''

यमराज ने प्रश्न किया, ''ऋषिकुमार! तुम्हारे यहाँ आने का कारण?''

नचिकेता फिर विनम्र स्वर में बोला, ''देव! मेरे पिताश्री ने सर्वमेघ यज्ञ किया है। उसी की दक्षिणास्वरूप मुझे आपकी सेवा में भेजा है।''

इतना सुनकर यमराज का आश्चर्यचकित होना स्वाभाविक था। वे बोले, ''तुम्हें यमपुरी आते हुए भय नहीं लगा?''

नचिकेता ने सरलता के साथ उत्तर दिया, ''देव! भय कैसा? मेरी दृष्टि में मृत्यु तो सबसे बड़ा वरदान है। जब इंसान की देह उसका साथ देना छोड़ देती है, तब मृत्यु ही उसे कष्टों से मुक्ति दिलाती है। इसलिए इस मुक्तिदात्री को मैं भय का कारण नहीं मानता। मैंने तो सदैव इसे वरदान रूप में ही स्वीकारा है।''

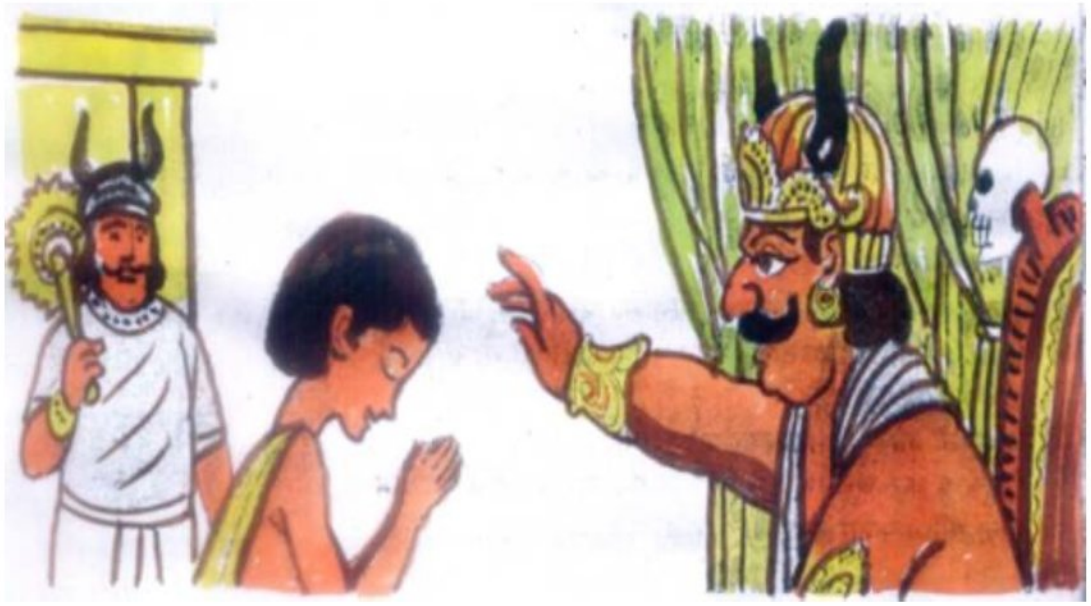
बालक नचिकेता की बातें ज्ञान और रहस्य से भरी हुई थीं। इतनी अल्पावस्था में इतना गुणवान होना किसी विरले का ही काम है। इसलिए यमराज को और भी ज्यादा आश्चर्य हुआ। वह बालक की ज्ञान-भरी बातों से प्रभावित होते जा रहे थे। कुछ क्षण रुककर उन्होंने पूछा, ''नचिकेता, तुम तीन दिन से भूखे-प्यासे मेरे द्वार पर पड़े हुए हो?''

इस बार नचिकेता मौन रहा। उसने यमराज के इस प्रश्न का उत्तर नहीं दिया।

यमराज ने उसके आतिथ्य का पूरा प्रबन्ध कर दिया और खा-पीकर विश्राम करने के लिए कहा।

बालक नचिकेता ने यमराज का आतिथ्य स्वीकार कर लिया। वह खा-पीकर विश्राम करने लगा। अगले दिन जब वह सोकर उठा तो उसे यमराज ने बुलवाया। उसके आने पर यमराज ने कहा, ''ऋषिकुमार! हम तुम्हारे ज्ञान, पितृभक्ति और कर्मनिष्ठा से बहुत प्रसन्न हैं। इस उपलक्ष्य में तुम हमसे तीन वर माँग सकते हो।''

''देव! मैं तो दक्षिणास्वरूप आपके पास भेजा गया हूँ।'' नचिकेता ने विनम्र स्वर में कहा, ''फिर आपसे वर कैसे माँग सकता हूँ?''



बालक नचिकेता की न्यायसंगत बात सुनकर यमराज बोले, ''कोई बात नहीं बालक! तुम नि:संकोच होकर वर माँगो।''

इसपर नचिकेता ने कहा, ''देव! पहला वर तो यह दीजिए कि पिताश्री का मुझ पर से क्रोध शान्त हो और उन्हें सर्वमेघ यज्ञ का सुफल प्राप्त हो।''

''तथास्तु!'' यमराज के मुख से निकला, ''और दूसरा वर?''

नचिकेता ने फिर कहा, ''देव! जिस विद्या से भय उत्पन्न न हो, वह मुझे प्राप्त हो।''

''तथास्तु!'' यमराज ने कहा, '' और तीसरा वर?''

नचिकेता बोला, ''देव! आप सर्वज्ञाता हैं। आप मुझे आत्मा का रहस्य समझाइए।''

इतना सुनकर यमराज सोच में पड़ गए, बोले, ''नचिकेता! अभी तुम बहुत छोटे हो। आत्मा का रहस्य जानना तो ज्ञानी-ध्यानी मुनियों के बस की भी बात नहीं है। तुम और कोई तीसरा वर माँग सकते हो।''

''देव! मुझ पर तो आत्मा का ही रहस्य प्रकट करने की कृपा कीजिए।'' नचिकेता ने फिर कहा, ''इसके अलावा मुझे और कुछ जानना शेष नहीं है।''

विवश होकर यमराज को नचिकेता को आत्मा का रहस्य बतलाना पड़ा।

नचिकेता आत्मा के रहस्य को जानकर वापस पृथ्वी पर लौट आया। पिता बाजश्रवा पुत्र को पाकर बहुत प्रसन्न हुए।

बालक नचिकेता का नाम '' आत्मज्ञानी' के रूप में अमर हुआ।

- कठोपनिषद्

शब्दार्थ

सहस्रों-हजारों
दृढ़ता-मजबूती
अगाध-अथाह
प्रतीक्षा-इंतजार
निष्फल-व्यर्थ
निष्ठा-श्रद्धा एवं भक्ति
सहिष्णु-सहनशील
पितृभक्त-पिता का भक्त
स्वप्न-सपना
प्रस्थान-कूच
सम्पन्न- पूर्ण होना
आहुति-हवन में अग्नि को समर्पित की जानेवाली वस्तु
सम्बल-सहारा
प्रवृत्ति-आदत
अनायास-अचानक
अनुमति-आज्ञा
न्यायसंगत- न्यायपूर्ण
संकल्प-शपथ, प्रतिज्ञा
मुक्तिदात्री-मुक्ति देनेवाली
निरुत्तर-बिना उत्तर के
शोक-दु:ख
प्रयास-कोशिश
सौम्य-सुन्दर
कर्मनिष्ठा-कर्म करने में विश्वास
परिचित-जाना-पहचाना
लोभवश-लालच के कारण।
दृढ़ निश्चयी-पक्का इरादा करनेवाला

प्रश्न-अभ्यास

पाठ से

1. नचिकेता कौन था?
2. नचिकेता क्यों दु:खी हुआ? उसने अपने पिताजी से क्या कहा?
3. नचिकेता यमपुरी किस लिए गया?
4. नचिकेता को यमपुरी के मुख्य द्वार पर क्यों रुकना पड़ा?
5. नचिकेता ने यमराज से क्या-क्या वर माँगा?
6. नचिकेता यमराज से किस तरह का रहस्य जानना चाहता था? सही विकल्प के सामने (✔) लगाइए

(क) आत्मा का (ख) मृत्यु का

(ग) जीवन का (घ) स्वर्ग का

7. **किसने, किससे कहा ?**

(क) ''मृत्यु के मुख में पहुँचकर कोई नहीं लौटा, वत्स !''

.....

(ख) ''छोटा मुँह और बड़ी बात करता है। यज्ञ की मुझे चिन्ता होनी चाहिए, तुझे नहीं।''

.....

(ग) ''आप तो यमपुरी जाने की आज्ञा पहले ही दे चुके हैं। अब कुछ भी कहना मेरे लिए निरर्थक है।''

.....

पाठ से आगे

1. महर्षि बाजश्रवा अगर ब्राह्मणों को गाय दान में दे देते तो क्या होता?
2. यज्ञ से क्या तात्पर्य है?
3. अगर आपको तीन वर माँगने के लिए कहा जाय तो आप क्या माँगेंगे?
4. नचिकेता 'साधु-प्रवृति' का था। 'साधु प्रवृति से आप क्या समझते हैं?

व्याकरण

1. **इनके पर्यायवाची शब्द बताइए-**

(क) पुत्र - वत्स, बेटा, तनय

(ख पिता - .....

(ग) यमराज -.....

(घ) गाय – .....

(ङ) साधु – .....

2. इनके विपरीतार्थक शब्द बताइए –

(क) सत्य – असत्य

(ख) धर्म – .....

(ग) सहिष्णु– .....

(घ) इच्छा – .....

(ङ) सम्पन्न – .....

3. देखिए, समझिए और लिखिए –

पितृभक्त – पितृ + भक्त

सहनशक्ति –

मुखमंडल –

गौशाला –

महायज्ञ –

ब्रह्मवाक्य –

कर्मनिष्ठ –

आत्मज्ञानी

4. अनेक शब्दों के लिए एक शब्द लिखिए –

(क) जो पिता की भक्ति करता हो .....

(ख) जो सब कुछ जानता हो .....

(ग) जिसने आत्मा का रहस्य जान लिया हो .....

(घ) जिसने दृढ़ निश्चय कर लिया हो .....

(ङ) जो सहनशील हो .....

गतिविधि

1. उपनिषदों के बारे में अपने शिक्षक से जानकारी प्राप्त कीजिए।

3 पुष्प की अभिलाषा

चाह नहीं मैं सुरबाला के
गहनों में गूँथा जाऊँ ।
चाह नहीं प्रेमी-माला में
बिंध प्यारी को ललचाऊँ ।।



चाह नहीं सम्राटों के शव पर
हे हरि, डाला जाऊँ ।
चाह नहीं देवों के सिर पर
चढ़ूँ, भाग्य पर इठलाऊँ ।।



मुझे तोड़ लेना वनमाली,
उस पथ पर देना तुम फेंक ।
मातृभूमि पर शीश चढ़ाने
जिस पथ जाएँ वीर अनेक ।।

-माखनलाल चतुर्वेदी

शब्दार्थ

चाह= इच्छा
सुरबाला= देवकन्या
बिंध=छेदा जाना, छिदकर
सम्राट=जिसके अधीन कई राजा हों।
शव=मृत शरीर
इठलाऊँ= नाज-नखरे करूँ ।

प्रश्न-अभ्यास

पाठ से

1. निम्नलिखित पंक्तियों के भावार्थ स्पष्ट कीजिए-

चाह नहीं सम्राटों के शव पर
हे हरि, डाला जाऊँ।
चाह नहीं देवों के सिर पर
चढ़ूँ, भाग्य पर इठलाऊँ ॥

2. प्रस्तुत पाठ में 'मैं' शब्द का प्रयोग किसके लिए किया गया है?
3. "हे वनमाली, मुझे तोड़कर उस रास्ते पर फेंक देना, जिस रास्ते से होकर अपनी मातृभूमि पर शीश चढ़ाने वाले वीर जाते हैं।" उपर्युक्त भाव पाठ की जिन पंक्तियों द्वारा अभिव्यक्ति होती है,उन पंक्तियों को लिखिए।
4. **"भाग्य पर इठलाऊँ" का कौन-सा अर्थ ठीक लगता है?**
   (क) भाग्य पर नाराज होना
   (ख) भाग्य पर गर्व करना
   (ग) भाग्य पर विश्वास न करना
5. 'चाह नहीं' पद कवि की किस तरह की भावना को व्यक्त कर रहा है?

पाठ से आगे

1. बड़े-बड़े सम्मान पाने की बजाय पुष्प उस पथ पर फेंका जाना क्यों पसंद करता है, जिस पर मातृभूमि के लिए अपना सर्वस्व अर्पण करने वाले वीर जाते हैं? अपना विचार व्यक्त कीजिए।
2. पुष्प की भांति आपकी भी कोई अभिलाषा होगी। उन्हें दस वाक्यों में लिखिए।

व्याकरण

1. 'भाग्य' शब्द के पहले **सौ** उपसर्ग लगाकर 'सौभाग्य' शब्द बनाते हैं। इसी प्रकार **नि, दुः, अन्** उपसर्ग लगाकर प्रत्येक से दो-दो शब्द बनाइए।

कुछ करने को

1. कल्पना के आधार पर इस कविता से संबंधित एक चित्र बनाइए।
2. मातृभूमि या देश-प्रेम से संबंधित अनेक कवियों ने कविताएँ लिखीं हैं। उनकी कविताओं को खोजकर पढ़िए और अपनी कक्षा में सुनाइए।

4 दानी पेड़



एक पेड़ था। वह एक छोटे लड़के को बहुत प्यार करता था। लड़का रोज पेड़ के पास आता। वह फूलों की माला बनाता, उसके तने पर चढ़ता, उसकी शाखाओं से झूलता और उसके फल खाता। फिर वह पेड़ के साथ लुका-छिपी खेलता। जब वह थक जाता तो पेड़ की छाँव में सो जाता। लड़का पेड़ से बहुत प्यार करता था। पेड़ बहुत खुश था।

समय बीतता गया। लड़का जवान हो गया। वह अब पेड़ पर खेलने नहीं आता। पेड़ अकेले दुखी होता। जब लड़का एक दिन आया तो पेड़ बहुत खुश हुआ। लड़के ने पेड़ से कहा- "मुझे पैसों की जरूरत है। मैं बहुत सी चीजें खरीदना चाहता हूँ। क्या तुम मुझे कुछ पैसे दे सकते हो?"



पेड़ ने कहा- " पैसे तो मेरे पास हैं नहीं। तुम मेरे फल तोड़ लो और उन्हें बाज़ार में बेच दो। इससे तुम्हें पैसे मिल जाएँगे।"

लड़का सब फल तोड़ कर ले गया। पेड़ अभी भी खुश था।

कई साल के बाद वह युवक फिर पेड़ के पास आया। "मेरी शादी होने वाली है। मुझे एक घर चाहिए। क्या तुम मुझे एक घर दे सकते हो?" उसने पेड़ से कहा।

पेड़ ने कहा-"घर तो मेरे पास है नहीं। लेकिन तुम मेरी शाखायें काट कर उनसे घर बना लो।" युवक पेड़ की सभी शाखाओं को काटकर ले गया। पेड़ का बस तना बचा रह गया। पेड़ अभी भी खुश था।

बहुत साल बीत गए। लड़का अधेड़ उम्र का आदमी बन गया था।

एक दिन पेड़ के पास आया और बोला– "मुझे मछली पकड़ने के लिये एक नाव चाहिए। क्या तुम मुझे एक नाव दे सकते हो?

पेड़ ने कहा– " नाव तो मेरे पास है नहीं। मेरा तना बचा है। उसे काट कर नाव बना लो।"

आदमी ने पेड़ का तना काटा और उसकी नाव बनाई। पेड़ अब भी खुश था।

पेड़ का अब केवल ठूंठ बचा था।

इस तरह कई साल बीत गए। एक दिन एक बूढ़ा आदमी पेड़ के पास आया। पेड़ ने उसे फौरन पहचान लिया। यह वही छोटा लड़का था। पेड़ उसे देखकर बहुत खुश हुआ। उससे खुशी के मारे बोलते नहीं बना। पेड़ ने कहा– "बेटा, मैं तुम्हें कुछ देना चाहता था। परंतु अब मेरे पास बचा ही क्या है? मेरे फल नहीं बचे जिन्हें तुम खा सको। मेरी शाखायें नहीं रहीं जिनसे कि तुम लटक सको। मेरा तना भी नहीं बचा जिस पर तुम चढ़ सको। बताओ, मैं तुम्हें क्या दूँ?"



बूढ़े ने कहा– " तुम देख रहे हो मेरी हालत। मेरे सब दाँत गिर चुके हैं। मैं अब फल नहीं चबा सकता। अब मेरी उम्र शाखाओं पर झूलने की नहीं रही। तने पर चढ़ने का दम अब मुझमें नहीं रहा। मैं बहुत थक गया हूँ। मुझे बस आराम से बैठने और सुस्ताने के लिए एक जगह चाहिए।"

"तो फिर आओ और मेरे ठूंठ पर शांति से बैठो।" पेड़ ने कहा।

बूढ़ा ठूंठ पर बैठ कर सुस्ताने लगा। पेड़ अब भी बहुत खुश था।

-शेल स्लिवरस्टाइन

WEBCOPY © BSTBPC NOT TO BE PUBLISHED

शब्दार्थ

ठूंठ– पत्ती एवं टहनी विहीन पेड़ **शाखा**– डाली, टहनी

प्रश्न-अभ्यास

पाठ से

1. पेड़ से सब कुछ लेने के बाद भी आदमी खुश क्यों नहीं था?
2. अपना सब कुछ दे देने पर भी पेड़ खुश क्यों था?
3. पेड़ ने आदमी के बचपन से बुढ़ापे तक की किन-किन जरूरतों को पूरा किया?
4. पेड़ को दानी क्यों कहा गया है?
5. बड़ा होने पर लड़का दु:खी क्यों रहने लगा?
6. **खाली जगहों को भरिए-**

(क) पेड़ छोटे लड़के से ..... करता था।

(ख) वह पेड़ के साथ ..... खेलता।

(ग) मुझे पैसों की ..... है।

(घ) मैं ..... खरीदना चाहता हूँ।

पाठ से आगे

1. दुनिया में पेड़ों की संख्या को लगातार कम किया जा रहा है। अगर पेड़ों की संख्या इसी प्रकार कम होती जाए तो बीस वर्ष के बाद का समाज कैसा होगा?
2. पेड़ों को सुरक्षित रखने के लिए क्या-क्या किया जा सकता है?
3. दिये गये शब्दों का प्रयोग कर एक छोटा-सा कहानी लिखिए।

मेढक, तालाब, नदी, बच्चे, मछली, साँप

4. 'मेरा प्रिय वृक्ष' विषय पर 50 शब्द लिखिए।

व्याकरण

1. **नीचे दिये गये शब्दों का वाक्यों में प्रयोग कर उनके लिंग बताइये -**

उदाहरण शाखा - (स्त्रीलिंग) पेड़ की शाखा टूट कर गिर गई।

आम -

खिचड़ी -

रंग -

बन्धु -

बाज़ार -

WEBCOPY © RSTBPC NOT TO BE PUBLISHED

2. निम्नलिखित वाक्य वर्तमान काल में है । इन्हें क्रमशः भूतकाल और भविष्यत्काल में लिखिए।

(क) मुझे पैसों की जरूरत है। (वर्तमानकाल)

..... (भूतकाल)

..... (भविष्यत्काल)

(ख) मैं तुम्हें कुछ देना चाहता हूँ । (वर्तमानकाल)

..... (भूतकाल)

..... (भविष्यत्काल)

(ग) क्या तुम मुझे नाव दे सकते हो? (वर्तमानकाल)

..... (भूतकाल)

..... (भविष्यत्काल)

3. कोष्ठक में दिए गए शब्दों में से सही शब्द चुनकर वाक्य पूरा कीजिए-

(क) युवक सभी ..... को काटकर ले गया । (शाखा, शाखाओं)

(ख) आदमी ने तना से नाव ..... । (बनाई, बनाया)

(ग) कई साल बीत ..... । (गए, गया)

(घ) वह ..... की माला बनाता था । (फूल, फूलों)

(ङ) मुझे ..... की जरूरत है । (पैसों, पैसा)

© BSTBPC WEBCOPY, NOT TO BE PUBLISHED

गतिविधि

1. आप अपने आस-पास के पेड़ों की सूची बनाइये तथा बड़े समूह में साथियों से चर्चा कीजिए कि ये पेड़ हमारे दैनिक जीवन में किस प्रकार उपयोगी हैं?
2. किन्हीं चार फलदार वृक्षों के चित्र बनाइए।
3. पेड़ हमारे लिए धन के स्रोत हैं, कैसे? चर्चा कीजिए।

5 वीर कुँवर सिंह

" बाबू कुँवर सिंह तेगवा बहादुर
बंगला पर उड़ेला अबीर....."

फाल्गुन माह के प्रारंभ होते ही इस तरह के गीत अक्सर बिहार के विभिन्न क्षेत्रों में सुनाई पड़ने लगते हैं। यह गीत बाबू कुँवर सिंह की शौर्य गाथा का प्रतीक है। उनके जीवन से संबंधित आज भी कुछ ऐसी बातें प्रचलित हैं, जिन पर सहसा किसी को विश्वास नहीं होता। शायद हम भी विश्वास नहीं कर पाएँ।

एक समय की बात है। अंग्रेजी फौज बाबू कुँवर सिंह का पीछा करते हुए गंगा नदी के तट पर पहुँच गयी। बाबू कुँवर सिंह नाव से गंगा नदी को पार कर रहे थे। अचानक अंग्रेजों की गोली उनके दाहिने हाथ में लगी। बिना एक क्षण की देरी किए बाबू कुँवर सिंह ने अपनी ही तलवार से उस हाथ को काटकर गंगा मैया को भेंट चढ़ा दी। है न आश्चर्यजनक एवं अविश्वसनीय बात! प्रसिद्ध नाटककार एवं कवि स्व. रामेश्वर सिंह 'कश्यप' ने इसी घटना को कविता के माध्यम से इस प्रकार व्यक्त किया।



© PRATIBHA NOT TO BE PUBLISHED

"मातु गंग
तोहरा तरंग पर
हमार बाँह अरपित बा।"

दूसरी घटना जो उनके जीवन से ही संबंधित है। कहा जाता है कि जगदीशपुर से आरा के बीच बाबू कुँवर सिंह ने एक सुरंग का निर्माण करवाया था। वे उसी सुरंग से घोड़े पर सवार होकर जगदीशपुर से आरा तथा आरा से जगदीशपुर आते-जाते थे। इस सुरंग का प्रयोग वे प्राय: युद्ध के समय किया करते थे। आज भी इस सुरंग के अवशेष आरा के महाराजा कॉलेज में देखे जा सकते हैं। जो आज भी एक पहेली बनी हुई है।

वीर कुँवर सिंह का जन्म भोजपुर (आरा) जिला के जगदीशपुर गाँव में सन् 1782 ई. में हुआ था। इनके पिता का नाम साहबजादा सिंह तथा माता का नाम पंचरतन कुँवर था। उनके पिता जगदीशपुर रियासत के जमींदार थे। कुँवर सिंह की शिक्षा की व्यवस्था उनके पिता ने घर पर ही की थी। जहाँ उन्होंने संस्कृत के अलावा फारसी भी सीखी, परंतु बाबू कुँवर सिंह का मन घुड़सवारी, तलवारबाजी और कुश्ती लड़ने में लगता था।

बाबू कुँवर सिंह ने अपने पिता की मृत्यु के पश्चात् 1827 ई. में अपनी रियासत की जिम्मेदारी संभाली। उन दिनों ब्रिटिश हुकूमत का अत्याचार चरम पर था। इस अत्याचार का विरोध तथा इस व्यवस्था को बदलने का संकल्प बाबू कुँवर सिंह ने मन-ही-मन ले लिया और उस दिन की प्रतीक्षा करने लगे, जब उन्हें अंग्रेजों से लोहा लेने का सही वक्त मिलेगा।

1857 की क्रांति का शंखनाद हो चुका था। बाबू कुँवर सिंह इसी अवसर की तलाश में थे। उन्होंने अंग्रेजी हुकूमत के विरोध का बिगुल फूँक दिया। 25 जुलाई, 1857 को दानापुर छावनी की सैनिक टुकड़ी ने विद्रोह कर दिया। बाबू कुँवर सिंह का सम्पर्क इनसे पहले से ही था। सैनिक सोन नहर पार कर आरा की ओर चल पड़ी। आरा पहुँचकर सैनिकों ने बाबू कुँवर सिंह का जयघोष करते हुए जेल की सलाखें तोड़ डाली और कैदियों को आजाद करा लिया। 27 जुलाई, 1857 को बाबू कुँवर सिंह ने आरा पर विजय प्राप्त की तथा सिपाहियों ने उन्हें फौजी सलामी दी। इस समय तक आरा 1857 की क्रांति के विद्रोह का केन्द्र स्थल तथा बाबू कुँवर सिंह इस क्रांति के नेता के रूप में उभर चुके थे।

आरा की इस लड़ाई की ज्वाला बिहार में सर्वत्र फैल चुकी थी। अंग्रेजों ने अपना दमन-चक्र चलाया। बाबू कुँवर सिंह एवं अंग्रेजी फौज के बीच भीषण युद्ध हुआ। अंतत: 13 अगस्त, 1857 को अंग्रेजी फौज ने बाबू कुँवर सिंह की सेना को पराजित कर जगदीशपुर पर अधिकार कर लिया। फिर भी, बाबू कुँवर सिंह का मनोबल नहीं टूटा। उन्होंने अंग्रेजों से इसका बदला लेने की ठानी। इसके लिए उन्होंने योजना बनानी प्रारंभ कर दी। उन्होंने रीवा, काल्पी, कानपुर, लखनऊ आदि स्थानों की यात्रा की तथा वहाँ के राजाओं एवं

जमींदारों से मुलाकात की। उनकी कीर्ति पूरे उत्तर भारत में फैल गयी। कुँवर सिंह की इस विजय यात्रा से अंग्रेजों के होश उड़ गए। कई स्थानों के सैनिक एवं राजा, कुँवर सिंह की अधीनता में लड़े। आजादी की यह यात्रा आगे बढ़ती रही, लोग शामिल होते गए और उनकी अगुवाई में लड़ते रहे। इस प्रकार ग्वालियर तथा जबलपुर के सैनिकों के सहयोग से सफल सैन्य रणनीति का प्रदर्शन करते हुए वे लखनऊ पहुँचे। इसके बाद उन्होंने आजमगढ़ की ओर कूच लिया। 22 मार्च 1858 को भीषण युद्ध के पश्चात बाबू कुँवर सिंह ने आजमगढ़ पर कब्जा कर लिया। बाबू कुँवर सिंह ने एक बार फिर आजमगढ़ में अंग्रेजों को हराया। इसी प्रकार अंग्रेजी सेना को परास्त करते हुए 23 अप्रैल, 1858 को उन्होंने जगदीशपुर में स्वाधीनता की विजय पताका फहरायी। इसी दिन विजय उत्सव मनाते हुए यूनियन जैक (अंग्रेजों का झंडा) को उतारकर अपना झंडा फहराया गया।

इस समय तक बाबू कुँवर सिंह की उम्र 80 वर्ष हो चुकी थी। एक कवि ने उनकी उम्र एवं उनके रण कौशल को देखते हुए लिखा है–

अस्सी वर्षों की हड्डी में, जागा जोश पुराना था,
सब कहते हैं, कुँवर सिंह भी बड़ा वीर मर्दाना था।

स्वाधीनता सेनानी बाबू कुँवर सिंह युद्ध कला में पूरी तरह कुशल थे। छापामार युद्ध करने में उन्हें महारत हासिल थी। कुँवर सिंह के रण कौशल को समझने में अंग्रेजी सेना नायक पूर्णतः असमर्थ थे। दुश्मनों को उनके सामने से या तो भागना पड़ता था या कटकर मरना पड़ता था। भारत माता का ऐसा महान सपूत 26 अप्रैल, 1858 को इस संसार से हमेशा–हमेशा के लिए विदा हो गया। प्रसिद्ध कवि मनोरंजन प्रसाद सिंह ने सत्य ही लिखा है–

चला गया यों कुँवर अमरपुर, साहस से सब अरिदल जीत,
उसका चित्र देखकर अब भी, दुश्मन होते हैं भयभीत।
वीरप्रसविनी भूमि धन्य वह, धन्य वीर वह अनन्य अतीत,
गाते थे और गावेंगे हम, हरदम उसकी जय की गीत।
वह स्वतंत्रता का सैनिक था।
आजादी का दीवाना था।

–पाठ्यपुस्तक विकास समिति

© RSTBSPC WEBCOPY, NOT TO BE PUBLISHED

शब्दार्थ

शौर्य – वीरता, पराक्रम **अवशेष** – बचा हुआ भाग **रियासत** – राज्य
सुरंग – धरती के अंदर आने-जाने के लिए बना रास्ता **हुकूमत** – शासन।

प्रश्न-अभ्यास

पाठ से

1. वीर कुँवर सिंह से संबंधित किसी एक प्रसंग का उल्लेख कीजिए जो आपको अविश्वसनीय लगता है।

2. **वीर कुँवर सिंह के जीवन से जुड़े कुछ घटनाक्रम तिथियों के साथ स्तंभ 'क' एवं स्तंभ 'ख' में दिए गए हैं। सही-सही उनका मिलान कीजिए।**

(क)	(ख)
(i) वीर कुँवर सिंह द्वारा स्वाधीनता की विजय पताका फहराना।	26 अप्रैल 1858
(ii) दानापुर सैनिक छावनी की सैनिक टुकड़ी द्वारा विद्रोह	23 अप्रैल, 1858
(iii) वीर कुँवर सिंह की मृत्यु	25 जुलाई, 1857
(iv) अंग्रेजी फौज द्वारा जगदीशपुर पर अधिकार	27 जुलाई, 1857
(v) आरा पर विजय	13 अगस्त 1857

3. **निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक वाक्य में दीजिए –**
   (क) वीर कुँवर सिंह का जन्म कहाँ हुआ था?
   (ख) उनके माता-पिता का नाम क्या था?
   (ग) ब्रिटिश झंडे को किस नाम से जाना जाता है?
   (घ) वीर कुँवर सिंह ने अपनी रियासत की जिम्मेवारी कब संभाली?
   (ङ) कुँवर सिंह को किस क्षेत्र में ज्यादा रुचि थी?

पाठ से आगे

1. वीर कुँवर सिंह के किस कार्य से आप ज्यादा प्रभावित हैं और क्यों?
2. 1857 की क्रांति के समय कुँवर सिंह की जगह आप होते तो क्या करते?
3. 23 अप्रैल को बिहारवासी किस दिवस के रूप में मनाते हैं?

WEBCOPY, NOT TO BE PUBLISHED BSTBPC

4. "वीर कुँवर सिंह एक योद्धा ही नहीं बल्कि एक कुशल नेतृत्त्वकर्त्ता भी थे।" इस कथन के संबंध में अपना विचार व्यक्त कीजिए।

5. वीर कुँवर सिंह के जीवन का कोई अंश क्या आपके जीवन से मेल खाता है? उल्लेख कीजिए तथा अपने मित्रों को बताइए।

व्याकरण

1. इन शब्दों के मानक उच्चारण कीजिए-

कुँवर, जगदीशपुर, अविश्वसनीय, आजमगढ़, रणनीति, वीरप्रसविनी, स्वतंत्रता, अवशेष, फाल्गुन, प्रसिद्ध, शौर्य

2. निम्नलिखित शब्दों के पर्यायवाची लिखिए-

(क) रियासत -

(ख) झंडा -

(ग) भूमि -

(घ) स्वतंत्र-

(ङ) प्रतीक्षा-

(च) संकल्प-

© BSTBPC WEBCOPY, NOT TO BE PUBLISHED

गतिविधि

1. वीर कुँवर सिंह को छोड़ बिहार के अन्य स्वतंत्रता सेनानियों के कार्यों के संबंध में जानकारी प्राप्त कर अपने साथियों को सुनाइए।
2. पठित पाठ के आधार पर एक लघु नाटक का निर्माण कर कक्षा में प्रस्तुत कीजिए।
3. पाठ में आए कविता की पंक्तियों को कागज पर लिखकर कक्षा में प्रदर्शित कीजिए।
4. अंग्रेजों की चौकसी के बावजूद कुँवर सिंह गंगा पार कर जगदीशपुर पहुँच गए। उनके इस सफलता के कारणों की चर्चा अपने शिक्षक से कीजिए।

6 गंगा स्तुति

बड़-सुख सार पाओल तुअ तीरे।
छोड़इत निकट नयन बह नीरे।।

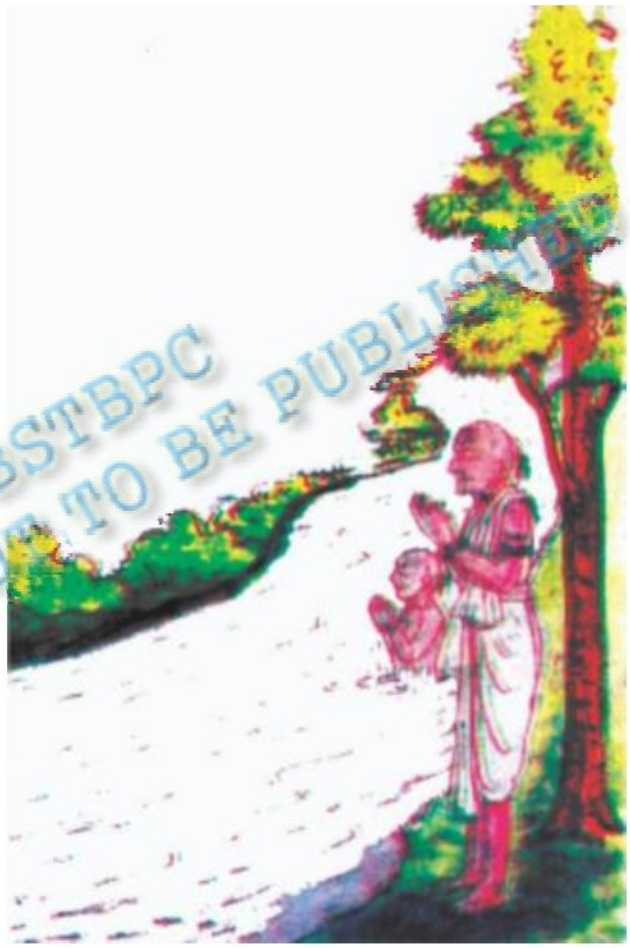
कर जोरि विनमओं विमल तरंगे।
पुन दरसन होए, पुनमति गंगे।।

एक अपराध छेमब मोर जानी।
परसल माय पाय तुअ पानी।।

कि करब जप-तप जोग धेयाने।
जनम कृतारथ एकहि सनाने।।

भनई विद्यापति समदओं तोही।
अन्तकाल जनु विसरहु मोही।।

-विद्यापति



© BSTBPC WEBCOPY NOT TO BE PUBLISHED

शब्दार्थ

दरसन-दर्शन **सनाने**-स्नान करना **छेमब**- क्षमा करना **विमल**-पवित्र
भनई- कहते हैं **पुनमति**-बार-बार **समदओं**-प्रार्थना करना **परसल**-स्पर्श, छूना ।

प्रश्न-अभ्यास

पाठ से

1. 'गंगा-स्तुति' कविता के कवि कौन हैं?
2. गंगा के किनारे को छोड़ते समय कवि की आँखों से आँसू क्यों बह रहे थे?
3. कवि गंगा से किस अपराध की क्षमा माँगता है?
4. **कविता की निम्नलिखित पंक्तियों को पूरा कीजिए**

   (क) कि करब जप-तप जोग धेयाने

   .....

   (ख) .....

   अंत काल जनु बिसरहु मोही।

पाठ से आगे

1. इस पाठ का शीर्षक "गंगा-स्तुति" रखा गया है। आप इस शीर्षक से सहमत हैं या असहमत? तर्कपूर्ण उत्तर दीजिए।
2. गंगा के अतिरिक्त अन्य नदियाँ भी हमारे जीवन के लिए उपयोगी हैं। इन नदियों का हमारे दैनिक जीवन में क्या महत्व है, उल्लेख कीजिए।

व्याकरण

1. निम्नलिखित शब्दों के पर्याय लिखिए

   (क) पाओल.....

   (ख) ओड़इब.....

   (ग) समदओं.....

   (घ) समाने .....

   (ङ) पाय .....

गतिविधि

1. गंगा के उद्गम स्थल से उसके समुद्र में मिलने तक की यात्रा के प्राकृतिक दृश्यों का चित्रण कीजिए।
2. गंगा के किनारे बसे शहरों की सूची बनाइए। इन शहरों में स्थित कल-कारखानों से गंगा नदी पर किस प्रकार का दुष्प्रभाव पड़ता है। इस पर अपने सहपाठियों से चर्चा कीजिए एवं लिखिए।

© RSMBPC WEBCOPY, NOT TO BE PUBLISHED

7 साइकिल की सवारी

भगवान ही जानता है कि जब मैं किसी को साइकिल की सवारी करते या हारमोनियम बजाते देखता हूँ तब मुझे अपने ऊपर कैसी दया आती है। सोचता हूँ, भगवान ने ये दोनों विद्याएँ भी खूब बनाई हैं। एक से समय बचता है, दूसरी से समय कटता है। मगर तमाशा देखिए, हमारे प्रारब्ध में कलियुग की ये दोनों विद्याएँ नहीं लिखी गई। न साइकिल चला सकते हैं, न बाजा ही बजा सकते हैं। पता नहीं, कब से यह धारणा हमारे मन में बैठ गई है कि हम सब कुछ कर सकते हैं, मगर ये दोनों काम नहीं कर सकते।

शायद 1932 की बात है कि बैठे-बैठे ख्याल आया, चलो साइकिल चलाना सीख लें। और इसकी शुरुआत यों हुई कि हमारे लड़के ने चुपचुपाते में यह विद्या सीख ली और हमारे सामने से सवार होकर निकलने लगा। अब आप से क्या कहें कि लज्जा और घृणा के कैसे-कैसे ख्याल हमारे मन में उठे। सोचा, क्या हमीं जमाने भर में फिसड्डी रह गए हैं। सारी दुनिया चलाती है, जरा-जरा से लड़के चलाते हैं, मूर्ख और गँवार चलाते हैं, हम तो परमात्मा की कृपा से फिर भी पढ़े-लिखे हैं। क्या हमीं नहीं चला सकेंगे? आखिर इसमें मुश्किल क्या है? कूदकर चढ़ गए और ताबड़-तोड़ गाँव मारने लगे। और जब देखा कि कोई राह में खड़ा है तब टन-टन करके घंटी बजा दी। न हटा तो क्रोधपूर्ण आँखों से उसकी तरफ देखते हुए निकल गए। बस, यही तो सारा गुर है इस तरह या उस सवारी का! कुछ ही दिनों में सीख लेंगे। बस महाराज! हमने निश्चय कर लिया कि चाहे जो हो जाए, परवाह नहीं।

दूसरे दिन हमने अपने फटे-पुराने कपड़े तलाश किए और उन्हें ले जाकर श्रीमतीजी के सामने पटक दिया कि इनको जरा मरम्मत तो कर दो।

श्रीमती जी ने हमारी तरफ अचरज भरी दृष्टि से देखा और कहा, "इन कपड़ों में अब जान ही कहाँ है जो मरम्मत करूँ! इन्हें तो फेंक दिए थे। आप कहाँ से उठा लाए? वहीं जाकर डाल आइए।"

हमने मुस्कुराकर श्रीमती जी की तरफ देखा और कहा, "तुम हर समय बहस न किया करो। आखिर मैं इन्हें ढूँढ़-ढाँढ़कर लाया हूँ तो ऐसे ही तो नहीं उठा लाया,कृपा करके इनकी मरम्मत कर डालो।"

मगर श्रीमती जी बोलीं, "पहले बताओ, इनका क्या बनेगा?"

हम चाहते थे कि घर में किसी को कानों-कान ख़बर न हो और हम साइकिल सवार बन जाएँ। और इसके बाद जब इसके पंडित हो जाएँ तब एक दिन ज़हाँगीर के मक़बरे को जाने का निश्चय करें। घरवालों को ताँगे में बिठा दें और कहें, "तुम चलो, हम दूसरे ताँगे में आते हैं।" जब वे चले जाएँ तब

साइकिल पर सवार होकर उनको रास्ते में मिलें। हमें साइकिल पर सवार देखकर उन लोगों की क्या हालत होगी! हैरान हो जाएँगे, आँखें मल-मलकर देखेंगे कि कहीं कोई और तो नहीं! परन्तु हम गरदन टेढ़ी करके दूसरी तरफ देखने लग जाएँगे, जैसे हमें कुछ मालूम ही नहीं है, जैसे यह सवारी हमारे लिए साधारण बात है।

झक मारकर बताना पड़ा कि रोज-रोज ताँगे का खर्च मारे डालता है। साइकिल चलाना सीखेंगे।

श्रीमती जी ने बच्चे को सुलाते हुए हमारी तरफ देखा और मुस्कुराकर बोलीं, "मुझे तो आशा नहीं कि आपसे यह बेल मत्थे चढ़ सके। खैर यत्न कर देखिए। मगर इन कपड़ों का क्या बनेगा?"

हमने ज़रा रोब से कहा, " आखिर बाइसिकिल से एक दो बार गिरेंगे या नहीं? और गिरने से कपड़े फटेंगे या नहीं? जो मूर्ख हैं, वे नए कपड़ों का नुकसान कर बैठते हैं। जो बुद्धिमान हैं, वे पुराने कपड़ों से काम चलाते हैं।"

मालूम होता है, हमारी इस युक्ति का जवाब हमारी स्त्री के पास कोई न था क्योंकि उन्होंने उसी समय मशीन मँगवाकर उन कपड़ों की मरम्मत शुरू कर दी।

इधर हमने बाज़ार जाकर जंबक के दो डिब्बे खरीद लिए कि चोट लगने पर उसका उसी समय इलाज किया जा सके। इसके बाद जाकर एक खुला मैदान तलाश किया ताकि दूसरे दिन से साइकिल-सवारी का अभ्यास किया जा सके।

अब यह सवाल हमारे सामने था कि आना उस्ताद किसे बनाएँ। इसी उधेड़बुन में बैठे थे कि तिवारी लक्ष्मीनारायण आ गए और बोले, "क्यों भाई, हो जाए एक बाजी शतरंज की?"

हमने सिर हिलाकर जवाब दिया, "नहीं साहब! आज तो जी नहीं चाहता।"

"क्यों?"

"यदि जी न चाहे तो क्या करें।?"

यह कहते-कहते हमारा गला भर आया। तिवारी जी का दिल पसीज गया। हमारे पास बैठकर बोले, "अरे भाई, मामला क्या है? स्त्री से झगड़ा तो नहीं हो गया?"

हमने कहा, "तिवारी भैया, क्या कहें? सोचा था, लाओ, साइकिल की सवारी सीख लें। मगर अब कोई ऐसा आदमी नहीं दिखाई देता जो हमारी सहायता करें। बताओ, है कोई ऐसा आदमी तुम्हारे ख्याल में?"

तिवारी जी ने हमारी तरफ बेबसी की आँखों से ऐसे देखा मानो हमको कोई खजाना मिल रहा है, और वे खाली हाथ रह जाते हैं। बोले, "मेरी मानो तो रोग न पालो। अब इस आयु में साइकिल पर चढ़ोगे? और यह भी कोई सवारियों में सवारी है कि डंडे पर उकड़ूँ बैठे हैं और पाँव चला रहे हैं। अजी लानत भेजो इस ख्याल पर आओ एक बाजी खेलें।"

WEBCOPY © BSEBSC NOT TO BE PUBLISHED

फुंका जाता है। मुँह फुलाकर हमने कहा, "भाई तिवारी, हम तो जरूर सीखेंगे। कोई आदमी बताओ।"

"आदमी तो ऐसा है एक, मगर वह मुफ्त नहीं सिखाएगा। फीस लेगा। दे सकोगे?"

"कितने दिन में सिखा देगा?"

"यही दस-बारह दिनों में!"

"और फीस क्या लेगा हमसे?"

"औरों से पचास लेता है। तुमसे बीस ले लेगा हमारी खातिर।" हमने सोचा-दस दिन सिखाएगा और बीस रुपए फीस लेगा। दस दिन-बीस रुपए। बीस रुपए-दस दिन। अर्थात् दो रुपए रोजाना अर्थात् साठ रुपए महीना, और वह भी एक दो घंटों के लिए। ऐसी तीन-चार ट्यूशनें मिल जाएँ तो ढाई-तीन सौ रुपया महीना हो गया। हमने तिवारी जी से तो इतना ही कहा कि जाकर मामला तय कर आओ, मगर जी में खुश हो रहे थे कि साइकिल चलाना आ जाए तो एक ट्रेनिंग स्कूल खोल दें और तीन-चार सौ रुपए मासिक कमाने लगे।

इधर तिवारी जी मामला तय करने गए, उधर हमने यह शुभ समाचार जाकर श्रीमती जी को सुना दिया कि कुछ दिनों के बाद हम एक ऐसा स्कूल खोलने वाले हैं जिसमें तीन-चार सौ रुपए महीने की आमदनी होगी।

श्रीमती जी बोली, "तुम्हारी इतनी आयु हो गई, मगर ओछापन न गया। पहले आप तो सीख लो, फिर स्कूल खोल लेना। मैं तो समझती हूँ कि तुम सीख ही न सकोगे, दूसरों को सिखाना तो दूर की बात है।"

हमने बिगड़कर कहा, "यह बड़ी बुरी आदत है कि हर काम में टोक देती हो। हमसे बड़े-बड़े सीख रहे हैं तो क्या हम न सीख सकेंगे? और पहले तो शायद सीखते या न सीखते, मगर अब तुमने टोका है तब जरूर सीखेंगे। तुम भी क्या कहोगी"।

श्रीमती जी बोलीं, "मैं तो चाहती हूँ तुम हवाई जहाज चलाओ, यह बाइसिकिल क्या चीज है! पर तुम्हारे स्वभाव से डर लगता है। एक बार गिरोगे तो देख लेना, बाइसिकिल वहीं फेंक-फाँककर चले आओगे।"

इतने में तिवारी जी ने बाहर से आवाज़ दी। हमने जाकर देखा तो उस्ताद साहब खड़े थे। हमने शरीफ विद्यार्थियों के समान श्रद्धा से हाथ जोड़कर प्रणाम किया और चुपचाप खड़े हो गए।

तिवारी जी बोले, "यह तो बीस पर मानते ही न थे। बड़ी मुश्किल से मनाया है। पेशगी लेंगे। कहते हैं, पीछे कोई नहीं देता।"

"अरे भाई, हम देंगे। दुनिया लाख बुरी है, मगर फिर भी भले आदमियों से खाली नहीं है। यह बीस

WEBCOPY © BSTBEC NOT TO BE PUBLISHED

चलाना सिखा दें, फिर देखें, हम इनकी क्या-क्या सेवा करते हैं।"

मगर उस्ताद साहब नहीं माने, बोले, "फीस पहले लेंगे।"

"और यदि आपने नहीं सिखाया तो?"

"नहीं सिखाया तो फीस लौटा देंगे।"

"और यदि फीस न लौटाई तो?"

इस पर तिवारी जी ने कहा, "अरे साहब! क्या यह तिवारी मर गया है? शहर में रहना हराम कर दूँ, बाजार में निकलना बंद कर दूँ। फीस लेकर भाग जाना कोई हँसी-खेल है?

जब हमें विश्वास हो गया कि इसमें कोई धोखा नहीं है तब हमने फीस के रुपए लाकर उस्ताद को भेंट कर दिए और कहा, "उस्ताद, कल सवेरे ही आ जाना। हम तैयार रहेंगे। हमने इस काम के लिए कपड़े भी बनवा लिए हैं। अगर गिर पड़े तो चोट पर लगाने के लिए जंबक भी खरीद लिया है। और हाँ, हमारे पड़ोस में जो मिस्त्री रहता है उससे साइकिल भी माँग ली है। आप सवेरे ही चले आएँ तो हरि नाम लेकर शुरू कर दें।"

तिवारी जी और उस्ताद ने हमें हर तरह से तसल्ली दी और चले गए। इतने में हमें याद आया कि एक बात कहना भूल गए। नंगे पाँव भागे और उन्हें बाज़ार में जाकर पकड़ा। वे हैरान थे। हमने हाँफते-हाँफते कहा, "उस्ताद, हम शहर के पास नहीं सीखेंगे, लारेंसबाग में जो मैदान है, वहाँ सीखेंगे। वहाँ एक तो भूमि नरम है, चोट कम लगती है। दूसरे वहाँ कोई देखता नहीं है।"

अब रात को आराम की नींद कहाँ? बार-बार चौंकते थे और देखते थे कि कहीं सूरज तो नहीं निकल आया। सोते थे तो साइकिल के सपने आते थे। एक बार देखा कि हम साइकिल से गिरकर जख्मी हो गए हैं। साइकिल आप से आप हवा में चल रही है और लोग हमारी तरफ आँखें फाड़-फाड़कर देख रहे थे।

अब आखें खुलीं तो दिन निकल आया था। जल्दी से जाकर वे पुराने कपड़े पहन लिए, जंबक का डिब्बा साथ में ले लिया और नौकर को भेजकर मिस्त्री से साइकिल मँगवा ली। इसी समय उस्ताद साहब भी आ गए और हम भगवान का नाम लेकर लारेंसबाग की ओर चले। लेकिन अभी घर से निकले ही थे कि बिल्ली रास्ता काट गई और एक लड़के ने छींक दिया। क्या कहें हमें कितना क्रोध आया उस नामुराद बिल्ली पर और उस शैतान लड़के पर! मगर क्या करते? दाँत पीसकर रह गए। एक बार फिर भगवान का पावन नाम लिया और आगे बढ़े। पर बाज़ार में पहुँचकर देखा कि हर आदमी हमारी तरफ देखता है, मुस्कुराता है। अब हम हैरान थे कि बात क्या है? सहसा हमने देखा कि हमने जल्दी और घबराहट में पाज़ामा और अचकन दोनों उलटे पहन लिए हैं, और लोग इसी पर हँस रहे हैं। सिर मुड़ाते ही ओले पड़े।

हमने उस्ताद से माफी माँगी और घर लौट आए अर्थात् हमारा पहला दिन मुफ्त में गया।

© RSEBTC WEBCOPY - NOT TO BE PUBLISHED

दूसरे दिन फिर निकले। रास्ते में उस्ताद साहब बोले, "मैं एक गिलास लस्सी पी लूँ। आप जरा साइकिल को थामिए।"

उस्ताद साहब लस्सी पीने लगे तो हमने साइकिल के पुर्जों की ऊपर-नीचे परीक्षा शुरू कर दी। फिर कुछ जी में आया तो उसका हैण्डल पकड़कर ज़रा चलने लगे। मगर दो ही कदम गए होंगे कि ऐसा मालूम हुआ जैसे साइकिल हमारे सीने पर चढ़ी आती है।

इस समय हमारे सामने यह गंभीर प्रश्न था कि क्या करना चाहिए। युद्ध-क्षेत्र में डटे रहें या हट जाएँ? सोच-विचार के बाद यही निश्चय हुआ कि यह लोहे का घोड़ा है। इसके सामने हम क्या चीज हैं? बड़े-बड़े वीर योद्धा भी नहीं ठहर सकते। इसलिए हमने साइकिल छोड़ दी और भगोड़े सिपाही बनकर मुड़ गए। पर दूसरे ही क्षण साइकिल अपने पूरे जोर से हमारे पाँव पर गिर गई और हमारी रामदुहाई बाजार के एक सिरे से दूसरे सिरे तक गूँजने लगी। उस्ताद लस्सी छोड़कर दौड़ आए और दयावान लोग भी जमा हो गए। सबने मिलकर हमारा पाँव साइकिल से निकाला। भगवान के एक भक्त ने जंबक का डिब्बा भी उठाकर हमारे हाथ में दे दिया। दूसरे ने हमारी बगलों में हाथ डालकर हमें संभाला और सहानुभूति से पूछा, "चोट तो नहीं आई? जरा दो-चार कदम चलिए, नहीं तो लहू जम जाएगा।"

इस तरह दूसरे दिन हम और हमारी साइकिल दोनों अपने घर से थोड़ी दूर पर ज़ख़्मी हो गए। हम लँगड़ाते हुए घर लौट आए और साइकिल ठीक होने के लिए मिस्त्री की दुकान पर भेज दी।

मगर हमारे वीर हृदय का साहस और शौरज देखिए। अब भी मैदान में डटे रहे। कई बार गिरे, कई बार शहीद हुए। घुटने तुड़वाए, कपड़े फड़वाए, पर क्या मजाल जो जी छूट जाए। आठ-नौ दिन में साइकिल चलाना सीख गए थे। लेकिन अभी उस पर चढ़ना नहीं आता था। कोई परोपकारी पुरुष सहारा देकर चढ़ा देता तो फिर लिए जाते थे। हमारे आनंद की कोई सीमा न थी। सोचते थे, मार लिया मैदान हमने! दो-चार दिन में पूरे मास्टर बन जाएँगे, इसके बाद प्रोफेसर और इसके बाद प्रिंसिपल, फिर ट्रेनिंग कॉलेज और तीन-चार सौ रुपए मासिक। तिवारी जी देखेंगे और ईर्ष्या से जलेंगे।

उस दिन उस्ताद ने हमें साइकिल पर चढ़ा दिया और सड़क पर छोड़ दिया कि ले जाओ, अब तुम सीख गए।

अब हम साइकिल चला रहे थे और दिल ही दिल फूले न समाते थे। मगर हाल यह था कि कोई आदमी दो सौ गज़ के फासले पर होता तो हम गला फाड़-फाड़कर चिल्लाना शुरू कर देते- साहब! ज़रा बाईं तरफ हट जाइए। दूर फासले पर कोई गाड़ी दिखाई देती तो हमारे प्राण सूख जाते। उस समय हमारे मन की जो दशा होती उसे परमेश्वर ही जानता है। जब गाड़ी निकल जाती तब कहीं जाकर हमारी जान में जान आती।

© RSBTE&C WEBCOPY - NOT TO BE PUBLISHED

सहसा सामने से तिवारी जी आते दिखाई दिए। हमने उन्हें भी दूर से ही अल्टीमेटम दे दिया कि तिवारी जी, बाईं तरफ हो जाओ वरना साइकिल तुम्हारे ऊपर चढ़ा देंगे।

तिवारी जी ने अपनी छोटी-छोटी आँखों से हमारी तरफ देखा और मुस्कुराकर कहा, " ज़रा एक बात तो सुनते जाओ।"

हमने एक बार हैण्डल की तरफ, दूसरी बार तिवारी जी की तरफ देखकर जवाब दिया, " इस समय बात सुन सकते हैं? देखते नहीं हो, साइकिल पर सवार हैं।"

तिवारी जी बोले, "तो क्या जो साइकिल चलाते हैं वे किसी की बात नहीं सुनते हैं? बड़ी जरूरी बात है, जरा उतर आओ।"

हमने लड़खड़ाती हुई साइकिल को सँभालते हुए जवाब दिया, " उतर आएँ तो फिर चढ़ाएगा कौन? अभी चलाना सीखा है, चढ़ना नहीं सीखा।"

तिवारी जी चिल्लाते ही रह गए, हम आगे निकल गए।

इतने में सामने से एक ताँगा आता दिखाई पड़ा। हमने उसे भी दूर से डाँट दिया, "बाईं तरफ भाई। अभी नए चलानेवाले हैं।"

ताँगा बाईं तरफ हो गया। हम अपने रास्ते चले जा रहे थे। एकाएक पता नहीं घोड़ा भड़क उठा या ताँगेवाले को शरारत सूझी, जो भी हो, ताँगा हमारे सामने आ गया। हमारे हाथ-पाँव फूल गए। ज़रा-सा



© RSTBPC WEBCOPY, NOT TO BE PUBLISHED

हैण्डल घुमा देते तो हम दूसरी तरफ निकल जाते। मगर बुरा समय आता है तो बुद्धि पहले ही भ्रष्ट हो जाती है। उस समय हमें ख़्याल ही न आया कि हैण्डल घुमाया भी जा सकता है। फिर क्या था, हम और हमारी साइकिल दोनों ही ताँगे के नीचे आ गए और हम बेहोश हो गए।

जब हम होश में आए तब हम अपने घर में थे- और हमारी देह पर कितनी ही पट्टियाँ बँधी थीं। हमें होश में देखकर श्रीमती जी ने कहा, "क्यों? अब क्या हाल है? मैं कहती न थी, साइकिल चलाना न सीखो! उस समय तो किसी की सुनते ही न थे।"

हमने सोचा, लाओ सारा इलजाम तिवारी जी पर लगा दें और आप साफ बच जाएँ। बोले, "यह सब तिवारी जी की शरारत है।"

श्रीमती जी ने मुस्कुराकर जवाब दिया, "यह तो तुम उसको चकमा दो जो कुछ जानता न हो। इस ताँगे पर मैं ही तो बच्चों को लेकर घूमने निकली थी कि चलो सैर भी कर आएँगे और तुम्हें साइकिल चलाते भी देख आएँगे!"

हमने निरुतर होकर आँखें बंद कर लीं।

उस दिन के बाद फिर कभी हमने साइकिल को हाथ नहीं लगाया।

- सुदर्शन

शब्दार्थ

अचकन- बंद गले का लम्बा कोट
नामुराद- अभागा
अल्टीमेटम-चेतावनी
प्रारब्ध-भाग्य, तकदीर
ऊहापोह- ऊहापोह
पेशगी-अग्रिम
उस्ताद-गुरु
बेबसी-लाचारी
युक्ति-तरीका
योद्धा-युद्ध करने वाला

© BSTBC WEBCOPY, NOT TO BE PUBLISHED

प्रश्न-अभ्यास

पाठ से

1. साइकिल चलाने के बारे में लेखक की क्या धारणा थी? क्या यह धारणा सही थी? तर्क सहित उत्तर दीजिए।
2. लेखक ने साइकिल सीखने के लिए कौन-कौन सी तैयारियाँ की?
3. लेखक के झूठ की पोल कैसे खुल गयी?

4. किसने किससे कहा

(क) " कितने दिन में सिखा देगा?"

(ख) " नहीं सिखाया तो फीस लौटा देंगे।"

(ग) "मुझे तो आशा नहीं कि आपसे यह बेल मत्थे चढ़ सके।"

(घ) "हम शहर के पास नहीं सीखेंगे। लारेंसबाग में जो मैदान है वहाँ सीखेंगे।"

पाठ से आगे

1. बिल्ली के रास्ता काटने एवं बच्चे के छींकने पर लेखक को गुस्सा आया। क्या लेखक का गुस्सा करना उचित था। अपना विचार लिखिए।
2. किसी काम को सम्पन्न करने में आपको किससे किस प्रकार की मदद की अपेक्षा रहती है।

व्याकरण

1. निम्नलिखित मुहावरों का वाक्य में प्रयोग कीजिए

(क) मैदान में डटे रहना–

(ख) मैदान मार लेना–

(ग) हाथ–पाँव फूलना–

(घ) दाँत पीसना–

2. उदाहरण के अनुसार दो वाक्यों को एक वाक्य में बदलिए

(क) श्रीमती जी ने बच्चे को सुलाया। हमारी तरफ देखा।

– श्रीमती जी ने बच्चे को सुलाकर हमारी तरफ देखा।

(ख) उसी समय मशीन मँगवाया। उन कपड़ों की मरम्मत शुरू कर दी।

.....

(ग) उस्ताद ने हमें तसल्ली दी। चले गए।

.....

(घ) साइकिल का हैण्डल पकड़ा । चलने लगे।

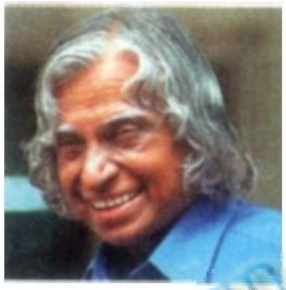
.....

गतिविधि

1. साइकिल में अनेक पार्ट–पुर्जे होते हैं। इन पार्ट–पुर्जों के नाम की सूची बनाइए।
2. 'हड़बड़ में गड़बड़' पर कोई किस्सा अपनी कक्षा में सुनाइए।
3. आपने साइकिल चलाना कैसे सीखा, पूरी प्रक्रिया का वर्णन कीजिए।

© BSTBPC WEBCOPY, NOT TO BE PUBLISHED

8 बचपन के दिन



मेरा जन्म तमिलनाडु के रामेश्वरम् कस्बे में एक मध्यमवर्गीय तमिल परिवार में हुआ था। मेरे पिता जैनुलाबदीन की कोई बहुत अच्छी औपचारिक शिक्षा नहीं हुई थी और न ही वे कोई बहुत धनी व्यक्ति थे। इसके बावजूद वे बुद्धिमान थे और उनमें उदारता की सच्ची भावना थी। मेरी माँ, आशियम्मा, उनकी आदर्श जीवनसंगिनी थीं। हम लोग अपने पुश्तैनी घर में रहते थे। रामेश्वरम् की मस्जिदवाली गली में बना यह घर पक्का और बड़ा था।

बचपन में मेरे तीन पक्के मित्र थे- रामानंद शास्त्री, अरविंदन और शिवप्रकाशन। जब मैं रामेश्वरम् की प्राथमिक पाठशाला में पाँचवीं कक्षा में था तब एक नये शिक्षक हमारी कक्षा में आए। मैं टोपी पहना करता था, जो मेरे मुसलमान होने का प्रतीक था। कक्षा में मैं हमेशा आगे की पंक्ति में जनेऊ पहने रामानंद के साथ बैठा करता था। नये शिक्षक को एक हिंदू लड़के का मुसलमान लड़के के साथ बैठना अच्छा नहीं लगा। उन्होंने मुझे पीछे बाली बेंच पर जाने को कहा। रामानंद भी मुझे पीछे की पंक्ति में बैठाए जाते देख काफी उदास नजर आ रहा था। पाठशाला की छुट्टी होने पर हम घर गए और सारी घटना अपने घरवालों को बताई। यह सुनकर रामानंद के पिता लक्ष्मण शास्त्री (जो रामेश्वरम् मंदिर के मुख्य पुजारी थे) ने उन शिक्षक महोदय को बुलाया और कहा कि उन्हें निर्दोष बच्चों के दिमाग में इस प्रकार की सामाजिक असमानता एवं सांप्रदायिकता का विष नहीं घोलना चाहिए। शिक्षक महोदय ने अपने किए व्यवहार पर न केवल दुख व्यक्त किया, बल्कि लक्ष्मण शास्त्री के कड़े रुख एवं धर्मनिरपेक्षता में उनके विश्वास से शिक्षक में अंतत: बदलाव आ गया।

प्राथमिक पाठशाला में मेरे विज्ञान शिक्षक शिव सुब्रह्मण्यम् अय्यर कट्टर ब्राह्मण थे, लेकिन वे कुछ-कुछ रूढ़िवाद के खिलाफ हो चले थे। वे मेरे साथ काफी समय बिताते थे और कहा करते थे, " कलाम, मैं तुम्हें ऐसा बनाना चाहता हूँ कि तुम बड़े शहरी लोगों के बीच एक उच्च शिक्षित व्यक्ति के रूप में पहचाने जाओ।"

एक दिन उन्होंने मुझे अपने घर खाने पर बुलाया। उनकी पत्नी इस बात से बहुत ही परेशान थीं कि उनकी रसोई में एक मुसलमान को भोजन पर आमंत्रित किया गया है। उन्होंने अपने रसोईघर के अंदर मुझे खाना खिलाने से साफ इनकार कर दिया। अय्यर जी ने मुझे फिर अगले सप्ताह रात के खाने

© NCERT NOT TO BE REPUBLISHED



पर आने को कहा। मेरी हिचकिचाहट को देखते हुए वे बोले, " इसमें परेशान होने की जरूरत नहीं है। एक बार जब तुम व्यवस्था बदल डालने का फैसला कर लेते हो तो ऐसी समस्याएँ सामने आतीं ही हैं।"

अगले सप्ताह जब मैं उनके घर रात्रिभोज पर गया तो उनकी पत्नी ही मुझे रसोईघर में ले गईं और स्वयं अपने हाथों से खाना परोसा।

पंद्रह साल की उम्र में मेरा दाखिला रामेश्वरम् के जिला मुख्यालय रामनाथपुरम् स्थित श्वार्ट्ज हाई स्कूल में हुआ। मेरे एक शिक्षक आयादुरै सोलोमन बहुत ही स्नेही व खुले दिमाग वाले व्यक्ति थे। वे सदैव छात्रों का उत्साह बढ़ाते रहते थे। रामनाथपुरम् में रहते हुए आयादुरै सोलोमन से मेरे संबंध काफी प्रगाढ़ हो गए थे। वे कहा करते थे, "जीवन में सफल होने और परिणाम प्राप्त करने के लिए तुम्हें तीन प्रमुख शक्तिशाली ताकतों को समझना चाहिए-इच्छा, आस्था और उम्मीदें।" उन्होंने ही मुझे सिखाया कि मैं जो कुछ भी चाहता हूँ, पहले उसके लिए मुझे तीव्र कामना करनी होगी, फिर निश्चित रूप से मैं उसे पा सकूँगा। वे सभी छात्रों को उनके भीतर छिपी शक्ति एवं योग्यता का आभास कराते थे। वे कहा करते थे, "निष्ठा एवं विश्वास से तुम अपनी नियति को बदल सकते हो।"

-ए.पी.जे.अब्दुल कलाम

शब्दार्थ

औपचारिक- विधिवत् **जीवनसंगिनी**-पत्नी **पुश्तैनी**-खानदानी **निर्दोष**-दोषरहित
दाखिला-प्रवेश **आस्था**- विश्वास **कामना**- इच्छा **आभास**-महसूस
प्रशंसा- बड़ाई **धर्मनिरपेक्षता**-धर्मों को समान रूप से देखना

© BSTBPC WEBCOPY NOT TO BE PUBLISHED

प्रश्न-अभ्यास

पाठ से

1. सही विकल्प चुनकर लिखिए-

(अ) भूतपूर्व राष्ट्रपति ए.पी.जे. अब्दुल कलाम का जन्म हुआ था।

(क) बिहार में (ख) उड़ीसा में (ग) तमिलनाडु में (घ) कर्नाटक में

(ब) रामानन्द के पिता थे ।

(क) सरकारी सेवक (ख) मन्दिर के पुजारी (ग) किसान (घ) व्यवसायी

(स) अब्दुल कलाम के बचपन में कितने पक्के मित्र थे।

(क) दो (ख) तीन (ग) चार (घ) पाँच

2. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम को शिक्षा ग्रहण करने में किन-किन कठिनाइयों का सामना करना पड़ा?

3. रामानन्द के पिता ने दोनों दोस्तों के प्रति भेद-भाव का व्यवहार करने वाले शिक्षक से क्या कहा और ऐसा उन्होंने क्यों कहा?

पाठ से आगे

1. डॉ. अब्दुल कलाम के विज्ञान शिक्षक की पत्नी की सोच में क्या परिवर्तन हुआ, इस परिवर्तन के क्या कारण रहे होंगे?

2. नये शिक्षक के द्वारा डॉ. अब्दुल कलाम को उनके मित्र रामानन्द से अलग हटकर बैठने को कहा गया। शिक्षक के इस व्यवहार पर अपनी राय तर्क सहित दीजिए।

व्याकरण

1. वाक्य बनाइए-

गली, पाठशाला, शिक्षक, इच्छा, तीव्र

2. पर्यायवाची शब्द लिखिए-

धनी, घर, व्यक्ति, दिन, पत्नी

गतिविधि

1. भारत में अबतक जितने भी राष्ट्रपति बने हैं, उनकी सूची क्रमानुसार बनाइए। आप चाहें तो उनके चित्र भी संग्रह कर सकते हैं।

2. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम के द्वारा विज्ञान के क्षेत्र में किए गए कार्यों की जानकारी प्राप्त कीजिए।

© BSTBPC WEBCOPY, NOT TO BE PUBLISHED

9 वर्षा बहार

वर्षा बहार सबके, मन को लुभा रही है
नभ में छटा अनूठी, घनघोर छा रही है।

बिजली चमक रही है, बादल गरज रहे हैं
पानी बरस रहा है, झरने भी बह रहे हैं।

चलती हवा है ठण्डी, हिलती हैं डालियाँ सब
बागों में गीत सुन्दर, गाती है मालिनें अब।

तालों में जीव जलचर, अति हैं प्रसन्न होते,
फिरते लखो पपीहे, हैं ग्रीष्म ताप खोते।

करते हैं नृत्य वन में, देखो ये मोर सारे,
मेढक लुभा रहे हैं, गाकर सुगीत प्यारे।

खिलना गुलाब कैसा, सौरभ उड़ा रहा है,
बागों में खूब सुख से, आमोद छा रहा है।

चलते कतार बाँधे, देखो ये हंस सुन्दर,
गाते हैं गीत कैसे, लेते किसान मनहर।

इस भाँति है अनोखी, वर्षा बहार भू पर,
सारे जगत की शोभा, निर्भर है इसके ऊपर।



-मुकुटधर पाण्डेय

WEBCOPY NOT TO BE PUBLISHED BSTBBC

शब्दार्थ

अनूठी- अनोखी **आमोद**- खुशी **अति**- बहुत **लखो**- देखो
भू- भूमि, धरती **सौरभ**- सुगंध **मनहर**-मन को हरने वाले

प्रश्न-अभ्यास

पाठ से

1. प्रस्तुत कविता के आधार पर वर्षा ऋतु का वर्णन कीजिए।
2. वर्षा ऋतु में बाग-बगीचों में आनंद क्यों छा जाता है?
3. **निम्नलिखित पंक्तियों का अर्थ स्पष्ट कीजिए-**
   (क) खिलता गुलाब कैसा, सौरभ उड़ा रहा है।
   (ख) गाते हैं गीत कैसे, लेते किसान मनहर।

पाठ से आगे

1. अपने अनुभव के आधार पर वर्षा ऋतु का वर्णन कीजिए।
2. ग्रीष्म ऋतु के बाद वर्षा ऋतु आती है। वर्षा ऋतु के आने पर आप कैसा महसूस करते हैं?
3. वर्षा के जल से क्या-क्या लाभ है?
4. वर्षा के जल को किन-किन तरीकों से संरक्षित किया जा सकता है?
5. यहाँ कविता की प्रथम पंक्ति दी गई है। इसके आधार पर अन्य तीन पंक्तियों की रचना स्वयं कीजिए-
   बादल बरसे, नाचे मोर
   .....
   .....
   .....

© ESTBP WEBCOPY, NOT TO BE PUBLISHED

व्याकरण

1. **निम्नलिखित शब्दों के विलोम लिखिए-**
   सुख, प्रसन्न, सुन्दर, ठण्डी

गतिविधि

1. वर्षा ऋतु में आपके घर एवं गाँव की स्थिति कैसी हो जाती है? अपने अनुभवों के आधार पर लिखिए।

10 कुंभा का आत्मबलिदान

आज़ादी किसे प्रिय नहीं होती? मनुष्यों की तो बात ही क्या, पशु-पक्षी भी पराधीन रहना पसंद नहीं करते। लेकिन कभी-कभी इस प्रिय आज़ादी की रक्षा के लिए प्राण भी न्यौछावर करने पड़ते हैं।

राजपूतों की छोटी-सी रियासत बूँदी। वहाँ के वासी थे आज़ादी के परवाने, हाड़ा जाति के राजपूत। परम वीर, नितांत स्वाभिमानी। अपनी मातृभूमि की आन-बान के लिए हरदम मर-मिटने को तैयार।

लेकिन शीघ्र ही उनकी वीरता की परीक्षा की घड़ी आ पहुँची। चित्तौड़ के महाराणा ने बूँदी को अपनी प्रचंड सैन्य शक्ति के बल पर अपने अधीन करना चाहा। बूँदी के हाड़ा राजपूतों ने डटकर युद्ध किया। राणा को इस युद्ध में मुँह की खानी पड़ी।

बूँदी की छोटी-सी रियासत के उन जाँबाज़ सपूतों ने चित्तौड़ के शक्तिशाली राणा को धूल चटा दी। इस अपमानजनक पराजय से राणा तिलमिला उठे। वे क्रोध से आग-बबूला होकर प्रतिज्ञा कर बैठे, "जब तक बूँदी पर अपना झंडा नहीं फहरा दूँगा, तब तक एक बूँद पानी भी नहीं पीऊँगा।"



बूँदी छोटा-सा राज्य सही, पर उसे चुटकियाँ बजाते तो जीता नहीं जा सकता था। जल्दबाजी में बिना पूरी तैयारी किए युद्ध करने पर चित्तौड़ को फिर पराजय का मुँह देखना पड़ता। पूरी तैयारी और युद्ध में काफी समय लगने की संभावना थी।

ऐसी स्थिति में राणा की प्रतिज्ञा का क्या हो? राणा अपनी प्रतिज्ञा से तिल भर भी डिगने को तैयार न थे। सोच-विचार के बाद एक मंत्री को यह उपाय सूझा कि बूँदी का एक नकली किला बनाया जाए और राणा उसे जीतकर अपनी प्रतिज्ञा पूरी करें। फिर अन्न-जल ग्रहण कर लें। बाद में भली-भाँति तैयारी करके बूँदी का असली किला जीता जाए।

यह उपाय सबको पसंद आया। फिर तो तुरंत एक मैदान में बूँदी का नकली किला बनाया जाने लगा। तभी चित्तौड़ की सेना का एक हाड़ा सैनिक जंगल से शिकार खेलकर लौटा। किला बनते

© ESSENCE OF KNOWLEDGE, NOT TO BE PUBLISHED

देखकर वह ठिठक गया। ध्यान से देखकर बोला, "अहा! कितनी सुन्दर कारीगरी है! ठीक वैसा ही द्वार, वैसा ही परकोटा, वैसे ही बुर्ज! बूँदी के किले की हूबहू नकल की गई है। मेरी मातृभूमि बूँदी, तुझे प्रणाम है।" यह कहकर उसने उस किले के सामने अत्यंत सम्मान से सिर झुका दिया।

लेकिन सैनिक का कौतूहल शांत नहीं हुआ। उसके मन में एक प्रश्न घूमता रहा, 'आखिर बूँदी का यह नकली किला यहाँ क्यों बनाया जा रहा है?'

वह अपना कौतूहल मिटाने के लिए कारीगरों के पास पहुँचा। उन्होंने उसे सब बातें कह सुनाईं। बातें सुनते ही उस सैनिक की पेशानी पर बल पड़ गए। वह विद्युतगति से वहाँ से निकल आया। दृढ़ निश्चय से उसकी मुट्ठियाँ कस गईं। आँखें लाल हो गईं । बाँहे फड़कने लगीं। उसका ओजस्वी स्वर फूट पड़ा, " यह नहीं हो सकता। मेरी प्यारी मातृभूमि बूँदी, जब तक तेरा यह बेटा जीवित है, तब तक तेरा यह अपमान कदापि नहीं हो सकता। मैं रक्त की आखिरी बूँद शेष रहने तक अपनी मातृभूमि की रक्षा करूँगा।"

जानते हैं, कौन था यह सैनिक? यह था वीर हाड़ा राजपूत कुंभा। इसकी मातृभूमि थी बूँदी, पर यह बहुत समय से चित्तौड़ के राणा की सेना में नौकरी करता था। बूँदी के कुछ और हाड़ा राजपूत भी राणा की सेना में सैनिक थे। सभी परम स्वामिभक्त, परम वीर।

ये सभी राणा के लिए हरदम मरने-मिटने को तैयार थे, पर अपनी मातृभूमि बूँदी को अपमानित करने का यह नाटक इनके लिए अत्यंत असह्य था। सब चित्तौड़वासी इन हाड़ा राजपूतों की इस नाराजगी से बेखबर थे।

योजनानुसार राणा दूसरे दिन बूँदी के नकली किले को जीतने के लिए सेना लेकर चल पड़े। एकदम निश्चित जीत के बारे में पूरी तरह आश्वस्त, क्योंकि वास्तविक युद्ध नहीं, युद्ध का नाटक ही तो होना था। राणा के वहाँ पहुँचने पर हल्का-फुल्का प्रतिरोध करने के बाद बूँदी के नकली सैनिकों को हथियार डाल देने थे।

लेकिन यह क्या! नकली किले में घुसने से पहले ही राणा को तीरों की जोरदार बौछार का सामना करना पड़ा। तीर ठीक लक्ष्य साधकर छोड़े जा रहे थे। राणा ने बड़ी मुश्किल से अपने को बचाया। यह सब कुछ अप्रत्याशित था। कोई नहीं जान पाया कि यह कैसे हुआ?

अब राणा का सेनापति यह जानने के लिए आगे बढ़ा कि माज़रा क्या है? तभी अंदर से हाड़ा राजपूत वीर कुंभा का सिंह गर्जन सुनाई पड़ा, " सेनापति जी, ख़बरदार! पीछे हटिए। हमारे जीते जी आप बूँदी के किले में पैर नहीं रख पाएँगे। अंदर आने के लिए आपको बूँदी के वीरों की लाशों पर से गुजरना होगा।"

"अच्छा! कुंभा यह तुम हो! अरे भाई! यह बूँदी नहीं है। यह तो राणा की प्रतिज्ञा पूरी कराने के लिए बनाया गया नकली किला है। बात समझो और एक तरफ हट जाओ।"

© BSTBPC WEBCOPY NOT TO BE PUBLISHED

"सेनापति जी! मातृभूमि तो मातृभूमि होती है। वीर अपने प्राण देकर भी उसकी रक्षा करते हैं। मातृभूमि नकली भी होती है, यह मैं आपसे ही सुन रहा हूँ। हमने राणा का नमक खाया है। हम उनके सेवक हैं। उनके लिए प्राण तक दे सकते हैं। पर किसी के भी हाथों इस तरह अपनी मातृभूमि बूँदी का अपमान कदापि सहन नहीं करेंगे।"

सभी लोगों ने लाख समझाया, लेकिन बूँदी के नकली किले में मोर्चाबंदी करके डटे हुए उन मुट्ठी भर हाड़ा राजपूतों में से कोई तिल भर भी डिगने या झुकने को तैयार नहीं हुआ।

और अंत में युद्ध हुआ। एक बेमेल मुकाबला। एक ओर चित्तौड़ के राणा के हज़ारों सैनिक और दूसरी ओर हाड़ा कुंभा के नेतृत्व में लड़ने वाले बीस-पच्चीस देशभक्तों की छोटी-सी टोली, जो बूँदी के उस नकली किले में मातृभूमि के प्रति प्रेम की भावना लिए हुए उसकी रक्षा करती हुई मर मिटी।

जब तक एक भी हाड़ा राजपूत जिंदा रहा, चित्तौड़ का एक भी सिपाही बूँदी के उस नकली किले में प्रवेश नहीं कर पाया।

कहानी का अंत हो गया। राणा जीता, कुंभा और उसकी वीर टोली हार गई।

पर क्या सचमुच ऐसा ही हुआ? नहीं! लगता ऐसा है, जैसे राणा जीतकर भी हार गया और कुंभा अपनी मातृभूमि की आन-बान के लिए मरकर भी युद्ध में जीत गया।

सचमुच कोई-कोई जीत, हार से भी बदतर होती है और कोई हार जीत से भी अधिक शानदार। क्या कुंभा की हार तथा उसका आत्मबलिदान किसी शानदार जीत से भी अधिक गौरवपूर्ण नहीं है?

© RSTBSE WEBCOPY, NOT TO BE PUBLISHED

शब्दार्थ

पराधीन-गुलाम
प्राण-जान
जाँबाज़-आन की बाज़ी लगाने वाला
पराजय-हार
आग-बबूला होना-बहुत क्रोधित होना
संभावना-आशा, उम्मीद
ठिठकना-थोड़ी देर के लिए रुकना
पेशानी-माथा, मस्तक
असह्य-न सहने योग्य।
प्रतिरोध-विरोध, मुकाबला
बदतर-अत्यधिक खराब
आज़ादी के परवाने-आज़ादी के लिए संघर्ष करने वाले
अधीन= वश में, क़ब्ज़े में
धूल चटा दी-हरा दिया
तिलमिला उठा-बेचैन हो गया
चुटकियाँ बजाते-बहुत आसानी से
तिलभर न डिगना-थोड़ा भी न हटना
परकोटा=गढ़ की रक्षा के लिए निर्मित ऊँची चहारदीवारी
विद्युतगति-बिजली जैसी (तेज़) चाल से
वास्तविक-असली
अप्रत्याशित-जिसकी आशा न हो
गौरवपूर्ण-सम्मान से युक्त, महत्त्वपूर्ण

प्रश्न-अभ्यास

पाठ से

1. दिए गए शब्दों को रिक्त स्थानों में भरिए-

बूँदी, चित्तौड़, नकली, सैनिक, मंत्री

(क) राणा ..... का रहने वाला था।

(ख) बूँदी का ..... किला बनाया जाने लगा।

(ग) कुछ हाड़ा राजपूत राणा की सेना में ..... थे।

(घ) ..... ने सुझाव दिया कि बूँदी का एक नकली किला बनाया जाए।

(ङ) वीर कुंभा ..... का सपूत था।

2. हाड़ा राजपूतों की राणा से नाराजगी का क्या कारण था?
3. अपनी हार से क्रोधित हुए राणा ने अचानक क्या प्रतिज्ञा कर डाली?
4. राणा की प्रतिज्ञा तुरंत पूरी किए जाने में क्या कठिनाई थी?
5. बूँदी का नकली किला क्यों बनाया गया?
6. प्रस्तुत पाठ से कुंभा के किन-किन गुणों का पता चलता है?

पाठ से आगे

1. कुंभा की हार, राणा की जीत से शानदार थी। कैसे?
2. आप अपनी मातृभूमि की रक्षा के लिए क्या-क्या कर सकते हैं?
3. हाड़ा कुंभा की किस बात ने आपको सबसे ज्यादा प्रभावित किया और क्यों?
4. अगर आपकी जमीन पर कोई बल पूर्वक एवं छलपूर्वक कब्जा करना चाहे तो इस समस्या का समाधान आप कैसे करेंगे?

व्याकरण

1. पाठ में प्रयुक्त जातिवाचक एवं व्यक्तिवाचक संज्ञाओं को छाँटकर लिखिए।
2. **निम्नलिखित मुहावरों का अर्थ स्पष्ट करते हुए वाक्य में प्रयोग कीजिए**

धूल चटाना, आग बबूला होना, आँखें लाल होना, लाशों पर से गुजरना, मुँह की खाना ।

© BSTBPC WEB COPY NOT TO BE PUBLISHED

गतिविधि

1. बॉक्स में दी गई कहानी को वार्तालाप के रूप में लिखिए।

ज़ेन बातचीत

ज़ेन गुरु अपने शिष्यों को सिखाते हैं कि वे अपने आप को व्यक्त कैसे करें। दो मठ ऐसे थे जिनमें एक-एक बालक भी रहता था। हर सुबह एक मठ का नन्हा शिष्य जब सब्ज़ी खरीदने जाया करता तो उसकी मुलाकात दूसरे मठ के शिष्य से होती, जो अपने किसी काम से जा रहा होता था।

एक दिन दूसरे वाले शिष्य ने पहले से पूछा, " तुम कहाँ जा रहे हो?"

"जहाँ मेरे पाँव मुझे ले जाएँगे।" पहला बोला। इस उत्तर से पहला शिष्य चकरा गया। वह अपने गुरु से मदद माँगने गया। गुरु ने कहा, "कल सुबह जब तुम उस लड़के से मिलोगे तो उससे फिर यही सवाल पूछना। वह तुम्हें वही जवाब दे तो तुम पूछना 'अगर तुम्हारे पाँव न होते, तब तुम कहाँ जाते भला?' अच्छा सबक मिलेगा उसे।"

अगले दिन फिर बच्चों की मुलाकात हो गई। " कहाँ जा रहे हो तुम?" दूसरे शिष्य ने पूछा।

"जहाँ हवा जाएगी, वहीं।"

नन्हा शिष्य एक बार फिर चकरा गया, अपनी हार मानकर फिर वह गुरु के पास गया।

गुरु ने सुझाव दिया, " उससे पूछना अगर हवा न चले तो तुम कहाँ जाओगे?"

अगले दिन बच्चे तीसरी बार एक दूसरे से टकराए। दूसरे ने पूछा, "तुम कहाँ जा रहे हो?" "मैं सब्ज़ी खरीदने बाज़ार जा रहा हूँ।" पहले ने जवाब दिया।

साभार: चकमक, बाल विज्ञान पत्रिका, नवंबर, 2009

© DSERT WEBCOPY, NOT TO BE PUBLISHED

11 कबीर के दोहे

काल्ह करे सो आज कर, आज करे सो अब।
पल में परलै होयगी, बहुरि करेगा कब॥

साँईं इतना दीजिए, जामे कुटुम समाय।
मैं भी भूखा ना रहूँ, साधु न भूखा जाय॥

निंदक नियरे राखिए, आँगन कुटी छवाय।
बिन साबुन पानी बिना, निरमल करे सुभाय॥

जाति न पूछो साधु की, पूछ लीजिए ज्ञान।
मोल करो तलवार का, पड़ा रहन दो म्यान॥

सोना, सज्जन, साधुजन, टूटे जुरै सौ बार।
दुर्जन, कुंभ-कुम्हार के, एकै धका दरार॥

पोथी पढ़-पढ़ जग मुआ, पंडित भया न कोय।
ढाई आखर प्रेम का, पढ़ै सो पंडित होय॥

बुरा जो देखन मैं चला, बुरा न मिलया कोय।
जो दिल खोजा आपनो, मुझ सा बुरा न कोय॥

– कबीर

WEBCOPY © RSTBBC NOT TO BE PUBLISHED

शब्दार्थ

बहुरि – दुबारा	**साँईं** – ईश्वर, भगवान
कुटुम – सगा-संबंधी	**नियरे** – पास, निकट
आखर–अक्षर	**मुआ**–मर गया
निन्दक–निन्दा करने वाला	**म्यान**–तलवार रखने का खोल

प्रश्न-अभ्यास

पाठ से

1. पठित पाठ के आधार पर निम्नांकित कथनों पर सही (☒) या गलत (×) का निशान लगाइए

(क) प्रेम की भाषा बोलने वाला ही पंडित होता है।

(ख) निन्दा करने वालों को दूर रखना चाहिए।

(ग) कोई भी बात सोच-समझकर बोलनी चाहिए।

(घ) सज्जन व्यक्ति टुटता-जुड़ता रहता है जबकि दुर्जन व्यक्ति टुटता है तो जुड़ता नहीं।

2. पठित पाठ में कौन-सा दोहा आपको सबसे अच्छा लगा और क्यों?

3. कबीर के उस दोहे का उल्लेख कीजिए, जिसमें सज्जन, साधुजन और सोने की तुलना की गयी है।

पाठ से आगे

1. "कबीर के दोहे जीवनोपयोगी एवं व्यावहारिक शिक्षाओं से भरे पड़े हैं।" पाठ के आधार पर इस कथन को स्पष्ट कीजिए।

2. कबीर के दोहे का अध्ययन करने के पश्चात् उनके व्यक्तित्व के बारे में कल्पना कीजिए एवं लिखिए।

3. हमें काम को कल के भरोसे क्यों नहीं टालना चाहिए?

व्याकरण

1. निम्नलिखत शब्दों के पर्यायवाची लिखिए-

(क) परले ---------- (ख) नियर ----------

(ग) बहुरि ---------- (ग) आखर ----------

2. कुछ ऐसे शब्दों का संग्रह कीजिए, जिसमें 'जन' लगा हो।

जैसे- दुर्जन, जनतंत्र

3. दोहे की दी गई पंक्तियों को नीचे दिए गए उदाहरण के अनुसार बदलकर लिखिए-

उदाहरण - जाति न पूछो साधु की

- साधु की जाति न पूछो

(क) "मोल करो तलवार का" (ख) "बुरा जो देखन मैं चला"

गतिविधि

1. कबीर की भाँति अन्य कवियों ने भी उपदेशात्मक दोहे लिखे हैं। उनके कुछ दोहों को साफ-साफ बड़े अक्षरों में लिखकर अपनी कक्षा में दीवार पर चिपकाइए।

2. 'कबीर एक समाज सुधारक थे।' इस विषय पर अपने शिक्षक, अभिभावक एवं सहपाठियों से चर्चा कीजिए।

BSTBPC WEBCOPY NOT TO BE PUBLISHED

12 जन्म-बाधा

बबलू ने ही यह लीड फेंकी होगी; झाड़ू लगाते समय उसे खाट के नीचे मिली थी। अभी पूरी तरह खत्म भी नहीं हुई कि फेंक दी! ऐसी ही फिजूल-खर्चियों पर पप्पा नाराज होते हैं।

खैर, जाने दो, अपना तो काम ही बना। कागज और लिफाफा पप्पा के झोले से निकाल ही चुकी हूँ; उनको पता नहीं चला, नहीं तो जरूर पूछते।

अब जल्दी लिख लेना है मुझे। देर करूँगी तो फिर मौका नहीं मिलेगा। अभी माँ की आँख लगी है; कुछ देर तो नहीं ही जगेगी। छोटकी भी माँ का दूध चूसते-चूसते सो गई है। वह अगर जाग गयी तो आफत है; उसे लादे फिरना होगा।



WEBCOPY © BSTBPC NOT TO BE PUBLISHED

क्या लिखूँ? कैसे शुरू किया जाता है?... अच्छा लिख देती हूँ... प्यारे प्रधान... ऊँह! यह प्यारे-व्यारे क्या लिखना! वह कोई बच्चे थोड़े ही हैं जो! तब ...?

परम प; प में कौन-सा उ लगेगा? बड़ा या छोटा? माँ को जगाकर पूछूँ? उहँ, उसे भी आता होगा? और वह जग गयी तो लिखना ही नहीं होगा। लिख देती हूँ कुछ भी।

बबलू ने ही यह लीड फेंकी होगी; झाड़ू लगाते समय उसे खाट के नीचे मिली थी। अभी पूरी तरह खत्म भी नहीं हुई कि फेंक दी! ऐसी ही फिजूल-खर्चियों पर पप्पा नाराज होते हैं।

खैर, जाने दो, अपना तो काम ही बना। कागज और लिफाफा पप्पा के झोले से निकाल ही चुकी हूँ; उनको पता नहीं चला, नहीं तो जरूर पूछते।

अब जल्दी लिख लेना है मुझे। देर करूँगी तो फिर मौका नहीं मिलेगा। अभी माँ की आँख लगी है; कुछ देर तो नहीं ही जगेगी। छोटकी भी माँ का दूध चूसते-चूसते सो गई है। वह अगर जाग गयी तो आफत है; उसे लादे फिरना होगा।

क्या लिखूँ? कैसे शुरू किया जाता है?... अच्छा लिख देती हूँ... प्यारे प्रधान... ऊँह! यह प्यारे-व्यारे क्या लिखना! वह कोई बच्चे थोड़े ही हैं जो! तब ...?

परम प; प में कौन-सा उ लगेगा? बड़ा या छोटा? माँ को जगाकर पूछूँ? उहँ, उसे भी आना होगा? और वह जग गयी तो लिखना ही नहीं होगा। लिख देती हूँ कुछ भी।

लेकिन गलत हुआ तो बात बिगड़ सकती है। जिस लड़की को सही लिखना तक नहीं आता, उसकी बात कौन सुनेगा? लेकिन... लेकिन क्यों नहीं सुनी जाएगी मेरी बात? हिज्जे गलत हों, पर बात तो सही है! जो हो, लिख देती हूँ सीधे-सीधी।

जय माता रानी! जय गणेश जी! और पड़ोस वाली दीना बात-बात पर किन्हें याद करती है?... हाँ... या रब्बा!... मुझे आज यह चिट्ठी लिखना दो, लिखना हो जो, भगवान! मेरी कोई मदद करने वाला नहीं है। कोई नहीं।

उसकी आँखें भर आयीं, लेकिन वह रोकर समय बरबाद नहीं करना चाहती थी। इसलिए जैसे-तैसे लिखने ही लगी।

प्रधानमंत्री जी,

प्रणाम।

मैंने सुना है, बंधुआ मजदूरों को उनके मालिक से छुड़ाया जा रहा है। मुझे भी छुड़ा दीजिए न! मेरी पढ़ाई नहीं हो सकी है। पप्पा कहते हैं, बाद में देखा जाएगा, बाद में, यानी कभी नहीं। बारह की तो हो गई। मेरे तीनों भाई स्कूल जाते हैं। सब मुझ से छोटे हैं। बबलू जो मुझ से साल भर ही छोटा है, अपने जूठे बर्तन तक नहीं धोता। गुड्डू नौ साल का है। वह तो बबलू से भी ज्यादा कामचोर है। मुन्नू सात साल का है; वह बेचारा अक्सर बीमार ही रहा करता है। रीता पाँच साल की है, मीता तीन की और छोटकी साल भर की; वह भी भात खाने लगी है।

मैं दिन भर घर के कामों में लगी रहती हूँ। पप्पा कहते हैं, मैं माँ से भी अच्छी रोटियाँ बनाने लगी हूँ। लेकिन माँ की तरह सब्ज़ी नहीं बना पाती सो रोज़ डाँट सुनती हूँ।

© NCERT NOT TO BE PUBLISHED WEBCOPY

माँ कहती है, में बनाना नहीं चाहती सो बिगाड़ देती हूँ। लेकिन क्या करूँ, मुझसे हो ही नहीं पाता। सारे बर्तन मुझे ही माँजने पड़ते हैं। मुन्नू, रीता, मीता और अब छोटकी सब को मैं ही टाँगती रही हूँ। सबके कपड़े भी मुझे ही धोने पड़ते हैं। एक काम से दूसरे काम के बीच मुझे सुस्ताने का भी समय नहीं मिलता, फिर भी सब कहते हैं- गुड्डी धीमर है।

परसाल के पहले वाले साल, मामा जी की जिद पर मेरा नाम स्कूल में लिखवाया गया था, एक महीने ही तो जा पायी। उसी समय छोटकी हो गई सो माँ अकेले घर नहीं चला पायी, मुझे स्कूल छोड़ देना पड़ा। मैंने माँ से कहा था, मुझे भी पढ़ने दो, पप्पा ने सुना तो बोले कि जैसे घर ही में ककहरा सीखा है, वैसे ही आगे भी कुछ पढ़ ले। लेकिन घर में मुझे कौन पढ़ायेगा। और कब? मैं अपनी मर्जी से स्कूल जा नहीं सकती, किसी से कुछ कह नहीं सकती। क्या यह सच है कि बंधुआ मजदूरों को छुड़ा दिया गया है? तो मुझे भी छुड़वा दीजिए न!

आपकी बेटी (गीता) गुड्डी

हाय! पप्पा तो आ गए।

गुड्डी ने झट से चिट्ठी मोड़ कर छिपा ली। लीदु को फिर खाट के नीचे ही फेंक दिया और दौड़ पड़ी। जल्दी दरवाजा नहीं खुला तो पप्पा बिगड़ने लगते हैं।

"माँ कहाँ है?"

"सोयी है, बरामदे में।" वह हकलाकर बोली, जैसे चोरी करते पकड़ी गई हो।

"जा, चाय बना ला।"

बनवा लो चाय, बनवा लो! जितने दिन प्रधानमंत्री जी मुझे नहीं छुड़वा देते, उतने दिन खटवा लो। बस, अब सबकी आँख बचाकर पता लिख लेना है। और टिकट? टिकट कहाँ से लाऊँ? बिना टिकट के ही भेज देती हूँ। वे तो समझ ही जाएँगे। मेरे लिफाफे को खोलने के पहले ही मेरी हालत भाँप जाएँगे।

माँ-बाप के लिए चाय बनाकर ले जाते हुए उसके पैरों में फुर्ती-सी आ गयी और मन आनन्द से भर गया। उसे लगने लगा जैसे उसकी मुक्ति की घोषणा में अधिक दिन बाकी नहीं है।

-सुधा

शब्दार्थ

बिगाड़- ख़राब **धीमर**-सुस्त **गोपनीय**-छिपाने योग्य **मुक्ति**-छुटकारा

प्रश्न-अभ्यास

© BSTBPC WEBCOPY NOT TO BE PUBLISHED

पाठ से

1. गुड्डी अपनी तुलना बंधुआ मजदूर से क्यों करती है?
2. माँ-बाप के लिए चाय बनाकर लाते समय उसके पैरों में फुर्ती आ गयी- क्यों?

३. पढ़िए एवं सोचकर उत्तर दीजिए-

(i) "लेकिन क्यों नहीं सुनी जाएगी मेरी बात। हिज्जे गलत हों, पर बात तो सही है।"

(क) ऐसा गुड्डी ने क्यों सोचा?

(ख) यह वाक्य गुड्डी के व्यक्तित्व की किन विशेषताओं को दर्शाता है?

(ii) "टिकट कहाँ से लाऊँ? बिना टिकट के ही भेज देती हूँ। वे तो समझ ही जाएँगे।"

(क) गुड्डी ने ऐसा क्यों सोचा?

(ख) यह वाक्य गुड्डी के किस पक्ष को दर्शाता है?

4. पठित पाठ के आधार पर आपके मस्तिष्क में जो दृश्य उत्पन्न होता है, उसे अपने शब्दों में लिखिए।

पाठ से आगे

1. इस कहानी का शीर्षक 'जन्म-बाधा' है। आपकी दृष्टि में ऐसा शीर्षक क्यों दिया गया है?
2. किन-किन बातों से पता चलता है कि गुड्डी अपनी मुक्ति के लिए दृढ़संकल्प थी?
3. अपनी मुक्ति के लिए गुड्डी प्रधानमंत्री को चिट्ठी लिखती है। इससे इसके माता-पिता परेशानी में पड़ सकते हैं। गुड्डी के इस व्यवहार पर तर्क सहित विचार कीजिए।

गतिविधि

1. उन कारणों का पता लगाइए जो छोटी-छोटी लड़कियों पर बड़ी जिम्मेदारियाँ लादने के लिए जिम्मेदार हैं।
2. **निम्नलिखित कार्य कौन करता है**

(क) गुड़ियों से खेलना।

(ख) सिलाई-बुनाई का कार्य करना।

(ग) झाड़ू-बर्तन, चूल्हा-चौका का काम घर में करना।

(घ) घर में अपने छोटे भाई-बहनों को संभालना।

सोचिए क्या यह सही है?

3. प्रतिदिन किए गए कार्यों की सूची बनाइए, फिर अगले दिन उस सूची में कुछ नया जोड़िए।

© BSEBSOL WEBCOPY, NOT TO BE PUBLISHED

13 शक्ति और क्षमा

क्षमा, दया, तप, त्याग, मनोबल
सबका लिया सहारा,
पर नर-व्याघ्र, सुयोधन तुमसे
कहो कहाँ, कब हारा?
क्षमाशील हो रिपु समक्ष
तुम हुए विनत जितना ही,
दुष्ट कौरवों ने तुमको
कायर समझा उतना ही।
क्षमा शोभती उस भुजंग को
जिसके पास गरल हो,
उसको क्या, जो दंतहीन,
विषहीन, विनीत, सरल हो।
तीन दिवस तक पंथ माँगते
रघुपति सिन्धु किनारे,
बैठे पढ़ते रहे छंद
अनुनय के प्यारे-प्यारे।





उत्तर में जब एक नाद भी
उठा नहीं सागर से;
उठी अधीर धधक पौरुष की
आग राम के शर से।
सिन्धु देह धर 'त्राहि-त्राहि'
करता आ गिरा शरण में,
चरण पूज, दासता ग्रहण की
बँधा मूढ़ बंधन में।

© BSTBPC WEBCOPY, NOT TO BE PUBLISHED

सच पूछो, तो शर में ही
वसती है दीप्ति विनय की,
संधि-वचन संपूज्य उसी का
जिसमें शक्ति विजय की।
सहनशीलता, क्षमा, दया को
तभी पूजता जग है,
बल का दर्प चमकता उसके
पीछे जब जगमग है।

-रामधारी सिंह 'दिनकर'

शब्दार्थ

रिपु- शत्रु, दुश्मन
पौरुष-पुरुष का कर्म
गरल- विष, जहर
नाद-आवाज़, शब्द
अनुनय-प्रार्थना, विनय
भुजंग- साँप
दर्प- रोष, अभिमान
विनत-विनीत, नम्र, झुका हुआ
शर-बाण, तीर, बरछी
विनीत-नम्र

© SCERT BPC
WEBCOPY, NOT TO BE PUBLISHED

प्रश्न-अभ्यास

पाठ से

1. इस कविता के माध्यम से हमें क्या सीख मिलती है?
2. वे कौन-सी परिस्थितियाँ थीं जिन्होंने राम को धनुष उठाने पर बाध्य किया?

3. **निम्नलिखित पंक्तियों का अर्थ स्पष्ट कीजिए-**

क्षमा शोभती उस भुजंग को
जिसके पास गरल हो।
उसको क्या, जो दंतहीन,
विषहीन, विनीत, सरल हो।

पाठ से आगे

1. दिनकर के इस भाव से आप कहाँ तक सहमत है कि समाज शक्तिशाली की ही पूजा करता है? अभावहीन, निर्बल व्यक्ति को समाज में कोई नहीं पूछता। इन पर आप अपना विचार स्पष्ट कीजिए।
2. सुयोधन को नर-व्याघ्र क्यों कहा गया है?

व्याकरण

1. **निम्नलिखित शब्दों के पर्यायवाची शब्द लिखिए-**

भुजंग
रघुपति
सिंधु
शर
कायर
लिप्त

© BSTBBPC WEBCOPY, NOT TO BE PUBLISHED

गतिविधि

1. दिनकर के जीवन से संबंधित कुछ जानकारियाँ इकट्ठी कीजिए तथा उनके जन्म दिन पर अपने स्कूल में जयन्ति मनाइए।
2. दिनकर की अन्य रचनाओं का संकलन कर कक्षा में सुनाइए।
3. इस कविता को सुंदर हस्तलेख तथा बड़े अक्षरों में लिखकर कक्षा में प्रदर्शित कीजिए।

14 हिमशुक

बहुत समय पहले अवध में एक राजा राज्य करता था। उसके तीन लड़के थे। तीनों बहुत पढ़े-लिखे, बुद्धिमान और गुणी थे।

एक दिन राजा ने अपने तीनों राजकुमारों को परीक्षा लेने के लिए बुलाया। वह जानना चाहता था कि किसी दोषी को सज़ा देने के मामले में उन तीनों के क्या विचार हैं।

"मान लो," उसने कहा, " अगर मैं अपने जीवन और सम्मान की रक्षा की जिम्मेदारी किसी को सौंप दूँ और वह विश्वासघाती निकले तो उसे क्या सज़ा दी जानी चाहिए?"

सबसे बड़े लड़के ने कहा, "ऐसे आदमी की गरदन फौरन धड़ से अलग कर देनी चाहिए।"

दूसरे लड़के ने कहा, "मेरा भी यही विचार है। ऐसे आदमी को मृत्युदंड ही मिलना चाहिए। उसके साथ किसी तरह की दया नहीं दिखाई जानी चाहिए।"

तीसरा लड़का चुप बैठा रहा।

"क्या बात है, मेरे बेटे?" राजा ने उससे पूछा, "तुम कुछ नहीं बोले, तुम्हारा क्या विचार है?"

"महाराज," छोटे राजकुमार ने कहा, "यह सच है कि ऐसे कुसूर की सज़ा मौत के सिवा और कुछ नहीं हो सकती। लेकिन सज़ा देने से पहले यह बात साफ-साफ और पूरी तरह से साबित हो जानी चाहिए कि वह सचमुच ही दोषी है।"

"मानो, तुम्हारे विचार से ऐसा न किया गया तो निर्दोष आदमी भी मारा जा सकता है।" राजा ने पूछा।

"हाँ," राजकुमार ने जवाब दिया, "ऐसा हो सकता है। उदाहरण के लिए मैं आपको एक कहानी सुनाता हूँ।"

ऐसा कहकर राजकुमार ने यह कहानी सुनाई।

विदर्भ देश के राजा के पास एक अनोखा तोता था। उस तोते का नाम हिमशुक था। वह महल में पालतू पक्षी की तरह रहता था। हिमशुक बड़ा चतुर था। वह कई भाषाओं में बात कर सकता था। बुद्धिमान इतना था कि अक्सर राजा भी महत्त्वपूर्ण मामलों में उसकी राय लिया करता था।

हिमशुक पिंजरे में नहीं रहता था। वह अपनी इच्छा के अनुसार आज़ादी से घूमता रहता था। एक

© BSTBPC WEBCOPY, NOT TO BE PUBLISHED

दिन सवेरे वह महल से उड़कर जंगल की ओर निकल गया। वहाँ संयोग से उसकी भेंट अपने पिता से हो गई।

"तुमसे मिलकर मैं कितना प्रसन्न हुआ हूँ," उसके पिता ने कहा, " तुम्हारी माँ भी तुमसे मिलकर इतना ही प्रसन्न होगी। क्या तुम दो-चार दिन के लिए घर नहीं आ सकते?"

"घर आने की तो मुझे भी बड़ी इच्छा थी," हिमशुक ने कहा, "मगर इसके लिए मुझे राजा से अनुमति लेनी पड़ेगी।"

महल वापस जाकर हिमशुक ने राजा से घर जाने की आज्ञा माँगी। शुरू में तो राजा उसे जाने देने के लिए राजी नहीं हुआ। वह हिमशुक को बहुत मानता था और अपने से अलग नहीं करना चाहता था। पर अंत में वह मान गया। उसने हिमशुक को घर जाने की अनुमति दे ही दी।

" तुम घर जाकर अपने माँ-बाप के साथ कुछ दिन बिता सकते हो," राजा ने हिमशुक से कहा, "लेकिन जितनी जल्दी हो सके लौट आना।"

"बहुत अच्छा महाराज," हिमशुक ने कहा, "मैं पंद्रह दिन बाद वापस आ जाऊँगा।" इसके बाद हिमशुक अपने पिता के पास गया और वे दोनों, साथ-साथ उड़ते हुए, घर की ओर रवाना हुए। इतने वर्ष बाद अपने प्यारे बेटे हिमशुक को देखकर उसकी माँ बहुत खुश हुई।

एक पखवाड़े तक अपने माँ-बाप के साथ रहने के बाद हिमशुक ने उनसे कहा, "मेरे ये दिन अपने प्रियजनों के साथ बड़े ही सुख से बीते हैं, मगर अब मुझे जाना होगा। राजा मेरी राह देख रहे होंगे।"

हिमशुक के माँ-बाप लड़के इतनी जल्दी जाने की बात सुनकर उदास हो गए। परंतु वे उसे रोक नहीं सके। हिमशुक ने राजा से वादा किया था कि वह पंद्रह दिन के बाद लौट आएगा।

"हम राजा के लिए कोई उपहार भिजवाना चाहते हैं," हिमशुक के पिता ने कहा, "लेकिन समझ में नहीं आता कि कौन-सी चीज भिजवाएँ।"

हिमशुक के माता और पिता दोनों ही इस बात पर विचार करने लगे कि राजा को देने लायक उपहार क्या हो सकता है? कुछ देर सोचने के बाद हिमशुक के पिता ने कहा, "अहा, मैं समझ गया कि राजा के लिए सबसे अच्छा उपहार क्या हो सकता है। यहीं से दूर एक पहाड़ी पर अमरफल का पेड़ है। जो कोई उसका फल खा लेता है वह कभी नहीं मरता और हमेशा जवान रहता है। मैं वहाँ जाकर एक फल तोड़ लाता हूँ। तुम वह फल राजा को दे देना।"

फल मिलते ही हिमशुक राजा के महल की ओर रवाना हुआ। शाम हो चली थी। थोड़ी ही देर में सूरज डूब गया और चारों ओर रात का घना अंधकार छा गया। हिमशुक ने किसी पेड़ की डाल पर बैठकर रात काटने का इरादा किया। मगर इससे पहले वह उस कीमती फल को किसी सुरक्षित स्थान में रखना

© RMSA PBP WEBCOPY NOT TO BE PUBLISHED



चाहता था। किस्मत से उसे एक ऐसा पेड़ मिल गया जिसके तने में एक खोखला छेद था। उसने उस छेद में अमरफल रख दिया और पास ही एक डाल पर बैठ सुस्ताने लगा। थोड़ी ही देर में उसे नींद आ गई।

पेड़ का वह खोखला छेद एक जहरीले साँप का घर था। जब साँप लौटकर आया तो उसकी नजर चमकते हुए अमरफल पर पड़ी। उसने सोचा वह शायद कोई खाने की चीज है। साँप ने फल पर दाँत गड़ा दिए। मगर उसे फल का स्वाद अच्छा नहीं लगा। उसने उसे वैसा ही छोड़ दिया। लेकिन जिस समय साँप ने फल पर दाँत गड़ाए, उस समय उसके दाँतों से कुछ जहर भी निकल आया। जहर से फल भी जहरीला हो गया।

दूसरे दिन सवेरे हिमशुक ने फल उठाया और अपनी थाली पर उड़ चला। राजमहल पहुँचकर उसने राजा से मुलाकात की और अपने माँ-बाप की ओर से अमरफल भेंट किया।

उस जादुई फल को पाकर राजा इतना खुश हुआ कि उसने फल खाने से पहले एक दरबार करने का निश्चय किया। दरबार में उसके मंत्री और राजपरिवार के सभी सदस्य उपस्थित थे। राजा ने सबके सामने फल उठाया, पर जैसे ही खाने के लिए तैयार हुआ कि मुख्यमंत्री ने टोक दिया।

"महाराज, जरा ठहरिए", मुख्यमंत्री ने कहा, "बुद्धिमानी की बात यह होगी कि फल खाने से पहले इसे किसी जानवर को खिलाकर देख लिया जाए। यदि जानवर को कुछ न हो तो आप भी इसे खा सकते हैं।"

"सुझाव बहुत अच्छा है," राजा ने कहा। उसने फल काटा और एक छोटा सा टुकड़ा एक कौए की ओर फेंक दिया।

कौए ने फल खाया और खाते ही मर गया।

"महाराज," मंत्री ने कहा, "आज आप बाल-बाल बचे हैं। फल जहरीला है। यह अमरफल नहीं मृत्युफल है। इससे यह भी जाहिर है कि फल खिलाकर हिमशुक आपको मारना चाहता था।"

राजा गुस्से के मारे आगबबूला हो गया। उसने लपककर हिमशुक को पकड़ा और बिना

© RSTBCC WEBCOPY NOT TO BE PUBLISHED

सोचे-समझे उसकी गरदन उड़ा दी। इसके बाद उसने हुक्म दिया कि उस जहरीले फल को नगर के बाहर एक गहरे गड्ढे में दबा दिया जाए।

फल ज़मीन में दफ़ना दिया गया। मगर कुछ ही समय बाद उसका बीज अंकुरित होकर बढ़ने लगा और बढ़ते-बढ़ते पूरा पेड़ बन गया। कुछ समय बाद उस पेड़ में बड़े ही सुंदर, चमकीले, सुनहरे फल लग गए।

जब राजा ने उस विचित्र पेड़ के बारे में सुना तो कहा, "वे फल जहरीले हैं, मौत के फल हैं।"

राजा ने हुक्म दिया कि उस पेड़ के चारों ओर एक बाड़ बना दी जाए और हर समय पेड़ की रखवाली की जाए ताकि कोई भी उन जहरीले फलों को न खा सके। मृत्युफल की खबर सारे शहर में फैल गई। जनता को उस पेड़ के पास फटकने में भी डर लगने लगा।

उन्हीं दिनों उस शहर में एक बूढ़ा और उसकी बुढ़िया रहते थे। वे बहुत गरीब थे। उनका कोई मददगार भी नहीं था। वे किसी तरह दूसरों की मेहरबानी पर गुजर कर रहे थे। बुढ़ापे के मारे वे इतने कमजोर और असहाय हो गए थे कि भीख माँगने भी नहीं जा सकते थे। अकसर फाके करते रहने से उन्हें ऐसा महसूस होने लगा कि अब जीना बेकार है। दोनों ने सोचा कि ऐसी जिन्दगी के बजाय मर जाना कहीं अच्छा है। मरने के लिए सबसे अच्छा यही था कि पेड़ के जहरीले फल खा लिए जाएँ।

एक रात बूढ़ा चुपके से पेड़ के पास गया और पहरेदार की नजर बचाकर बाड़े के अंदर घुस गया। उसने पेड़ से दो फल तोड़े और उन्हें लेकर सीधे घर पहुँचा। घर पहुँचकर उसने और उसकी बुढ़िया दोनों ने एक-एक फल खा लिया। इसके बाद वे तुरंत मरने की आशा से बिस्तर पर लेट गए।



लेकिन दूसरे दिन सवेरे रोज की तरह उनकी आँखें फिर खुल गईं। अपने आपको जिंदा पाकर उन्हें बड़ा ताज्जुब हुआ। इससे भी बड़ा ताज्जुब तो यह था कि वे दोनों जवान हो गए थे। उनकी पहले की चुस्ती और ताकत भी लौट आई थी।

राजा ने यह अनोखी बात सुनी तो वह भी उन दोनों को देखने गया। उन्हें सचमुच ही जवान देखकर वह दंग रह गया। अब जाकर उसकी समझ में आया कि हिमशुक जो फल लाया था वह असली अमरफल था। उसे अपनी जल्दबाजी पर, अपने

© RSBBEC (NOT TO BE PUBLISHED) WEBCOPY (NOT TO BE PUBLISHED)

बबलू ने ही यह लीड फेंकी होगी; झाड़ू लगाते समय उसे खाट के नीचे मिली थी। अभी पूरी तरह खत्म भी नहीं हुई कि फेंक दी! ऐसी ही फिजूल-खर्चियों पर पप्पा नाराज होते हैं।

खैर, जाने दो, अपना तो काम ही बना। कागज और लिफाफा पप्पा के झोले से निकाल ही चुकी हूँ; उनको पता नहीं चला, नहीं तो जरूर पूछते।

अब जल्दी लिख लेना है मुझे। देर करूँगी तो फिर मौका नहीं मिलेगा। अभी माँ की आँख लगी है; कुछ देर तो नहीं ही जगेगी। छोटकी भी माँ का दूध चूसते-चूसते सो गई है। वह अगर जाग गयी तो आफत है; उसे लादे फिरना होगा।

क्या लिखूँ? कैसे शुरू किया जाता है?... अच्छा लिख देती हूँ... प्यारे प्रधान... ऊँह! यह प्यारे-व्यारे क्या लिखना! वह कोई बच्चे थोड़े ही हैं जो! तब ...?

परम प; प में कौन-सा उ लगेगा? बड़ा या छोटा? माँ को जगाकर पूछूँ? उहँ, उसे भी आना होगा? और वह जग गयी तो लिखना ही नहीं होगा। लिख देती हूँ कुछ भी।

लेकिन गलत हुआ तो बात बिगड़ सकती है। जिस लड़की को सही लिखना तक नहीं आता, उसकी बात कौन सुनेगा? लेकिन... लेकिन क्यों नहीं सुनी जाएगी मेरी बात? हिज्जे गलत हों, पर बात तो सही है! जो हो, लिख देती हूँ सीधे-सीधी।

जय माता रानी! जय गणेश जी! और पड़ोस वाली दीना बात-बात पर किन्हें याद करती है?... हाँ... या रब्बा!... मुझे आज यह चिट्ठी लिखना दो, लिखना हो जो, भगवान! मेरी कोई मदद करने वाला नहीं है। कोई नहीं।

उसकी आँखें भर आयीं, लेकिन वह रोकर समय बरबाद नहीं करना चाहती थी। इसलिए जैसे-तैसे लिखने ही लगी।

प्रधानमंत्री जी,

प्रणाम।

मैंने सुना है, बंधुआ मजदूरों को उनके मालिक से छुड़ाया जा रहा है। मुझे भी छुड़ा दीजिए न! मेरी पढ़ाई नहीं हो सकी है। पप्पा कहते हैं, बाद में देखा जाएगा, बाद में, यानी कभी नहीं। बारह की तो हो गई। मेरे तीनों भाई स्कूल जाते हैं। सब मुझ से छोटे हैं। बबलू जो मुझ से साल भर ही छोटा है, अपने जूठे बर्तन तक नहीं धोता। गुड्डू नौ साल का है। वह तो बबलू से भी ज्यादा कामचोर है। मुन्नू सात साल का है; वह बेचारा अक्सर बीमार ही रहा करता है। रीता पाँच साल की है, मीता तीन की और छोटकी साल भर की; वह भी भात खाने लगी है।

मैं दिन भर घर के कामों में लगी रहती हूँ। पप्पा कहते हैं, मैं माँ से भी अच्छी रोटियाँ बनाने लगी हूँ। लेकिन माँ की तरह सब्ज़ी नहीं बना पाती सो रोज़ डाँट सुनती हूँ।

© NCERT NOT TO BE PUBLISHED WEBCOPY

माँ कहती है, में बनाना नहीं चाहती सो बिगाड़ देती हूँ। लेकिन क्या करूँ, मुझसे हो ही नहीं पाता। सारे बर्तन मुझे ही माँजने पड़ते हैं। मुन्नू, रीता, मीता और अब छोटकी सब को मैं ही टाँगती रही हूँ। सबके कपड़े भी मुझे ही धोने पड़ते हैं। एक काम से दूसरे काम के बीच मुझे सुस्ताने का भी समय नहीं मिलता, फिर भी सब कहते हैं- गुड्डी धीमर है।

परसाल के पहले वाले साल, मामा जी की जिद पर मेरा नाम स्कूल में लिखवाया गया था, एक महीने ही तो जा पायी। उसी समय छोटकी हो गई सो माँ अकेले घर नहीं चला पायी, मुझे स्कूल छोड़ देना पड़ा। मैंने माँ से कहा था, मुझे भी पढ़ने दो, पप्पा ने सुना तो बोले कि जैसे घर ही में ककहरा सीखा है, वैसे ही आगे भी कुछ पढ़ ले। लेकिन घर में मुझे कौन पढ़ायेगा। और कब? मैं अपनी मर्जी से स्कूल जा नहीं सकती, किसी से कुछ कह नहीं सकती। क्या यह सच है कि बंधुआ मजदूरों को छुड़ा दिया गया है? तो मुझे भी छुड़वा दीजिए न!

आपकी बेटी (गीता) गुड्डी

हाय! पप्पा तो आ गए।

गुड्डी ने झट से चिट्ठी मोड़ कर छिपा ली। लीदु को फिर खाट के नीचे ही फेंक दिया और दौड़ पड़ी। जल्दी दरवाजा नहीं खुला तो पप्पा बिगड़ने लगते हैं।

"माँ कहाँ है?"

"सोयी है, बरामदे में।" वह हकलाकर बोली, जैसे चोरी करते पकड़ी गई हो।

"जा, चाय बना ला।"

बनवा लो चाय, बनवा लो! जितने दिन प्रधानमंत्री जी मुझे नहीं छुड़वा देते, उतने दिन खटवा लो। बस, अब सबकी आँख बचाकर पता लिख लेना है। और टिकट? टिकट कहाँ से लाऊँ? बिना टिकट के ही भेज देती हूँ। वे तो समझ ही जाएँगे। मेरे लिफाफे को खोलने के पहले ही मेरी हालत भाँप जाएँगे।

माँ-बाप के लिए चाय बनाकर ले जाते हुए उसके पैरों में फुर्ती-सी आ गयी और मन आनन्द से भर गया। उसे लगने लगा जैसे उसकी मुक्ति की घोषणा में अधिक दिन बाकी नहीं है।

-सुधा

शब्दार्थ

बिगाड़- ख़राब **धीमर**-सुस्त **गोपनीय**-छिपाने योग्य **मुक्ति**-छुटकारा

प्रश्न-अभ्यास

© BSTBPC WEBCOPY NOT TO BE PUBLISHED

पाठ से

1. गुड्डी अपनी तुलना बंधुआ मजदूर से क्यों करती है?
2. माँ-बाप के लिए चाय बनाकर लाते समय उसके पैरों में फुर्ती आ गयी- क्यों?

३. पढ़िए एवं सोचकर उत्तर दीजिए-

(i) "लेकिन क्यों नहीं सुनी जाएगी मेरी बात। हिज्जे गलत हों, पर बात तो सही है।"

(क) ऐसा गुड्डी ने क्यों सोचा?

(ख) यह वाक्य गुड्डी के व्यक्तित्व की किन विशेषताओं को दर्शाता है?

(ii) "टिकट कहाँ से लाऊँ? बिना टिकट के ही भेज देती हूँ। वे तो समझ ही जाएँगे।"

(क) गुड्डी ने ऐसा क्यों सोचा?

(ख) यह वाक्य गुड्डी के किस पक्ष को दर्शाता है?

4. पठित पाठ के आधार पर आपके मस्तिष्क में जो दृश्य उत्पन्न होता है, उसे अपने शब्दों में लिखिए।

पाठ से आगे

1. इस कहानी का शीर्षक 'जन्म-बाधा' है। आपकी दृष्टि में ऐसा शीर्षक क्यों दिया गया है?
2. किन-किन बातों से पता चलता है कि गुड्डी अपनी मुक्ति के लिए दृढ़संकल्प थी?
3. अपनी मुक्ति के लिए गुड्डी प्रधानमंत्री को चिट्ठी लिखती है। इससे इसके माता-पिता परेशानी में पड़ सकते हैं। गुड्डी के इस व्यवहार पर तर्क सहित विचार कीजिए।

गतिविधि

1. उन कारणों का पता लगाइए जो छोटी-छोटी लड़कियों पर बड़ी जिम्मेदारियाँ लादने के लिए जिम्मेदार हैं।
2. **निम्नलिखित कार्य कौन करता है**

(क) गुड़ियों से खेलना।

(ख) सिलाई-बुनाई का कार्य करना।

(ग) झाड़ू-बर्तन, चूल्हा-चौका का काम घर में करना।

(घ) घर में अपने छोटे भाई-बहनों को संभालना।

सोचिए क्या यह सही है?

3. प्रतिदिन किए गए कार्यों की सूची बनाइए, फिर अगले दिन उस सूची में कुछ नया जोड़िए।

© BSEBSOL WEBCOPY, NOT TO BE PUBLISHED

13 शक्ति और क्षमा

क्षमा, दया, तप, त्याग, मनोबल
सबका लिया सहारा,
पर नर-व्याघ्र, सुयोधन तुमसे
कहो कहाँ, कब हारा?
क्षमाशील हो रिपु समक्ष
तुम हुए विनत जितना ही,
दुष्ट कौरवों ने तुमको
कायर समझा उतना ही।
क्षमा शोभती उस भुजंग को
जिसके पास गरल हो,
उसको क्या, जो दंतहीन,
विषहीन, विनीत, सरल हो।
तीन दिवस तक पंथ माँगते
रघुपति सिन्धु किनारे,
बैठे पढ़ते रहे छंद
अनुनय के प्यारे-प्यारे।





उत्तर में जब एक नाद भी
उठा नहीं सागर से;
उठी अधीर धधक पौरुष की
आग राम के शर से।
सिन्धु देह धर 'त्राहि-त्राहि'
करता आ गिरा शरण में,
चरण पूज, दासता ग्रहण की
बँधा मूढ़ बंधन में।

© BSTBPC WEBCOPY, NOT TO BE PUBLISHED

सच पूछो, तो शर में ही
वसती है दीप्ति विनय की,
संधि-वचन संपूज्य उसी का
जिसमें शक्ति विजय की।
सहनशीलता, क्षमा, दया को
तभी पूजता जग है,
बल का दर्प चमकता उसके
पीछे जब जगमग है।

-रामधारी सिंह 'दिनकर'

शब्दार्थ

रिपु- शत्रु, दुश्मन
पौरुष-पुरुष का कर्म
गरल- विष, जहर
नाद-आवाज़, शब्द
अनुनय-प्रार्थना, विनय
भुजंग- साँप
दर्प- रोष, अभिमान
विनत-विनीत, नम्र, झुका हुआ
शर-बाण, तीर, बरछी
विनीत-नम्र

© SCERT BPC
WEBCOPY, NOT TO BE PUBLISHED

प्रश्न-अभ्यास

पाठ से

1. इस कविता के माध्यम से हमें क्या सीख मिलती है?
2. वे कौन-सी परिस्थितियाँ थीं जिन्होंने राम को धनुष उठाने पर बाध्य किया?

3. **निम्नलिखित पंक्तियों का अर्थ स्पष्ट कीजिए-**

क्षमा शोभती उस भुजंग को
जिसके पास गरल हो।
उसको क्या, जो दंतहीन,
विषहीन, विनीत, सरल हो।

पाठ से आगे

1. दिनकर के इस भाव से आप कहाँ तक सहमत है कि समाज शक्तिशाली की ही पूजा करता है? अभावहीन, निर्बल व्यक्ति को समाज में कोई नहीं पूछता। इन पर आप अपना विचार स्पष्ट कीजिए।
2. सुयोधन को नर-व्याघ्र क्यों कहा गया है?

व्याकरण

1. **निम्नलिखित शब्दों के पर्यायवाची शब्द लिखिए-**

भुजंग
रघुपति
सिंधु
शर
कायर
लिप्त

© BSTBBPC WEBCOPY, NOT TO BE PUBLISHED

गतिविधि

1. दिनकर के जीवन से संबंधित कुछ जानकारियाँ इकट्ठी कीजिए तथा उनके जन्म दिन पर अपने स्कूल में जयन्ति मनाइए।
2. दिनकर की अन्य रचनाओं का संकलन कर कक्षा में सुनाइए।
3. इस कविता को सुंदर हस्तलेख तथा बड़े अक्षरों में लिखकर कक्षा में प्रदर्शित कीजिए।

14 हिमशुक

बहुत समय पहले अवध में एक राजा राज्य करता था। उसके तीन लड़के थे। तीनों बहुत पढ़े-लिखे, बुद्धिमान और गुणी थे।

एक दिन राजा ने अपने तीनों राजकुमारों को परीक्षा लेने के लिए बुलाया। वह जानना चाहता था कि किसी दोषी को सज़ा देने के मामले में उन तीनों के क्या विचार हैं।

"मान लो," उसने कहा, " अगर मैं अपने जीवन और सम्मान की रक्षा की जिम्मेदारी किसी को सौंप दूँ और वह विश्वासघाती निकले तो उसे क्या सज़ा दी जानी चाहिए?"

सबसे बड़े लड़के ने कहा, "ऐसे आदमी की गरदन फौरन धड़ से अलग कर देनी चाहिए।"

दूसरे लड़के ने कहा, "मेरा भी यही विचार है। ऐसे आदमी को मृत्युदंड ही मिलना चाहिए। उसके साथ किसी तरह की दया नहीं दिखाई जानी चाहिए।"

तीसरा लड़का चुप बैठा रहा।

"क्या बात है, मेरे बेटे?" राजा ने उससे पूछा, "तुम कुछ नहीं बोले, तुम्हारा क्या विचार है?"

"महाराज," छोटे राजकुमार ने कहा, "यह सच है कि ऐसे कुसूर की सज़ा मौत के सिवा और कुछ नहीं हो सकती। लेकिन सज़ा देने से पहले यह बात साफ-साफ और पूरी तरह से साबित हो जानी चाहिए कि वह सचमुच ही दोषी है।"

"मानो, तुम्हारे विचार से ऐसा न किया गया तो निर्दोष आदमी भी मारा जा सकता है।" राजा ने पूछा।

"हाँ," राजकुमार ने जवाब दिया, "ऐसा हो सकता है। उदाहरण के लिए मैं आपको एक कहानी सुनाता हूँ।"

ऐसा कहकर राजकुमार ने यह कहानी सुनाई।

विदर्भ देश के राजा के पास एक अनोखा तोता था। उस तोते का नाम हिमशुक था। वह महल में पालतू पक्षी की तरह रहता था। हिमशुक बड़ा चतुर था। वह कई भाषाओं में बात कर सकता था। बुद्धिमान इतना था कि अक्सर राजा भी महत्त्वपूर्ण मामलों में उसकी राय लिया करता था।

हिमशुक पिंजरे में नहीं रहता था। वह अपनी इच्छा के अनुसार आज़ादी से घूमता रहता था। एक

© BSTBPC WEBCOPY, NOT TO BE PUBLISHED

दिन सवेरे वह महल से उड़कर जंगल की ओर निकल गया। वहाँ संयोग से उसकी भेंट अपने पिता से हो गई।

"तुमसे मिलकर मैं कितना प्रसन्न हुआ हूँ," उसके पिता ने कहा, " तुम्हारी माँ भी तुमसे मिलकर इतना ही प्रसन्न होगी। क्या तुम दो-चार दिन के लिए घर नहीं आ सकते?"

"घर आने की तो मुझे भी बड़ी इच्छा थी," हिमशुक ने कहा, "मगर इसके लिए मुझे राजा से अनुमति लेनी पड़ेगी।"

महल वापस जाकर हिमशुक ने राजा से घर जाने की आज्ञा माँगी। शुरू में तो राजा उसे जाने देने के लिए राजी नहीं हुआ। वह हिमशुक को बहुत मानता था और अपने से अलग नहीं करना चाहता था। पर अंत में वह मान गया। उसने हिमशुक को घर जाने की अनुमति दे ही दी।

" तुम घर जाकर अपने माँ-बाप के साथ कुछ दिन बिता सकते हो," राजा ने हिमशुक से कहा, "लेकिन जितनी जल्दी हो सके लौट आना।"

"बहुत अच्छा महाराज," हिमशुक ने कहा, "मैं पंद्रह दिन बाद वापस आ जाऊँगा।" इसके बाद हिमशुक अपने पिता के पास गया और वे दोनों, साथ-साथ उड़ते हुए, घर की ओर रवाना हुए। इतने वर्ष बाद अपने प्यारे बेटे हिमशुक को देखकर उसकी माँ बहुत खुश हुई।

एक पखवाड़े तक अपने माँ-बाप के साथ रहने के बाद हिमशुक ने उनसे कहा, "मेरे ये दिन अपने प्रियजनों के साथ बड़े ही सुख से बीते हैं, मगर अब मुझे जाना होगा। राजा मेरी राह देख रहे होंगे।"

हिमशुक के माँ-बाप लड़के इतनी जल्दी जाने की बात सुनकर उदास हो गए। परंतु वे उसे रोक नहीं सके। हिमशुक ने राजा से वादा किया था कि वह पंद्रह दिन के बाद लौट आएगा।

"हम राजा के लिए कोई उपहार भिजवाना चाहते हैं," हिमशुक के पिता ने कहा, "लेकिन समझ में नहीं आता कि कौन-सी चीज भिजवाएँ।"

हिमशुक के माता और पिता दोनों ही इस बात पर विचार करने लगे कि राजा को देने लायक उपहार क्या हो सकता है? कुछ देर सोचने के बाद हिमशुक के पिता ने कहा, "अहा, मैं समझ गया कि राजा के लिए सबसे अच्छा उपहार क्या हो सकता है। यहीं से दूर एक पहाड़ी पर अमरफल का पेड़ है। जो कोई उसका फल खा लेता है वह कभी नहीं मरता और हमेशा जवान रहता है। मैं वहाँ जाकर एक फल तोड़ लाता हूँ। तुम वह फल राजा को दे देना।"

फल मिलते ही हिमशुक राजा के महल की ओर रवाना हुआ। शाम हो चली थी। थोड़ी ही देर में सूरज डूब गया और चारों ओर रात का घना अंधकार छा गया। हिमशुक ने किसी पेड़ की डाल पर बैठकर रात काटने का इरादा किया। मगर इससे पहले वह उस कीमती फल को किसी सुरक्षित स्थान में रखना

© RMSA PBP WEBCOPY NOT TO BE PUBLISHED



चाहता था। किस्मत से उसे एक ऐसा पेड़ मिल गया जिसके तने में एक खोखला छेद था। उसने उस छेद में अमरफल रख दिया और पास ही एक डाल पर बैठ सुस्ताने लगा। थोड़ी ही देर में उसे नींद आ गई।

पेड़ का वह खोखला छेद एक जहरीले साँप का घर था। जब साँप लौटकर आया तो उसकी नजर चमकते हुए अमरफल पर पड़ी। उसने सोचा वह शायद कोई खाने की चीज है। साँप ने फल पर दाँत गड़ा दिए। मगर उसे फल का स्वाद अच्छा नहीं लगा। उसने उसे वैसा ही छोड़ दिया। लेकिन जिस समय साँप ने फल पर दाँत गड़ाए, उस समय उसके दाँतों से कुछ जहर भी निकल आया। जहर से फल भी जहरीला हो गया।

दूसरे दिन सवेरे हिमशुक ने फल उठाया और अपनी थाली पर उड़ चला। राजमहल पहुँचकर उसने राजा से मुलाकात की और अपने माँ-बाप की ओर से अमरफल भेंट किया।

उस जादुई फल को पाकर राजा इतना खुश हुआ कि उसने फल खाने से पहले एक दरबार करने का निश्चय किया। दरबार में उसके मंत्री और राजपरिवार के सभी सदस्य उपस्थित थे। राजा ने सबके सामने फल उठाया, पर जैसे ही खाने के लिए तैयार हुआ कि मुख्यमंत्री ने टोक दिया।

"महाराज, जरा ठहरिए", मुख्यमंत्री ने कहा, "बुद्धिमानी की बात यह होगी कि फल खाने से पहले इसे किसी जानवर को खिलाकर देख लिया जाए। यदि जानवर को कुछ न हो तो आप भी इसे खा सकते हैं।"

"सुझाव बहुत अच्छा है," राजा ने कहा। उसने फल काटा और एक छोटा सा टुकड़ा एक कौए की ओर फेंक दिया।

कौए ने फल खाया और खाते ही मर गया।

"महाराज," मंत्री ने कहा, "आज आप बाल-बाल बचे हैं। फल जहरीला है। यह अमरफल नहीं मृत्युफल है। इससे यह भी जाहिर है कि फल खिलाकर हिमशुक आपको मारना चाहता था।"

राजा गुस्से के मारे आगबबूला हो गया। उसने लपककर हिमशुक को पकड़ा और बिना

© RSTBCC WEBCOPY NOT TO BE PUBLISHED

सोचे-समझे उसकी गरदन उड़ा दी। इसके बाद उसने हुक्म दिया कि उस जहरीले फल को नगर के बाहर एक गहरे गड्ढे में दबा दिया जाए।

फल ज़मीन में दफ़ना दिया गया। मगर कुछ ही समय बाद उसका बीज अंकुरित होकर बढ़ने लगा और बढ़ते-बढ़ते पूरा पेड़ बन गया। कुछ समय बाद उस पेड़ में बड़े ही सुंदर, चमकीले, सुनहरे फल लग गए।

जब राजा ने उस विचित्र पेड़ के बारे में सुना तो कहा, "वे फल जहरीले हैं, मौत के फल हैं।"

राजा ने हुक्म दिया कि उस पेड़ के चारों ओर एक बाड़ बना दी जाए और हर समय पेड़ की रखवाली की जाए ताकि कोई भी उन जहरीले फलों को न खा सके। मृत्युफल की खबर सारे शहर में फैल गई। जनता को उस पेड़ के पास फटकने में भी डर लगने लगा।

उन्हीं दिनों उस शहर में एक बूढ़ा और उसकी बुढ़िया रहते थे। वे बहुत गरीब थे। उनका कोई मददगार भी नहीं था। वे किसी तरह दूसरों की मेहरबानी पर गुजर कर रहे थे। बुढ़ापे के मारे वे इतने कमजोर और असहाय हो गए थे कि भीख माँगने भी नहीं जा सकते थे। अकसर फाके करते रहने से उन्हें ऐसा महसूस होने लगा कि अब जीना बेकार है। दोनों ने सोचा कि ऐसी जिन्दगी के बजाय मर जाना कहीं अच्छा है। मरने के लिए सबसे अच्छा यही था कि पेड़ के जहरीले फल खा लिए जाएँ।

एक रात बूढ़ा चुपके से पेड़ के पास गया और पहरेदार की नजर बचाकर बाड़े के अंदर घुस गया। उसने पेड़ से दो फल तोड़े और उन्हें लेकर सीधे घर पहुँचा। घर पहुँचकर उसने और उसकी बुढ़िया दोनों ने एक-एक फल खा लिया। इसके बाद वे तुरंत मरने की आशा से बिस्तर पर लेट गए।



लेकिन दूसरे दिन सवेरे रोज की तरह उनकी आँखें फिर खुल गईं। अपने आपको जिंदा पाकर उन्हें बड़ा ताज्जुब हुआ। इससे भी बड़ा ताज्जुब तो यह था कि वे दोनों जवान हो गए थे। उनकी पहले की चुस्ती और ताकत भी लौट आई थी।

राजा ने यह अनोखी बात सुनी तो वह भी उन दोनों को देखने गया। उन्हें सचमुच ही जवान देखकर वह दंग रह गया। अब जाकर उसकी समझ में आया कि हिमशुक जो फल लाया था वह असली अमरफल था। उसे अपनी जल्दबाजी पर, अपने

© RSBBEC (NOT TO BE PUBLISHED) WEBCOPY (NOT TO BE PUBLISHED)

छिपाए रहता है।) अब उठकर सवाल शुरू कीजिए। उठिए, खाना मिलेगा।

(मोहन उठता है। माँ ठगी-सी देखती है। दूसरी ओर से पिता और दीनानाथ दवा लेकर प्रवेश करते हैं।)

माँ : क्यों रे मोहन, तेरे पेट में तो बहुत बड़ी दाढ़ी है। हमारी तो जान निकल गई। पंद्रह-बीस रुपए खर्च हुए, सो अलग। (पिता से) देखा जी आपने।

पिता : (चकित होकर) क्या-क्या हुआ?

माँ : क्या-क्या होता! यह 'ऐसे-ऐसे' पेट का दर्द नहीं है, स्कूल का काम न करने का डर है।

पिता : हें!

(दवा की शीशी हाथ से छूटकर फर्श पर गिर पड़ती है। एक क्षण सब ठगे-से मोहन को देखते हैं। फिर हँस पड़ते हैं।)

दीनानाथ: वाह, मोहन, वाह!

पिता : वाह, बेटा, वाह! तुमने तो खूब छकाया!

(एक अट्टहास के बाद परदा गिर जाता है।)

– विष्णु प्रभाकर

शब्दार्थ

एकाएक-अचानक **प्रकोप**-अत्यधिक क्रोध **गंभीर**-गहरा, जटिल, चिंताजनक
बदहजमी-अनपच **अट्टहास**-जोर की हँसी, ठहाका

© BSTBPC WEBCOPY, NOT TO BE PUBLISHED

प्रश्न-अभ्यास

पाठ से

1. माँ मोहन के 'ऐसे-ऐसे' कहने पर क्यों घबरा रही थी?
2. ऐसे कौन-कौन से बहाने होते हैं जिन्हें मास्टर जी एक ही बार में सुनकर समझ जाते हैं? ऐसे कुछ बहानों के बारे में लिखें।

पाठ से आगे

1. स्कूल के काम से बचने के लिए मोहन ने कई बार पेट में 'ऐसे-ऐसे' होने के बहाने बनाया। मान लो, एक बार उसे सचमुच पेट में दर्द हो जाए और उसकी बातों पर लोगों ने विश्वास नहीं किया, तब मोहन पर क्या बितेगी?
2. पाठ में आए वाक्य-'लोचा-लोचा फिरे है' के बदले 'ढीला-ढाला हो गया है या बहुत कमज़ोर हो गया है'- लिखा जा सकता है। लेकिन, लेखक ने संवाद में विशेषता लाने के लिए बोलियों के रंग-ढंग का उपयोग किया है। इस पाठ में इस तरह की अन्य पंक्तियाँ भी हैं, जैसे-

   -इत्ती नयी-नयी बीमारियाँ निकली हैं,

   -राम मारी बीमारियों ने तंग कर दिया,

   -तेरे पेट में तो बहुत बड़ी दाढ़ी है।

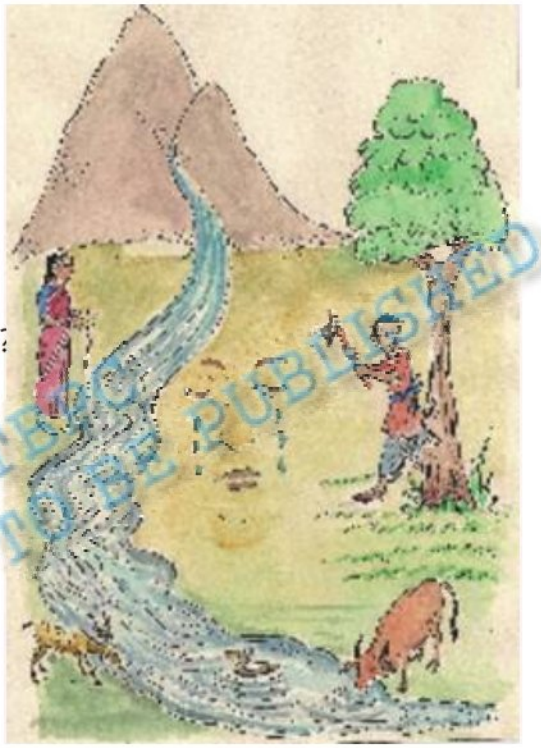
   अनुमान लगाइए, इन पंक्तियों को दूसरे ढंग से कैसे लिखा जा सकता है?
3. मान लीजिए कि आप मोहन की तबीयत पूछने जाते हैं। आप अपने और मोहन के बीच की बातचीत को संवाद के रूप में लिखिए।
4. अगर मोहन शिक्षक के सवाल का जवाब 'हाँ' में देता तो इस एकांकी का अन्त क्या होता?

गतिविधि

1. संकट के समय के लिए कौन-कौन से नंबर याद रखे जाने चाहिए? ऐसे वक्त में पुलिस, फायर ब्रिगेड और डॉक्टर से आप कैसे बात करेंगे? कक्षा में करके बताइए।

© BSTBPC WEBCOPY NOT TO BE PUBLISHED

16 बूढ़ी पृथ्वी का दुख



क्या तुमने कभी सुना है
सपनों में चमकती कुल्हाड़ियों के भय से
पेड़ों की चीत्कार?

कुल्हाड़ियों के वार सहते
किसी पेड़ की हिलती टहनियों में
दिखाई पड़े हैं तुम्हें
बचाव के लिए पुकारते हजारों-हजार हाथ?

क्या होती है, तुम्हारे भीतर धमस
कटकर गिरता है जब कोई पेड़ धरती पर?

सुना है कभी
रात के सन्नाटे में अँधेरे से मुँह ढाँप
किस कदर रोती हैं नदियाँ?

इस घाट अपने कपड़े और मवेशियाँ धोते
सोचा है कभी कि उस घाट
पी रहा होगा कोई प्यासा पानी
या कोई स्त्री चढ़ा रही होगी किसी देवता को अर्घ्य?

कभी महसूस किया कि किस कदर दहलता है
मौन समाधि लिये बैठा पहाड़ का सीना
विस्फोट से टूटकर जब छिटकता दूर तक कोई पत्थर?
सुनाई पड़ी है कभी भरी दुपहरिया में
हथौड़ों की चोट से टूटकर बिखरते पत्थरों की चीख?

© BSTBPC WEBCOPY, NOT TO BE PUBLISHED

खून की उल्टियाँ करते
देखा है कभी हवा को, अपने घर के पिछवाड़े?

थोड़ा-सा वक्त चुराकर बतियाया है कभी
कभी शिकायत न करनेवाली
गुमसुम बूढ़ी पृथ्वी से उसका दुख?

अगर नहीं, तो क्षमा करना!
मुझे तुम्हारे आदमी होने पर सन्देह है!!

-निर्मला पुतुल

शब्दार्थ

महसूस- अनुभव **चीत्कार**-चीख-पुकार, चिल्लाहट **वार**-प्रहार **धमस**-थकान समाधि-तपस्या

प्रश्न-अभ्यास

पाठ से

1. निम्नलिखित पंक्तियों के अर्थ स्पष्ट कीजिए-

(क) इस घाट अपने कपड़े और मनोग्रंथियाँ धोते
सोचा है कभी कि उस घाट
पी रहा होगा कोई प्यासा पानी
या कोई स्त्री चढ़ा रही होगी। किसी देवता को अर्घ्य?

(ख) अगर नहीं तो क्षमा करना!
मुझे तुम्हारे आदमी होने पर संदेह है!!

2. नदियों के रोने से क्या तात्पर्य है?

पाठ से आगे

1. पृथ्वी को बूढ़ी क्यों कहा गया है?
2. पेड़ का कटकर गिरना एवं पेड़ का टूटकर गिरना में क्या अंतर है?
3. पृथ्वी को प्रदूषण से बचाने हेतु आप क्या कर सकते हैं?

WEBCOPY. NOT TO BE PUBLISHED BSTBPC

17 सोना

सोना की आज अचानक स्मृति हो आने का कारण है। मेरे परिचित स्वर्गीय डॉ० धीरेन्द्रनाथ वसु की पौत्री सुस्मिता ने लिखा है, ''गत वर्ष अपने पड़ोसी से मुझे एक हिरन मिला था। बीते कुछ महीनों में हम उससे बहुत स्नेह करने लगे हैं, परंतु अब मैं अनुभव करती हूँ कि सघन जंगल से संबद्ध रहने के कारण तथा अब बड़े हो जाने के कारण उसे घूमने के लिए अधिक विस्तृत स्थान चाहिए। क्या कृपा करके आप उसे स्वीकार करेंगी? सचमुच मैं आपकी बहुत आभारी रहूँगी, क्योंकि आप जानती हैं, मैं उसे ऐसे व्यक्ति को नहीं देना चाहती, जो उससे बुरा व्यवहार करे। मेरा विश्वास है, आपके यहाँ उसकी भली-भाँति देखभाल हो सकेगी।''

कई वर्ष पूर्व मैंने निश्चय किया था कि अब हिरन नहीं पालूँगी, परंतु आज उस नियम को भंग किए बिना इस कोमल प्राण जीव की रक्षा संभव नहीं है।

सोना भी इसी प्रकार अचानक आई थी, परंतु वह तब तक अपनी शैशवावस्था भी पार नहीं कर सकी थी। सुनहरे रंग के रेशमी लच्छों की गाँठ के समान उसका कोमल लघु शरीर था। छोटा-सा मुँह और बड़ी-बड़ी पानीदार आँखें। देखती थीं, तो लगता था कि अभी छलक पड़ेंगी। लंबे कान, पतली सुडौल टाँगें, जिन्हें देखते ही उसमें प्रसूता गति की बिजली की लहर देखने वालों की आँखों में कौंध जाती थी। सब उसके सरल शिशु रूप से इतने प्रभावित हुए कि किसी चंपकवर्णा रूपसी के उपयुक्त सोना, सुवर्णा, स्वर्णलेखा आदि नाम उसका परिचय बन गए।



मनुष्य मृत्यु को असुंदर ही नहीं, अपवित्र भी मानता है। उसके प्रियतम आत्मीय जन का शव भी उसके निकट अपवित्र, अस्पृश्य तथा भयजनक हो उठता है। जब मृत्यु इतनी अपवित्र और असुंदर है, तब उसे बाँटते घूमना क्यों अपवित्र और असुंदर कार्य नहीं है, यह मैं समझ नहीं पाती।

आकाश में रंग-बिरंगे फूलों की छटाओं के समान उड़ते हुए और वीणा, वंशी मुरज, जलतरंग आदि का वृंदवादन बजाते हुए पक्षी कितने सुंदर जान पड़ते हैं। मनुष्य ने बंदूक उठाई, निशाना साधा और गोली चला दी जिससे कई गाते-उड़ते पक्षी

© NCERT NOT TO BE REPUBLISHED

ढेले के समान धरती पर आ गिरे। किसी की लाल-पीली चोंच वाली गर्दन टूट गई है, किसी के पीले सुंदर पंजे टेढ़े हो गए हैं और किसी के इन्द्रधनुषी पंख बिखर गए हैं। क्षत-विक्षत रक्तस्नात उन मृत-अर्धमृत लघु गातों में न अब संगीत है, न सौंदर्य, परंतु तब भी मारनेवाला अपनी सफलता पर नाच उठता है।

पक्षीजगत में ही नहीं, पशुजगत में भी मनुष्य की ध्वंसलीला ऐसी ही निष्ठुर है। पशुजगत में हिरन जैसा निरीह और सुंदर दूसरा पशु नहीं है। उसकी आँखें तो मानो करुणा की चित्रलिपि हैं, परंतु इसका भी गतिमय सजीव सौंदर्य मनुष्य का मनोरंजन करने में असमर्थ है। मानव को, जो जीवन का श्रेष्ठतम रूप है, जीवन के अन्य रूपों के प्रति इतनी वितृष्णा, विरक्ति और मृत्यु के प्रति इतना मोह और इतना आकर्षण क्यों?

बेचारी सोना भी मनुष्य की इसी निष्ठुर मनोरंजनप्रियता के कारण अपने अरण्य परिवेश और स्वजाति से दूर मानव-समाज में आ पड़ी थी।

प्रशांत वनस्थली में जब मृग-समूह शिकारियों की आहट से चौंककर भागा, तब सोना की माँ ने अपनी संतान को अपने शरीर की ओट में सुरक्षित रखने के प्रयास में प्राण गँवा दिए।

पता नहीं दया के कारण या कौतुकप्रियता के कारण शिकारी मृत हिरनी के साथ चिपके हुए शावक को जीवित उठा लाए। उनमें से किसी के परिवार की सहृदय गृहिणी और बच्चों ने उसे पानी मिला दूध पिला-पिलाकर दो-चार दिन जीवित रखा।

सुस्मिता वसु के समान ही किसी बालिका को मेरा स्मरण हो आया और वह उस अनाथ शावक को मुमूर्षु अवस्था में मेरे पास ले आई। शावक अवांछित तो था ही, उसके बचने की आशा भी धूमिल थी, परंतु मैंने उसे स्वीकार कर लिया। स्निग्ध सुनहले रंग के कारण सब उसे सोना कहने लगे। दूध पिलाने की शीशी, ग्लूकोज, बकरी का दूध आदि सब कुछ एकत्र करके, उसे पालने का कठिन अनुष्ठान आरंभ हुआ।

उसका मुख इतना छोटा था कि उसमें शीशी का निप्पल समाता ही नहीं था, उस पर उसे पीना भी नहीं आता था। फिर धीरे-धीरे उसे पीना ही नहीं, दूध की बोतल पहचानना भी आ गया। आँगन में कूदते-फाँदते हुए भी भक्तिन को बोतल साफ करते देखकर वह दौड़ आती और अपनी तरल-चकित आँखों से उसे ऐसे देखने लगती, मानो वह कोई सजीव मित्र हो।

उसने रात में मेरे पलंग के पाए से सटकर बैठना सीख लिया था, पर वहाँ गंदा न करने की आदत कुछ दिनों के अभ्यास से पड़ सकी। अँधेरा होते ही वह मेरे पलंग के पास आ बैठती और फिर सवेरा होने पर ही बाहर निकलती।

© RSMDPC WEBCOPY, NOT TO BE PUBLISHED



उसका दिनभर का कार्यकलाप भी एक प्रकार से निश्चित था। विद्यालय और छात्रवास के विद्यार्थियों के निकट पहले वह कौतुक का कारण रही, परंतु कुछ दिन बीत जाने पर वह उनकी ऐसी प्रिय साथिन बन गई, जिसके बिना उनका किसी काम में मन ही नहीं लगता था।

दूध पीकर और भीगे चने खाकर सोना कुछ देर कंपाउंड में चारों पैरों को संतुलित कर चौकड़ी भरती, फिर वह छात्रावास पहुँचती और प्रत्येक कमरे का भीतर-बाहर निरीक्षण करती।

मेस में उसके पहुँचते ही छात्राएँ ही नहीं, नौकर-चाकर तक दौड़े आते और सभी उसे कुछ-न-कुछ खिलाने को उतावले रहते, परंतु उसे बिस्कुट को छोड़कर अन्य खाद्य-पदार्थ कम पसंद थे।

छात्रावास का जागरण और जलपान अध्याय समाप्त होने पर वह घास के मैदान में कभी दूब चरती और कभी उस पर लोटती रहती। मेरे भोजन के समय को वह किस प्रकार जान लेती थी, यह समझाने का उपाय नहीं है, परंतु वह ठीक उसी समय भीतर आ जाती और तब तक मुझसे सटी खड़ी रहती जब तक मेरा खाना समाप्त न हो जाता। कुछ चावल, रोटी आदि उसको भी प्राप्य था, परंतु उसे कच्ची सब्जी ही भाती थी।

घंटी बजते ही वह फिर प्रार्थना के मैदान में पहुँच जाती और उसके समाप्त होने पर छात्रावास के समान ही कक्षाओं के भीतर-बाहर चक्कर लगाना आरंभ करती।

उसे छोटे बच्चे अधिक प्रिय थे, क्योंकि उनके साथ खेलने का अधिक अवकाश रहता था। वे पंक्तिबद्ध खड़े होकर सोना-सोना पुकारते और वह उनके ऊपर से छलाँग लगाकर एक ओर से दूसरी ओर कूदती रहती। यह सरकस जैसा खेल कभी घंटों चलता, क्योंकि खेल के घंटों में बच्चों की एक कक्षा के उपरांत दूसरी आती रहती।

मेरे प्रति स्नेह-प्रदर्शन के कई प्रकार थे। बाहर खड़े होने पर वह सामने या पीछे से छलाँग लगाती और मेरे सिर के ऊपर से दूसरी ओर निकल जाती। प्रायः देखने वालों को भय होता था कि उसके पैरों से मेरे सिर पर चोट न लग जाए, परंतु वह पैरों को इस प्रकार सिकोड़े रहती और मेरे सिर को इतनी ऊँचाई से लाँघती थी कि चोट लगने की कोई संभावना ही नहीं रहती थी।

भीतर आने पर वह मेरे पैरों से अपना शरीर रगड़ने लगती। मेरे बैठे रहने पर वह साड़ी का छोर

© BSEB WEB COPY NOT TO BE PUBLISHED

मुँह में भर लेती और कभी पीछे चुपचाप खड़े होकर चोटी ही चबा डालती। डाँटने पर वह अपनी बड़ी, गोल और चकित आँखों से ऐसे अनिर्वचनीय जिज्ञासा भरकर एकटक देखने लगती कि हँसी आ जाती।

पशु, मनुष्य के निश्छल स्नेह से परिचित रहते हैं, उसकी ऊँची-नीची सामाजिक स्थितियों से नहीं, यह सत्य मुझे सोना से अनायास प्राप्त हो गया।

अनेक विद्यार्थियों की भारी-भरकम गुरु जी से सोना को क्या लेना-देना था। वह तो उस दृष्टि को पहचानती थी, जिसमें उसके लिए स्नेह छलकता था और उन हाथों को जानती थी, जिन्होंने बलपूर्वक दूध की बोतल उसके मुख से लगाई थी।

यदि सोना को अपने स्नेह की अभिव्यक्ति के लिए मेरे सिर के ऊपर कूदना आवश्यक लगेगा, तो वह कूदेगी ही। मेरी किसी अन्य परिस्थिति से प्रभावित होना, उसके लिए संभव ही नहीं था।

कुत्ता, स्वामी और सेवक का अंतर जानता है और स्वामी के स्नेह या क्रोध की प्रत्येक मुद्रा से परिचित रहता है। स्नेह से बुलाने पर वह गद्‌गद् होकर निकट आ जाता है और क्रोध करने पर सभीत और दयनीय बनकर दुबक जाता है, पर हिरन यह अंतर नहीं जानता, अत: उसका पालने वाले से डरना कठिन है। यदि उस पर क्रोध किया जाए तो वह अपनी चकित आँखों में और अधिक विस्मय भरकर पालने वाले की दृष्टि से दृष्टि मिलाकर खड़ा रहेगा-मानो पूछता हो, क्या यह उचित है। वह केवल स्नेह पहचानता है, जिसकी स्वीकृति जताने के लिए उसकी विशेष चेष्टाएँ हैं।

वर्षभर का समय बीत जाने पर सोना, हिरन-शावक से हिरनी में परिवर्तित होने लगी। उसके शरीर के पीताभ रोएँ ताम्रवर्णी झलक देने लगे। टाँगें अधिक सुडौल और खुरों के कालेपन में चमक आ गई। ग्रीवा अधिक बंकिम और लचीली हो गई। पीठ में भराव वाला उतार-चढ़ाव और स्निग्धता दिखाई देने लगी, परंतु सबसे अधिक विशेषता तो उसकी आँखों और दृष्टि में मिलती थी। आँखों के चारों ओर खिंची कज्जलकोर में नीले गोलक और दृष्टि ऐसी लगती थी, मानो नीलम के बल्बों में उजली विद्युत का स्फुरण हो।



इसी बीच फ्लोरा ने भक्तिन की कुछ अँधेरी कोठरी के एकांत कोने में चार बच्चों को जन्म दिया और वह खेल के संगियों को भूलकर अपनी नवीन सृष्टि के संरक्षण में व्यस्त हो

स्वाभाविक चकित दृष्टि गंभीर विस्मय से भर गई।

एक दिन देखा फ्लोरा कहीं बाहर घूमने गई है और सोना भक्तिन की कोठरी में निश्चिंत लेटी है। आश्चर्य की बात यह थी कि फ्लोरा हेमंत, वसंत या गोधूली को तो अपने बच्चों के पास फटकने भी नहीं देती थी, परंतु सोना के संरक्षण में उन्हें छोड़कर आश्वस्त- भाव से इधर-उधर घूमने चली जाती थी।

संभवत: वह सोना की स्नेही और अहिंसक प्रवृति से परिचित हो गई थी। पिल्लों के बड़े होने पर और उनकी आँखें खुलजाने पर सोना ने उन्हें भी अपने पीछे घूमने वाली सेना में सम्मिलित कर लिया और मानो इस वृद्धि के उपलक्ष्य में आनंदोत्सव मनाने के लिए अधिक देर तक मेरे सिर के आर-पार चौकड़ी भरती रही, पर कुछ दिनों के उपरांत जब यह आनंदोत्सव पुराना पड़ गया, तब उसकी शब्दहीन, संज्ञाहीन प्रतीक्षा की स्तब्ध घड़ियाँ लौट आईं।

उसी वर्ष गर्मियों में मेरा बद्रीनाथ की यात्रा का कार्यक्रम बना। प्राय: मैं अपने पालतू जीवों के कारण प्रवास में कम रहती हूँ। उनकी देखरेख के लिए सेवक रहने पर भी मैं उन्हें छोड़कर आश्वस्त नहीं हो पाती। भक्तिन, अनुरूप आदि तो साथ जाने वाले थे ही, पालतू जीवों में से मैंने फ्लोरा को साथ ले जाने का निश्चय किया, क्योंकि वह मेरे बिना रह नहीं सकती थी।

छात्रावास बंद था, अत: सोना के नित्य नैमित्तिक कार्यकलाप भी बंद हो चुके थे। मेरी उपस्थिति का भी अभाव था, अत: आनंदोल्लास के लिए भी अवकाश कम था। हेमंत, वसंत मेरी यात्रा और तज्जनित अनुपस्थिति से परिचित हो चुके थे। होल्डाल बिछाकर उसे बिस्तर पर रखते ही वे दौड़कर उस पर लेट जाते और भौंकने तथा क्रंदन की ध्वनियों से सम्मिलित स्वर में मुझे मानो उपालंभ देने लगते। यदि उन्हें बाँधकर न रखा जाता तो वे कार में घुसकर बैठ जाते या उसके पीछे-पीछे दौड़कर स्टेशन तक जा पहुँचते, परंतु जब मैं चली जाती तब वे उदास-भाव से मेरे लौटने की प्रतीक्षा करने लगते।

सोना की सहज चेतना में न मेरी यात्रा जैसी स्थिति का बोध था, न प्रत्यावर्तन का, इसी से उसकी निराशा, जिज्ञासा और विस्मय का अनुमान मेरे लिए सहज था।

पैदल जाने-आने के निश्चय के कारण बद्रीनाथ की यात्रा में ग्रीष्मावकाश समाप्त हो गया। 2 जुलाई को लौटकर जब में बँगले के द्वार पर आ खड़ी हुई, तब बिछुड़े हुए पालतू जीवों में कोलाहल होने लगा।

गोधूली कूदकर मेरे कंधे पर आ बैठी, हेमंत-वसंत मेरे चारों ओर परिक्रमा करके हर्ष की ध्वनियों से मेरा स्वागत करने लगे, पर मेरी दृष्टि सोना को खोजने लगी। क्यों वह अपना उल्लास व्यक्त करने के लिए मेरे सिर के ऊपर से छलाँग नहीं लगाती? सोना कहाँ है, पूछने पर माली आँखें पोंछने लगा और चपरासी, चौकीदार एक-दूसरे के मुख देखने लगे। वे लोग आने के साथ ही मुझे कोई दुखद समाचार नहीं देना चाहते थे, परंतु माली की भावुकता ने बिना बोले ही उसे दे डाला।

© LOKBHARTI PUBLISHER

ज्ञात हुआ कि छात्रावास के सन्नाटे और फ्लोरा के तथा मेरे अभाव के कारण सोना इतनी अस्थिर हो गई थी कि इधर-उधर कुछ खोजती-सी वह प्राय: कंपाउंड से बाहर निकल जाती थी। इतनी बड़ी हिरनी को पालने वाले तो कम थे, परंतु उसे खाद्य और स्वाद प्राप्त करने के इच्छुक व्यक्तियों का बाहुल्य था। इसी आशंका से माली ने उसे मैदान में एक लंबी रस्सी से बाँधना आरंभ कर दिया था।

एक दिन न जाने किस स्तब्धता की स्थिति में बंधन-सीमा भूलकर वह बहुत ऊँचाई तक उछली और रस्सी के कारण मुख के बल धरती पर आ गिरी। वही उसकी अंतिम साँस और अंतिम उछाल थी।

सब उस सुनहले रेशम की गठरी से शरीर को गंगा में प्रवाहित कर आए और इस प्रकार किसी निर्जन वन में जन्मी और जन-संकुलता में पली सोना की करुण-कथा का अंत हुआ।

सब सुनकर मैंने निश्चय किया था कि अब हिरन नहीं पालूँगी, पर संयोग से फिर भी हिरन पालना पड़ रहा है।

-महादेवी वर्मा

© DSERPC WEBCOPY, NOT TO BE PUBLISHED

शब्दार्थ

गत वर्ष – पिछला साल
अस्पृश्य – जो छूने योग्य न होना
रक्तस्नात – खून से भींगा
निष्ठुर – कठोर
अरण्य – जंगल
मुमूर्षु अवस्था – मरण की अवस्था
स्निग्ध – चिकना, सुंदर
हिरन-शावक – हिरन का शिशु
कज्जलकोर – काजल की रेखा
नित्य-नैमित्तिक –रोज के काम
उपालंभ – शिकायत
स्तब्धता – जड़ता, निश्चेष्टता
बंकिम – टेढ़ा, तिरछा
ग्रीवा – गरदन, गला
चंपक-वर्ण रूपसी – चंपा के फूल जैसे रंग वाली सुंदरी
भयजनक – डर उत्पन्न करने वाला
अंतर्लीला – नष्ट करने की क्रिया
प्रशांत – शांत, पूरी तरह से शांत
कौतुकप्रियता – खेल-तमाशा या हँसी-मजाक का भाव
अवांछित –जिसकी इच्छा न की गई हो
अनुष्ठान – विशिष्ट क्रिया, पूजा-पाठ
पीताभ – पीली चमक देता हुआ
स्फुरण – हरकत
तज्जनित – उससे उत्पन्न
प्रत्यावर्तन –पलट के आना
जन-संकुलता – लोगों की भीड़-भाड़
सभीत – भय के साथ
वृंदवादन – सामूहिक रूप से वाद्य यंत्रों को बजाना

प्रश्न-अभ्यास

पाठ से

1. महादेवी वर्मा को अपना निश्चय क्यों बदलना पड़ा?
2. सोना के दिनभर के कार्यकलाप को अपनी भाषा में लिखिए?
3. सोना को छोटे बच्चे क्यों अच्छे लगते थे?
4. **भाव स्पष्ट कीजिए**

   (क) जब मृत्यु इतनी अपवित्र और असुंदर है, तब उसे बाँटते घूमना क्यों अपवित्र और असुंदर कार्य नहीं है।

   (ख) पशु, मनुष्य के निश्छल स्नेह से परिचित रहते हैं, उसकी ऊँची-नीची सामाजिक स्थितियों से नहीं।

पाठ से आगे

1. सोना के सौंदर्य का वर्णन अपने शब्दों में कीजिए।
2. पशु-पक्षियों की सुरक्षा के लिए आप क्या-क्या उपाय करेंगे?
3. **क्या होता यदि -**

   (क) हिरन के तीन-चार दिन के बच्चे को लेखिका के पास न लाया जाता।

   (ख) हेमंत-वसंत और फ्लोरा सोना से दोस्ती न करते।

   (ग) लेखिका बद्रीनाथ की यात्रा पर न जाती।

व्याकरण

1. व्यंजनों के प्रत्येक वर्ग के नासिक्य व्यंजन को अनुस्वार (ं) प्रकट करता है जबकि अनुनासिक (ँ) स्वर का गुण है। पाठ में आए पाँच अनुनासिक और पाँच अनुस्वार शब्दों की सूची बनाइए।

अनुनासिक	अनुस्वार
(क)	(क)
(ख)	(ख)
(ग)	(ग)
(घ)	(घ)

© BSTBPC WEBCOPY NOT TO BE PUBLISHED

2. इन वाक्यों में रेखांकित शब्दों के कारक चिह्न की पहचान कीजिए?

(क) मैंने निश्चय किया कि अब हिरन नहीं पालूँगी।

(ख) जिसमें उसके लिए स्नेह छलता था।

(ग) गोधूली कूदकर मेरे कंधे पर आ बैठी।

(घ) हिरन शेर से डरता है।

(ङ) अरे! यह तो बहुत सुंदर है।

(च) मेरी दृष्टि सोना को खोजने लगी।

3. कई बार दो शब्द मिलकर भी एक शब्द बनाते हैं, जैसे :-

छात्र + आवास = छात्रावास

इस प्रकार कुछ शब्द बनाइए ।

गतिविधि

1. महादेवी वर्मा द्वारा रचित पुस्तक 'मेरा परिवार' से उनके पालतू पशु-पक्षी के शब्द चित्रों की ज्ञानकारी प्राप्त कीजिए।
2. अधिक-से-अधिक लोग पशु-पक्षियों से प्रेम करें, इस पर कोई छोटी सी कविता या निबंध लिखिए।

18 हुएनत्सांग की भारत यात्रा

चीन में सन् 630 के पतझड़ का मौसम था, हुएनत्सांग खुशी से सराबोर होकर सुमेरु पर्वत को देख रहे थे। उन्हें लगा कि दैवी पर्वत सुमेरु महान समुद्र के मध्य में से उभरा। सुमेरु पर्वत सोना, चांदी, रत्नों और जवाहरातों का बना हुआ सुंदर एवं विशाल पर्वत लग रहा था। उन्होंने उस पर चढ़ना चाहा, लेकिन उनके चारों ओर सागर की ऊँची भयंकर लहरों ने उनकी कोशिश नाकामयाब कर दी। उस समय वहाँ कोई जहाज एवं नौका भी नहीं दिखाई दे रही थी। हुएनत्सांग बिना किसी डर के लहरों को पार करते रहे। ठीक उसी समय उनके पैरों के समीप पाषाण-कमल उदित हुआ। जैसे ही वे कमल पर पैर रखते, कमल गायब होकर और दुबारा उनके सामने प्रकट होता। इस तरह वे पाषाण कमल पर पैर रखते हुए उस पवित्र पर्वत तक पहुंच गए। लेकिन वे उसकी चोटी पर न चढ़ सके। जैसे ही उन्होंने साहस बटोरकर कदम आगे बढ़ाने की कोशिश की, वैसे ही एक तेज बवंडर ने आकर उन्हें उठाकर पर्वत की सबसे ऊँची चोटी पर पहुँचा दिया।

आनंद से विभोर होकर हुएनत्सांग की नींद खुली। उन्होंने स्वप्न को एक शुभ शगुन मानकर बुद्ध की जन्मभूमि, भारत की तीर्थ यात्रा प्रारंभ की। वे उसी समय राजधानी छांग-एन से चल पड़े। वे उस समय तक चलते गए जब तक कि लिएंग चाउ ने उन्हें न रोका। उसने हुएनत्सांग से यह प्रार्थना की कि वह कुछ बौद्ध लेखों की व्याख्या कर दें। कारण यह था कि हुएनत्सांग अपनी विद्वता के लिए विख्यात थे।

उस जमाने में चीन के कानून के मुताबिक लोगों को देश छोड़ने की आज्ञा नहीं थी। लेकिन हुएनत्सांग किसी के द्वारा रोके जाने पर न रुकने के लिए दृढ़ संकल्पित थे। वे इस नेक काम में मदद मांगने लिएंग-चाउ के सबसे अधिक श्रद्धास्पद भिक्षु के पास गए। भिक्षु ने उत्साह के साथ उनकी प्रार्थना स्वीकार कर ली और हुएनत्सांग के मार्गदर्शन के लिए अपने दो शिष्यों को भेज दिया।

हुएनत्सांग और उसके दोनों साथी दिन में छिपे रहते और रात में यात्रा करते हुए क्वा-चौ पहुँचे। वे यात्रियों और व्यापारियों से भारत जाने के लिए पश्चिमी मार्गों के बारे में पूछा करते थे।

यात्रियों ने कहा "यहां से पचास ली (एक मील में तीन ली होते हैं) की दूरी पर उत्तर दिशा में हु-लु नदी है। उसके पानी में भंवरें पड़ती हैं और बहाव भी इतना तेज है कि उसे नाव के द्वारा पार नहीं किया जा सकता।"

"तब उसे यात्री किस तरह पार करते हैं?" हुएनत्सांग ने कहा, "जरूर कोई रास्ता होगा"।

"जहाँ वह बहुत उथली हो, वहाँ से पार किया जा सकता है," उत्तर था। "लेकिन यात्रियों के रास्ते में सिर्फ नदी ही रुकावट नहीं है।" बताने वाला यह कहकर जरा रुका, तभी हुएनत्सांग ने यह जानने की उत्सुकता जाहिर की कि आखिर वे कौन से खतरे हैं जो रास्ते में झेलने जरूरी हैं।

"वहाँ यह-मैन-अवरोध है" आदमी ने अपनी बात जारी रखते हुए कहा, "और उसके बाद पांच सिग्नल टावर भी हैं। जो आदमी इन टावरों का प्रहरी है, वह कड़ी निगरानी करता है कि कोई भी आदमी बिना अनुमति के चीन से बाहर न जा सके। ये टावर एक सौ ली की दूरी पर हैं और इनके और धरती के बीच में कहीं भी न तो पानी मिलता है और न अनाज उगता है। इसके उस पार मौ-हौ-यैन नामक रेगिस्तान और हामी की सीमाएँ हैं।"

हुएनत्सांग का हौसला कुछ कम हो गया और वह लगातार एक महीने तक रास्तों और जीवन-यापन के तरीकों के बारे में विचार करता रहा। उनकी परेशानी उस समय और बढ़ गई जब लिएंग चाउ के जासूसों ने गवर्नर से हुएनत्सांग की योजना के बारे में जानकारी देते हुए कहा कि भिक्षु को चीन के बाहर जाने से रोका जाए।

बुद्ध के देश जाने वाले रास्ते के बारे में जानकारों ने उन्हें चेतावनी दी "पश्चिमी रास्ते मुश्किल और खतरनाक हैं। कभी रेत के तूफान रास्ता रोक देते हैं और दूसरी ओर नर-पिशाचों तथा लू-लपट से भरे आंधी तूफानों का भी खतरा है। इनसे कोई भी नहीं बच सकता। आपके लिए वहाँ अकेले जाना तो बहुत ही बुरा होगा। मेरी प्रार्थना है कि आप इस पर गंभीरता के साथ विचार करें। अपनी जिन्दगी से खिलवाड़ न करें।"

लेकिन हुएनत्सांग पीछे हटने वाले नहीं थे। उन्होंने शपथ ली, "जब तक मैं बुद्ध के देश नहीं पहुँच जाता, मैं कभी चीन की तरफ मुड़कर भी नहीं देखूंगा। ऐसा करने में यदि रास्ते में मेरी मृत्यु हो जाये तो उसकी भी चिंता नहीं"।

इस प्रकार हुएनत्सांग बुद्ध के देश पहुँचे। हुएनत्सांग आठ या नौ दिन तक बोध गया में ठहरे। गया में कुछ लोग बसे हुए थे। वहाँ लगभग एक हजार ब्राह्मण परिवार रहते थे जिन्हें ऋषियों की सन्तान माना जाता था। ये राजा की प्रजा में शामिल नहीं थे। लोग इनको पूजनीय मानते थे।

जब हुएनत्सांग गया में थे तो नालंदा के प्रसिद्ध मठ के भिक्षुओं ने उनकी तीर्थ यात्रा के बारे में सुना। नालंदा मठ से चार भिक्षु हुएनत्सांग को लेने वहाँ आए। हुएनत्सांग इससे बड़े प्रसन्न हुए। कारण यह था कि वह नालंदा के प्रसिद्ध विद्वान शीलभद्र से योगशास्त्र पर चर्चा करना चाहते थे।

नालंदा के मठ के चारों ओर ईंटों की दीवार थी। एक द्वार महाविद्यालय के रास्ते में खुलता था। वहाँ आठ बड़े कक्ष थे। हुएनत्सांग ने लिखा है कि भवन कलात्मक और बुर्जो से सज्जित था।

वेधशालाएं सुबह के कुहासे में छिप जाती थीं और ऊपरी कमरे बादलों में खोए से प्रतीत होते थे। हुएनत्सांग मठ की सुंदरता से बहुत प्रभावित हुए और इन शब्दों में उद्‌गार व्यक्त किए, खिड़कियों से झांकने पर दिखाई देता है कि हवा के साथ मिलकर बादल किस प्रकार अठखेलियाँ करते और नयी-नयी आकृतियाँ बनाते थे। वृक्ष के पत्तों पर सूरज और चाँद की रश्मियाँ झिलमिलाती थीं।

तालाबों के नीचे स्वच्छ पानी पर नील कमल खिलते थे तथा साथ में ही रक्ताभ कनक पुष्प झूमते रहते। पड़ोस के आम्र कुंजों के आम के बौर की भीनी-भीनी खुशबू वायु में तैरती रहती।

"बाहरी सभी आंगनों में चार मंजिले कक्ष पुजारियों के लिए थे। ये अजगर की छवि के बने थे। लाल-मूगिया खम्भों पर बेल-बूटे उकरे थे। जगह-जगह रोशनदान बने थे। फर्श इतनी चमकदार ईंटों की बनी हुई थी कि उसमें से हजारों तरह की छटाएं प्रकाशित हो रही थीं। इन सभी से वह स्थान अत्यन्त रमणीय हो रहा था।"

"वहाँ का राजा पुजारियों का सम्मान करता था तथा लगभग सौ गांवों के लगान को इस संस्थान को धर्मार्थ दिया करता था।"



"नालन्दा में हुएनत्सांग को वृद्ध शीलभद्र से मिलने देने से पूर्व लगभग 20 भिक्षुओं ने विभिन्न प्रकार की जानकारी दी। हुएनत्सांग ने सभी आदेशों और अनुदेशों को भली प्रकार समझा तथा जब उसे शीलभद्र के सामने ले जाया गया तो उसने घुटनों के बल बैठकर श्रद्धापूर्वक वृद्ध भिक्षु के चरणों का चुम्बन किया और भूमि पर सिर रख दिया। तब वह शीलभद्र के सामने खड़ा हुआ और नम्रतापूर्वक बोला, मैंने आपके निर्देश में शिक्षा ग्रहण करने के लिए चीन से यहाँ तक की यात्रा की है। मैं प्रार्थना करता हूँ कि आप मुझे अपना शिष्य बनाएं।"

इन शब्दों को सुनते ही शीलभद्र की आँखें भर आईं। उन्होंने कहा "हमारा गुरु शिष्य का संबंध देव निर्धारित है। मैं काफी समय से बीमार था, मेरी बीमारी इतनी दुखदायी थी कि मैंने जीवन लीला समाप्त करने की इच्छा प्रकट की। तब एक रात जब मैं सोया हुआ था मैंने स्वप्न में देखा कि तीन देव आये हैं। उनमें से एक का रंग स्वर्ण, दूसरे का स्वच्छ तथा तीसरे का रजत जैसा था। उन्होंने मुझ से कहा कि मैं मरने की इच्छा वापस ले लूं और जीने की इच्छा प्रकट करूं क्योंकि चीन देश से एक-भिक्षु यहाँ धर्म ज्ञान प्राप्त करने

के लिए आ रहा है और वह तुम्हारा शिष्य बन कर शिक्षा ग्रहण करना चाहता है। इसलिए तुम उसे भली प्रकार शिक्षित करना।"



दोनों भिक्षुओं ने समय व्यर्थ न गंवाते हुए तुरंत अध्ययन प्रारंभ कर दिया। हुएनत्सांग ने कई वर्ष नालन्दा में बिताए। इन दौरान उन्होंने शेष भारत की यात्रा भी की।

हुएनत्सांग कुशाग्र बुद्धि के थे जिन्होंने नालन्दा में अध्ययन का पूरा लाभ उठाया। यहाँ उन्होंने भाषा का पूर्ण अध्ययन किया और विद्वतजनों के साथ वार्तालाप कर पूरी जानकारियाँ लीं। उन्होंने बौद्ध और ब्राह्मण ग्रन्थों का सूक्ष्म अध्ययन किया। बाद में उन्होंने बौद्ध धर्म के सिद्धान्तों और दर्शन में नालन्दा के योगदान पर लिखा "यहाँ के भिक्षु बहुत विद्वान और दक्ष थे। मठ के नियम कठोर थे और सब भिक्षु इनका पालन करने के लिए बाध्य थे। सुबह से शाम तक अध्ययन-अध्यापन करते तथा युवा और वृद्ध एक दूसरे की सहायता करते। जो दर्शनार्थी यहाँ शास्त्रार्थ में भाग लेना चाहता था, द्वारपाल उससे द्वार पर ही कई प्रकार के प्रश्न पूछते। जो लोग प्रश्नों का उत्तर नहीं दे पाते वे वापस चले जाते। प्रवेश से पहले यह आवश्यक था कि हरेक ने नयी और पुरानी पुस्तकों का अध्ययन किया हो।"

- बेलिन्दर एवं हरिन्दर धनौआ

नोट : हमारी पाठ्यपुस्तकों में 'ह्वेनसांग' की जगह 'हुएनत्सांग' प्रचलन में रहा है।

शब्दार्थ

पाषाण- पत्थर
मार्गदर्शन-राह दिखाना
उदित-उगा हुआ
विख्यात- प्रसिद्ध
बवंडर-आँधी-तूफान, चक्रवात
श्रद्धास्पद-आदरणीय, श्रद्धेय
प्रकट-सामने, अवतरित
निर्देश-समझाना, बतलाना
संकल्पित-दृढ़ निश्चय किया हुआ
उथली-कम गहरी, छिछली
वेधशाला-जहाँ ग्रह-नक्षत्रों का अध्ययन किया जाता है।

प्रश्न-अभ्यास

पाठ से

1. हुएनत्सांग भारत क्यों आना चाहते थे?
2. भारत आने में हुएनत्सांग को किन-किन कठिनाइयों का सामना करना पड़ा?
3. हुएनत्सांग और शीलभद्र के मिलन का वर्णन कीजिए।
4. नालंदा का वर्णन हुएनत्सांग ने किन शब्दों में किया?

पाठ से आगे

1. निम्नलिखित अंश 'हुएनत्सांग' के किस पक्ष को दर्शाता है।

   "जब तक मैं बुद्ध के देश में नहीं पहुँच जाता, मैं कभी चीन की तरफ मुड़कर भी नहीं देखूँगा। ऐसा करने में यदि रास्ते में मेरी मृत्यु हो जाए तो उसकी भी चिन्ता नहीं।"
2. आप अपने आस-पास के किसी धार्मिक, ऐतिहासिक स्थल पर जाइए और उसकी विशेषताओं का उल्लेख कीजिए।

व्याकरण

1. कारक और उनके साथ लगने वाले चिह्न इस प्रकार है-

कारक	विभक्ति
कर्त्ता	ने
कर्म	को
करण	से, द्वारा
सम्प्रदान	के लिए
आपादान	से
सम्बन्ध	का, के, की
अधिकरण	में, पर
सम्बोधन	हे, हो, अरे

उपर्युक्त विभक्तियों का प्रयोग करते हुए एक-एक वाक्य बनाइए।

गतिविधि

1. गया और नालंदा की तरह बिहार की कुछ प्रसिद्ध ऐतिहासिक स्थलों की सूची बनाइए।
2. अपने शिक्षकों/अभिभावकों से पता कीजिए कि बिहार में मेले कहाँ-कहाँ लगते हैं और वे क्यों प्रसिद्ध हैं?

19 आर्यभट

आकाश में चमकते सितारे सदा से मनुष्य के लिए आकर्षण के केन्द्र रहे हैं। मानव युगों से यह कल्पना करता रहा है कि वह इन नक्षत्रों के रूप-रंग, आकार और रचना को जान सके। उनकी यात्रा कर, उनके बारे में अनुभव प्राप्त कर सके। यह विचार भी उसे गुदगुदाता रहा है कि किसी-न-किसी नक्षत्र पर उसके जैसे लोग भी बसते होंगे। मानव की इसी जिज्ञासा ने उसे आकाश में विद्यमान नक्षत्रों की खोजबीन करने के लिए प्रेरित किया।

युगों से चले आ रहे परीक्षणों के कारण ही आज मानव धरती पर बैठे-बैठे ही कुछ नक्षत्रों में घटने वाली घटनाओं को जानने में सक्षम हो गया है।

भारत में हजारों वर्ष पूर्व भी ग्रह-नक्षत्रों के विषय में विस्तार से चिन्तन-मनन किया गया। आर्यभट भारत के पहले व्यक्ति थे जिन्होंने कहा कि पृथ्वी अपने धुरी पर चक्कर लगाती है। उनके अनुसार तारामंडल स्थिर रहता है और पृथ्वी अपनी धुरी पर पश्चिम से पूर्व की ओर घूमती है। हम भी पृथ्वी के साथ घूमते रहते हैं। आज यह एक वैज्ञानिक तथ्य है पर उस समय लौकिक मत में ऐसी बात करना पाप समझा जाता था क्योंकि धर्म ग्रन्थ भी यही कहते थे कि पृथ्वी स्थिर है।

आर्यभट का जन्म अश्मक प्रदेश में 476ई. में हुआ था। गोदावरी एवं नर्मदा के बीच के क्षेत्र को अश्मक प्रदेश के नाम से जाना जाता था। वे अपने नये विचारों का प्रचार करके लोगों में व्याप्त अन्धविश्वास को दूर करने एवं उत्तर भारत के ज्योतिषियों के विचारों का अध्ययन करने पाटलिपुत्र आये थे। पाटलिपुत्र नगर से थोड़ी दूर एक आश्रम में उनकी वेधशाला थी। जहाँ ताँबे, पीतल और लकड़ी के तरह-तरह के यंत्र रखे थे।

आर्यभट को ज्योतिष सम्राट कहा जाता है पर गणित में भी उन्हें विशेष कुशलता प्राप्त थी। इन विषयों में उन्होंने अनेक पुरानी मान्यताओं का खण्डन कर नवीन मतों की स्थापना की। वे स्वतंत्र विचारों के व्यक्ति थे और किसी भी दबाव में आकर गलत बातों को स्वीकार करना उनके स्वभाव के विरुद्ध था।

आर्यभट ने अपने अनुभवों और विचारों को "आर्यभटीयम्" नामक ग्रन्थ में संकलित किया। इस ग्रन्थ को 'आर्यभटीय' भी कहते हैं। उनकी पुस्तक के एक श्लोक के आधार पर कहा जा सकता है कि आर्यभट उस समय केवल तेईस (23) वर्ष के थे जब यह पुस्तक लिखी गई। है न यह आश्चर्य की बात! क्योंकि इतनी छोटी आयु में धर्म ग्रन्थों और परम्परागत धारणाओं का खण्डन कर, नवीन विचारों और

धारणाओं की स्थापना करना कोई आसान काम न था।

आर्यभटीयम् में गणित और ज्योतिष दोनों ही हैं। यह महान ग्रन्थ केवल दो सौ बयालीस (242) पंक्तियों एवं इक्कीस श्लोकों में सिमटा हुआ है। पर यह है गणित और ज्योतिष का अपूर्व भण्डार।

आर्यभट महान ज्योतिष शास्त्री थे। उन्होंने अपने काल में फैले अनेक अन्धविश्वासों का खण्डन किया। उन्होंने ही सबसे पहले कहा कि पृथ्वी गोल है और अपने धुरी पर चक्कर लगाती है। आर्यभट ने चन्द्रग्रहण तथा सूर्यग्रहण के कारणों पर भी स्पष्ट रूप से प्रकाश डाला। उन्होंने बताया कि चन्द्रमा और पृथ्वी की परछाईं पड़ने से ग्रहण होते हैं। पृथ्वी की छाया जब चन्द्रमा पर पड़ती है तो चन्द्रग्रहण होता है। और चन्द्रमा की छाया जब पृथ्वी पर पड़ती है तब सूर्यग्रहण होता है। आर्यभट ने आज से हजारों वर्ष पहले यह बता दिया था कि चन्द्रमा स्वयं नहीं चमकता अपितु वह सूर्य के प्रकाश से चमकता है। आर्यभट के अध्ययन से उस समय लोगों ने जान लिया था कि चाँद के प्रकट होने तथा पूरा गायब होने के मध्य एक निश्चित समय होता है। सूरज, चाँद तथा नक्षत्र जिन मार्गो से यात्रा करते हैं उसे 'रविमार्ग' कहा गया और इसी के आधार पर ज्योतिषियों ने बारह (12) राशियों का विभाजन किया। आज भी यह मान्यता है कि आकाश के ग्रह-नक्षत्र मनुष्य के जीवन पर प्रभाव डालते हैं, परन्तु आर्यभटीयम् में किसी भी प्रकार का अन्धविश्वास नहीं झलकता। यह ग्रन्थ पूर्णतया विज्ञान पर आधारित है।

आर्यभट की सबसे बड़ी उपलब्धि शून्य की उपयोगिता को प्रमाणित करना था। जिसके आधार पर बड़ी-से-बड़ी संख्या को सरलता से लिखा जा सकता है। कम्प्यूटर की माप में शून्य का महत्व सर्वविदित है। अन्तरिक्ष की सभी गणनाएँ इसके बिना असम्भव है। कुछ विद्वानों के कथनानुसार शून्य का ज्ञान भी सर्वप्रथम आर्यभट ने ही दिया।

आर्यभट ने अंकगणित, बीजगणित और रेखागणित के अनेक सिद्धान्त अपनी पुस्तक में दिए। उस समय वृत के व्यास और परिधि की जानकारी कम ही गणितज्ञों को थी। आर्यभट ने आज से लगभग डेढ़ हजार (1,500) वर्ष पहले अनुसंधान किया और बताया कि यदि वृत्त का व्यास ज्ञात है तो वृत्त की परिधि मालूम की जा सकती है। आर्यभट ने गणित की असंख्य बारीकियों को बड़ी-कुशलता से समझाया तथा नये-नये सिद्धान्त स्थापित किए।

आर्यभट ने ज्यामिति के क्षेत्र में भी अपनी प्रतिभा का अनुपम प्रदर्शन किया । उन्होंने त्रिकोण की तीन भुजाओं, उसके कोणों का अध्ययन कर, कोण की समिति की नई पद्धति की खोज की। बाद में यूनानी- गणितज्ञों ने भी इसकी चर्चा की और धीरे-धीरे यह ज्ञान यूरोप में फैला। आज विद्यालयों में पढ़ाए जाने वाले रेखागणित को यूनानी गणितज्ञ यूक्लिड की ज्यामिति पर आधारित भले ही मानते हों पर इसकी विस्तृत जड़ें 'आर्यभटीयम्' में देखी जा सकती हैं।

आर्यभट ने नया रास्ता दिखाया। उन्होंने दिखा दिया कि विज्ञान की खोज का रास्ता धार्मिक विश्वासों के रास्ते से जुदा है। वे हमारे देश के महान वैज्ञानिक ही नहीं, एक क्रान्तिकारी विचारक भी थे। श्रुति, स्मृति और पुराणों की परम्परा के विरोध में सही विचार प्रस्तुत करके उन्होंने बड़े साहस का परिचय दिया था और भारत में वैज्ञानिक अनुसंधान की एक स्वस्थ परम्परा स्थापित की। इसीलिए आज हमने उन्हें आसमान में उठाया है। भारत ने अपने पहले कृत्रिम उपग्रह को किसी काल्पनिक देवता का नहीं बल्कि, अपने महान वैज्ञानिक का नाम दिया– आर्यभट।

–पाठ्यपुस्तक विकास समिति

शब्दार्थ

अनुपम– सुन्दर, बेहतरीन
नक्षत्र–तारा
उपग्रह–बड़े ग्रहों की परिक्रमा करने वाले आकाशीय पिंड
अपूर्व– जिसके जैसा पहले न हुआ हो
अंतरिक्ष– आकाश
मिति–माप।
जिज्ञासा–जानने की इच्छा
सतत– लगातार
व्यास–वृत्त से होकर परिधि के दो छोरों के बीच की दूरी

© BSTBPC WEBCOPY, NOT TO BE PUBLISHED

प्रश्न–अभ्यास

पाठ से

1. निम्नलिखित वाक्यों में सही (☒) के सामने सही तथा गलत के सामने गलत (×) का निशान लगाइए।

(i) आर्यभट एक प्रसिद्ध किसान थे। ( )

(ii) वे पाटलिपुत्र के रहने वाले थे। ( )

(iii) आर्यभट भारत के पहले व्यक्ति थे जिन्होंने कहा था कि पृथ्वी अपनी धुरी पर चक्कर लगाती है। ( )

(iv) चाँद के प्रकट होने तथा पूरा गायब होने के मध्य एक निश्चित अवधि होती है। ( )

4. **निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक वाक्य में दीजिए-**

(i) आर्यभट का सूर्यग्रहण एवं चंद्रग्रहण के विषय में क्या मानना था?

(ii) "आर्यभटीय" किन विषयों पर लिखा गया ग्रंथ है?

(iii) रवि-मार्ग किसे कहते हैं?

(iv) आर्यभट ने जब "आर्यभट्टीय" की रचना की, उस समय उनकी उम्र कितनी थी?

5. क्या आप इसी तरह किसी अन्य वैज्ञानिक का परिचय लिख सकते हैं? यदि 'हाँ' तो लिखकर शिक्षक या अन्य को दिखाइए

व्याकरण

(क) विज्ञान+इक= वैज्ञानिक। इसी तरह 'इक' प्रत्यय जोड़कर अन्य कुछ शब्दों का निर्माण कीजिए।

(ख) निम्न शब्दों से वाक्य बनाइए।

उपग्रह, उद्योग, भौगोलिक, नैतिक, पृथ्वी

(ग) निम्नलिखित शब्दों को **'अ' 'आ'** के उच्चारण में अंतर पर ध्यान देते हुए बोलिए।

अनुभव, आकाश, अनेक, आकार, आधुनिक, अपितु, अनुपम, आर्यभट, अनुसंधान

गतिविधि

1. संध्या के समय आकाश में सूर्य को देखते हुए सूर्यास्त का वर्णन कीजिए।
2. कुछ धर्मग्रंथों का मानना है कि पृथ्वी स्थिर एवं सूर्य सहित बाकी ग्रह उसके चारों ओर घूमते हैं, जबकि वैज्ञानिकों का मानना है कि सूर्य स्थिर है एवं पृथ्वी सहित बाकी ग्रह उसके चारों ओर घूमते हैं। इन दोनों बातों में से आप किसे सही मानते हैं और क्यों?
3. आर्यभट ने कई जटिल सवालों का हल खोजा। क्या आप बता सकते हैं कि पानी को उबालने पर वह नीचे नहीं गिरता लेकिन दूध उफान लेकर नीचे गिर जाता है, क्यों?

20 यशस्विनी

मत उसके नभ को छीनो तुम,
मत तोड़ो उसके सपनों को।
वह दान दया की वस्तु नहीं,
वह जीव नहीं वह नारी है।

अगर कर सकते हो कुछ भी तुम,
तो कुछ न करो- यह कार्य करो।
जो चला गया- पर अब जो है,
उसको संवारना आर्य करो।

क्या दादी-नानी-चाची-माँ।
बस यह बनकर है रहने को?
निर्जीव नहीं, वह नारी है
उसे टेरेसा बन जीने दो,
उसे इंदिरा बन जीने दो।









हाँ तोड़ो उस बेड़ी को जरा
जिसमें नफरत की कड़ियाँ हैं
फिर पंखों को खुल जाने दो
उसे कल्पना बन जीने दो,
उसे लता बन जीने दो

पग-नुपूर कंगन-हार नहीं
तुम विद्या से शृंगार करो
तुम खुद अपना सम्मान करो
अपना नारीत्व स्वीकार करो।

-बेबी रानी

शब्दार्थ

आर्य- श्रेष्ठ **बेड़ी**-जंजीर **पग**-पैर **नुपूर**- पायल

प्रश्न-अभ्यास

पाठ से

1. इन पद्यांशों के अर्थ स्पष्ट कीजिए

(क) पग-नुपूर कंगन हार नहीं
तुम विद्या से शृंगार करो

(ख) वह दान दया की वस्तु नहीं,
वह जीव नहीं वह नारी है।

(ग) उसे टेरेसा बन जीने दो,
उसे इंदिरा बन जीने दो।

पाठ से आगे

1. समाज में स्त्री एवं पुरुष में भेद-भाव किन-किन रूपों में दिखाई देता है।
2. समाज में स्त्री-पुरुष के बीच किया जाने वाला भेद-भाव मिटाना क्यों जरूरी है ? इसको मिटाने के लिए आप क्या-क्या कर सकते हैं?
3. समाज में भ्रूण हत्याएँ हो रही हैं। लगातार महिलाओं की संख्या में कमी हो रही है। लोग लड़के की कामना करते हैं तथा लड़कियों को दोयम दर्जे के नागरिक के रूप में देखा जाता है। वर्तमान समय में कमोवेश नारी की यही स्थिति है। इस परिदृश्य को ध्यान में रखकर एक स्वरचित कविता का निर्माण कीजिए।

व्याकरण

1. निम्नलिखित शब्दों के विलोम शब्द लिखिए-

तोड़ो	संवारना
नफ़रत	सम्मान
स्वीकार	दया

2. दिये गये पुल्लिंग शब्दों के स्त्रीलिंग शब्द लिखिए:-

अभिनेता	नेता
लेखक	छात्र
अध्यापक	नर

गतिविधि

1. बाल-विवाह, दहेज-प्रथा, भ्रूण-हत्या जैसी सामाजिक कुरीतियाँ हमारे समाज में हैं। आपके विद्यालय में 'मीना-मंच' से संबंधित या कुछ अन्य पुस्तकें होंगी जिनमें बालिका शिक्षा तथा नारी सशक्तीकरण से संबंधित कहानियाँ हैं। आप उनका अध्ययन कीजिए और नुक्कड़ नाटक के द्वारा समाज में व्याप्त कुरीतियों को मिटाने के लिए लोगों को प्रेरित कीजिए।

2. प्रत्येक वर्ष 8 मार्च को अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस मनाया जाता है। इस दिन क्या-क्या होता है? अपने शिक्षक से चर्चा कीजिए।

3. भारतीय नारी ने विभिन्न क्षेत्रों में अपना परचम लहराया है, जैसे-

इन्दिरा गाँधी	-	राजनीति
कल्पना चावला	-	अंतरिक्ष
मदर टेरेसा	-	समाज-सेवा
लता मंगेशकर	-	संगीत

क्या आपके आस-पास कोई ऐसी नारी है, जिसने किसी क्षेत्र में अपना विशेष नाम किया हो। शिक्षक, अभिभावक की सहायता से पता कर उनसे मिलिए और बातचीत कीजिए।

गतिविधि

जूतों की दुकान में जाकर जूते-चप्पलों तथा सैंड्लों की बनावट, रंग तथा उपयोग में लाई गई सामग्री पर जानकारी एकत्रित करके नीचे दिए गए प्रश्नों के जबाव दीजिए-

(क) क्या लड़के तथा लड़कियों के जूते-चप्पल तथा सैंड्लों में अन्तर है? यदि हाँ, तो ये अन्तर कौन-कौन से हैं?

(ख) लड़के तथा लड़कियों के लिए अलग-अलग जूते-चप्पल बनाने के क्या कारण हो सकते हैं?

(ग) लड़के तथा लड़कियों के जूते-चप्पलों तथा सैंड्लों में अन्तर लिंग-भेद को बनाए रखने का एक तरीका है। चर्चा कीजिए।

शारीरिक ताकत का भ्रम

स्त्रियाँ तेजी से दौड़ नहीं सकतीं- यह धारणा 'सुसंस्कृत' गृहिणियों' को देख कर पैदा होती है। लेकिन तथ्य गवाह है कि यदि स्त्री को समान अवसर मिले तो वह पुरुषों से ज्यादा पीछे नहीं रह सकतीं। ओलंपिक के रिकार्ड इसके गवाह हैं। ओलंपिक प्रतियोगिताओं में 100 मीटर की दौड़ में पुरुषों का रेकार्ड 9.83 सेंकेड (1984 में) का है और स्त्रियों का रेकार्ड 10.76 सेकेंड (1984 में) का। यानि स्त्री की अधिकतम रफ्तार पुरुष की अधिकतम रफ्तार से सिर्फ 17.94 प्रतिशत कम है। लेकिन 10 हजार मीटर की दौड़ में यह फर्क लगभग आधा हो जाता है। 10 हजार मीटर की दौड़ में पुरुषों का अब तक का रेकार्ड है 27 मिनट 18.81 सेकेंड और स्त्रियों का 30 मिनट 13.74 सेकेंड। यानी स्त्री की अधिकतम रफ्तार पुरुष से सिर्फ 9.95 प्रतिशत कम है। क्या 9.95 प्रतिशत की कमी स्त्री और पुरुष की दौड़ने की क्षमता में किसी बड़े, मूलभूत फर्क की ओर इशारा करती है? फिर यह सर्वोच्च अंतर्राष्ट्रीय रेकॉर्ड का मामला है। औसत के स्तर पर यह फर्क और भी कम हो सकता है। बल्कि कम हो जाता है। इससे भी महत्वपूर्ण बात यह है कि स्त्रियों की रफ्तार स्थिर नहीं है। यह पिछले पाँच दशकों में लगातार बढ़ती गयी है। उदाहरण के लिए 100 मीटर की दूरी स्त्री द्वारा तय करने का रेकार्ड 1928 में 12.2 सेकेंड था, जो 1984 में घट कर 10.97 सेकेंड रह गया। 800 मीटर की दूरी में यह फर्क इस प्रकार रहा: 1928 में 4 मिनट 16.8 सेकेंड और 1984 में 1 मिनट 57.60 सेकेंड। इससे क्या हम यह अनुमान नहीं लगा सकते कि आदिम युग में, जब विषमता नहीं थी या न्यूनतम थी तथा स्त्री को बलपूर्वक सुकुमार नहीं किया जाता था, तब यह भी पुरुष की तरह ही हृष्ट-पुष्ट होती होगी-उतनी ही सक्षम, उतनी ही चुस्त और शायद उतनी ही हिंसक भी?

(राजकिशोर स्त्री-पुरुष: कुछ पुनर्विचार से साभार)

21

सिर्फ पढ़ने के लिए

गुरु की सीख

एक दिन गुरु जी अपने शिष्यों को जड़ी-बूटियों की जानकारी देने के लिए किसी जंगल में लेकर जा रहे थे। रास्ते में अवारा कुत्ते भौंकते हुए उनके पीछे आ गए। गुरु और उनका एक शिष्य उनकी ओर ध्यान न देकर चुपचाप अपनी राह पर चलते रहे। पर उनके अन्य शिष्य वहीं रुक गए। वे पत्थर मारकर उन आवारा कुत्तों को भगाने लगे।

उन्हें भगाकर जैसे ही वे आगे बढ़े, अचानक एक बंदर उनके रास्ते में आ गया। वे उसे भी पत्थर मारने लगे। बंदर तब भी वहां से भागा नहीं। वह उन शिष्यों से चिढ़ गया था। बहुत देर तक वे उस बंदर से ही उलझे रहे।

जब जंगल में पहुँचे, तब तक बहुत देर हो चुकी थी। जब वे अपने गुरु के पास आए, गुरु ने उनकी ओर देखा भी नहीं। उनकी अनदेखी करते हुए गुरु ने अपने साथ आए शिष्य से कहा-''वत्स, शाम होनेवाली है। जंगल में अब रुकना ठीक नहीं है, हमें यहाँ से अब शीघ्र जाना होगा।'' यह सुनकर अन्य शिष्य हैरान रह गए। जड़ी-बूटियों के बारे में तो गुरु जी ने कुछ बताया ही नहीं था।

उन शिष्यों ने विनम्र भाव से गुरु से कहा-''गुरुजी, आप तो हमें जंगल में जड़ी-बूटियों की जानकारी देने के लिए लाए थे, पर आप तो बिना जानकारी दिए जाने की बात कह रहे हैं।''

गुरु ने कठोरता से कहा- ''बच्चों, तुम सही कह रहे हो। पर तुम अभी इस योग्य नहीं हो।''

गुरु की बात को वे समझ नहीं सके । शिष्यों ने पुन: याचना भरे स्वर में कहा-''गुरुजी, आप हम से नाराज क्यों हैं? हमारा दोष क्या है?''

शिष्यों को समझाते हुए गुरु ने कहा-''बच्चों, यदि तुम समय पर जंगल में आ जाते, तो संभवत: मैं तुम्हें जड़ी-बूटियों की जानकारी अवश्य देता। पर तुमने तो अपना सारा समय रास्ते में व्यर्थ की बातों में उलझने में ही गंवा दिया।''

शिष्यों को अपनी गलती का एहसास हो गया था। वे खाली हाथ-मुँह लटकाए कुटिया में वापस आकर अपनी गलती पर पश्चाताप करने लगे।

जबकि वह शिष्य, जो रास्ते में न रुककर गुरु के साथ ही रहा था, अपने साथ कई उपयोगी जड़ी-बूटियाँ जंगल से एकत्रित कर ले आया था।

22

सिर्फ पढ़ने के लिए

समय का महत्व

समय बहुत ही मूल्यवान है, व्यर्थ कभी मत खोना,

चला गया तो समय लौटकर, कभी नहीं फिर आता।
सदा समय को खोने वाला, मल-मल हाथ पछताता,
जिसने इसे न माना उसको समय सदा ठुकराता ।
लाख यत्न करने पर भी फिर हाथ न उसके आता,
हो जाता है एक घड़ी के लिए जन्म-भर रोना ।
समय बहुत ही मूल्यवान है, व्यर्थ कभी मत खोना।

धन खो जाता, श्रम करने से फिर मनुष्य है पाता,
स्वास्थ्य बिगड़ जाने पर, उपचारों से है बन जाता।
विद्या खो जाती, फिर भी पढ़ने से है आ जाती,
लेकिन खो जाने से मिलती नहीं समय की थाती ।
जीवन-भर भटको छानो दुनिया का कोना-कोना,
समय बहुत ही मूल्यवान है, व्यर्थ कभी मत खोना।

किया मान आदर जिसने भी, और इसे अपनाया,
जिसने आँका मूल्य उससे इसने है अमर बनाया ।
महापुरुष हो गए विश्व में जितने यश के भागी,
सब जीवन पर्यंत रहे हैं पल-पल के अनुरागी ।
उचित प्रयोग समय का ही है, सफल मनोरथ होना,
समय बहुत ही मूल्यवान है, व्यर्थ कभी मत खोना।

शब्द-कोश

अ

अंतरिक्ष-आकाश
अचकन-लंबा बंद गले का कोट
अधीन-वश में
अनुनय-प्रार्थना
अनुमति-आज्ञा, स्वीकृति
अपूर्व-जिसके जैसा पहले न हुआ हो
अर्घ्य-पूजन के लिए दूध, जल
अल्टीमेटम-चेतावनी
अश्रु-आँसू
असह्य-न सहने योग्य
अगाध-अथाह
अट्टहास-जोर की हँसी
अनायास-अचानक
अनुपम-सुन्दर, बेहतरीन
अनूठी- अनोखी, सुन्दर
अप्रत्याशित-जिसकी आशा न हो
अरण्य-जंगल
अवांछित-बिना इच्छा के
असहाय-लाचार

आ

आज़ादी के परवाने-आज़ादी के लिए सहर्ष प्राण न्योछावर करनेवाले
आमोद- खुशी
आहुति-हवन में समर्पित की जानेवाली वस्तु
आभास- महसूस होना
आस्था-विश्वास

इ

इठलाऊँ-गर्व करूँ

उ

उथली-छिछली, कम गहरी
उधेड़बुन-निरंतर विचार वाला
उपहार-सौगात
उत्तराधिकारी-किसी के मृत्यु के बाद उसकी संपत्ति पाने का हकदार
उस्ताद-गुरु
उदित-उगा हुआ
उपग्रह-बड़े ग्रहों की परिक्रमा करने वाले आकाशीय पिंड
उपालंभ-शिकायत
उर्वरा-उपजाऊ

ए

एकाएक–अचानक

एहसास–अनुभव

औ

औपचारिक–विधिवत

क

कज्जलकोर–काजल की रेखा

कर–हाथ

कीर्त्ति–यश

कौतुक प्रियता–खेल तमाशा या हँसी–मजाक का भाव

कर्मनिष्ठा–कर्म करने में विश्वास

कामना –इच्छा

कुटुम–परिवार, खानदान

कृपाण–तलवार

ग

गतवर्ष–पिछले साल

गंभीर–गहरा

ग्रीवा–गरदन

गौरवपूर्ण–सम्मान से युक्त महत्त्वपूर्ण

गोपनीय–छिपाने योग्य

च

चंपकवर्ण रूपसी–चंपा के फूल जैसे रंगवाली सुंदरी

चीत्कार–चिल्लाहट, चीख पुकार

ज

जलचर–जल में रहनेवाला

जाँबाज–जान की बाजी लगानेवाला

जीवनसंगिनी–पत्नी

जन–संकुलता–लोगों की भीड़–भाड़

जिज्ञासा–जानने की इच्छा

ठ

ठिठकना–थोड़ी देर के लिए रुकना

ठूँठ–पत्ती एवं टहनी विहीन निर्जीव पेड़

त

तज्जनित–उससे उत्पन्न

तिलमिलाना–बेचैन हो जाना

तना–जड़ के ऊपर का भाग

तीर–किनारा

द

दर्प–रोब, अभिमान

दाखिला–प्रवेश

दारुण दुरवस्था–अत्यंत दयनीय स्थिति

दृढ़ता–मजबूती

ध

धमस–थकान

धरा–पृथ्वी

धर्मनिरपेक्षता–धर्मों से तटस्थ रहना

धीमर–सुस्त

धीरज धरना–मन को स्थिर करना

धूल चटाना–हरा देना

न

नक्षत्र–तारा

नफरत–घृणा

नभ–आकाश

नाद–आवाज

नामुराद–अभागा

निर्देश–समझाना

निर्दोष–बगैर दोष का, दोषरहित

निर्मल–साफ

नित्य–नैमित्तिक–रोज के काम

निरुत्तर–बिना उत्तर के

निष्ठा–श्रद्धा एवं भक्ति

निष्फल–व्यर्थ

नूपुर–पायल

प

पखवाड़ा–पन्द्रह दिनों का कालखंड

पताका–झंडा

परकोटा–गढ़ की रक्षा के लिए निर्मित ऊँची चार दीवारी

परलै–प्रलय

परसल–स्पर्श करना

पराजय–हार

पराधीन–गुलाम

परिचालन–चारों ओर घुमाना

परिवेश–आस–पास का वातावरण

पाय–पैर

पाषाण–पत्थर

पितामह–दादा

पितृभक्त–पिता का भक्त

पीताम–पीली चमक देता हुआ

पुनमति–बार–बार

पुश्तैनी–खानदानी

पेशगी–अग्रिम

पेशानी–माथा, मस्तक

पौरुष–पुरुष का कर्म

प्रकट–सामने, अवतरित

प्रकोप–अत्यधिक क्रोध

प्रत्यावर्तन–पलट के आना

प्रतिरोध–विरोध, मुकाबला

प्रयास–कोशिश

प्रवृत्ति–आदत
प्रस्थान–कूच
प्रशांत–पूरी तरह शांत
प्रारब्ध–भाग्य

फ

फौरन– जल्दी

ब

बंकिम–टेढ़ा, तिरछा
बदहजमी–अनपच
बहुरि–पुनः
बिगाड़–खराब
बुलंदी–ऊँचाई
बेबसी–लाचारी
बदतर–और अधिक खराब
बवंडर–आंधी–तूफान, चक्रवात
बिंध–छिदकर
बिसरह– भुलाना
बेड़ी–जंजीर

भ

भनई–कहना
भुजंग–साँप

म

मनहर–मन को हरनेवाला
महसूस–अनुभव
मिति–माप
मुमूर्षु अवस्था–मरने की अवस्था
म्यान–तलवार रखने का खोल
मनुहार–मनाना
मार्गदर्शन–राह दिखाना
मुक्ति–छुटकारा
मृत्युदंड–मौत की सजा

य

यशस्विनी–यश प्राप्त करने वाली
योद्धा–युद्ध करने वाला
युक्ति–तरीका

र

रिपु–दुश्मन

ल

लखो–देखो
लोभवश–लालच के कारण

व

वार–प्रहार

विख्यात–प्रसिद्ध

विनीत–नम्र, विनत, झुका हुआ

वेधशाला–जहाँ ग्रह–नक्षत्रों का अध्ययन किया जाता है।

वास्तविक–असली

विद्युतगति–बिजली जैसी तेज चाल

विश्वासघाती–विश्वास को तोड़नेवाला

व्यास–केन्द्र से होकर परिधि के दो छोरों के बीच की दूरी

श

शंखनाद–शुरुआत

शव– मृतशरीर

शौर्य–वीरता

शर–तीर, वाण

शाखा–टहनी, डाली

श्रद्धास्पद–आदरणीय

स

संकल्पित–दृढ़ निश्चय किया हुआ

सतत–लगातार

समदओं–प्रार्थना करना

समपन्न–पूर्ण होना

सलाखें–लोहे की छड़

सौरभ–सुगंध

सुरंग–धरती के अन्दर आने–जाने के लिए बना रास्ता

सहस्रों–हजारों

सहिष्णु–सहनशील

स्फुरन–हरकत

स्वप्न–सपना

संभावना–उम्मीद

सभीत–भय के साथ

सम्बल–सहारा

सम्राट–जिसके अधीन कई राजा हों

सर्वश्रेष्ठ–सबसे अच्छा

सौम्य–सुन्दर

सुरबाला–अप्सरा

स्निग्ध–चिकना, सुन्दर

स्तब्धता–जड़ता, निश्चेष्टता

स्मरण–याद

ह

हुंकार–ललकार